'बुलंद करो पवारी'

असो कसेती का, प्राचीनतम बोलीभाषा को वारसा अद्ययावत रूप मा जपनो/ठेवनो से त् वोन् बोली को अभ्यासकर्ईन्न ''भूतकाल का बंदीवान'' नही ''नव-बोलीभाषा का प्रवर्तक'' होये पाह्यजे. या बात येन् किताब परा अना लेखक डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे परा पूरी तरह लका लागू होसे.

येन् किताब को प्राक्कथन त् एक ऐतिहासिक दस्तावेजच से। येन् किताब माकी सारी रचना उद्‌बोधक, समयानुकूल अना प्रसादिक सेती. पोवारी/पवारी बोली-भाषा ला मौखिक रूप मालका लिखित रूप मा आनने वालो पह्यलो प्रयासी लगभग देढ़ सौ साल पह्यले एक इंग्रज मानूस आर. व्ही. रसेल होतो. वोको वोन् प्रयास ला बढावन को काम येन् १५० साल मा जरूर भई से, पर आता वोन् काम मा गती आनन् को काम या किताब जरूर करे, असो मोला पुरो विश्वास से.

आमरी पोवारी बोली-भाषा ला 'भाषिक जीवाश्म' (Fossils of Dialect) होन् को भेव् आता नही रहेव्. आता आमरी या पोवारी बोलीभाषा सिरफ ''शुद्ध साहित्य'' वरीच् सिमित नही रही, त् आता आमरी या पोवारी बोली-भाषा अत्याधुनिक व अद्ययावत संकल्पना, ''सांस्कृतिक मौतिकवाद'' ला भी पुरो शक्ती लका भीड़ रही से. येन् सफल प्रयास साठी डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे इनको धन्यवाद अना अभिनंदन!

आता सारो पोवार समाज न् येको लका उचित संदेश लेयस्यारी आपपली भूमिका सक्रीय करे पाह्यजे, याच सदिच्छा अना शुभेच्छा व्यक्त करू सू.

लखनसिंह कटरे





ISBN: 978-93-89652-51-2 PCE 0221 ₹ 200/-

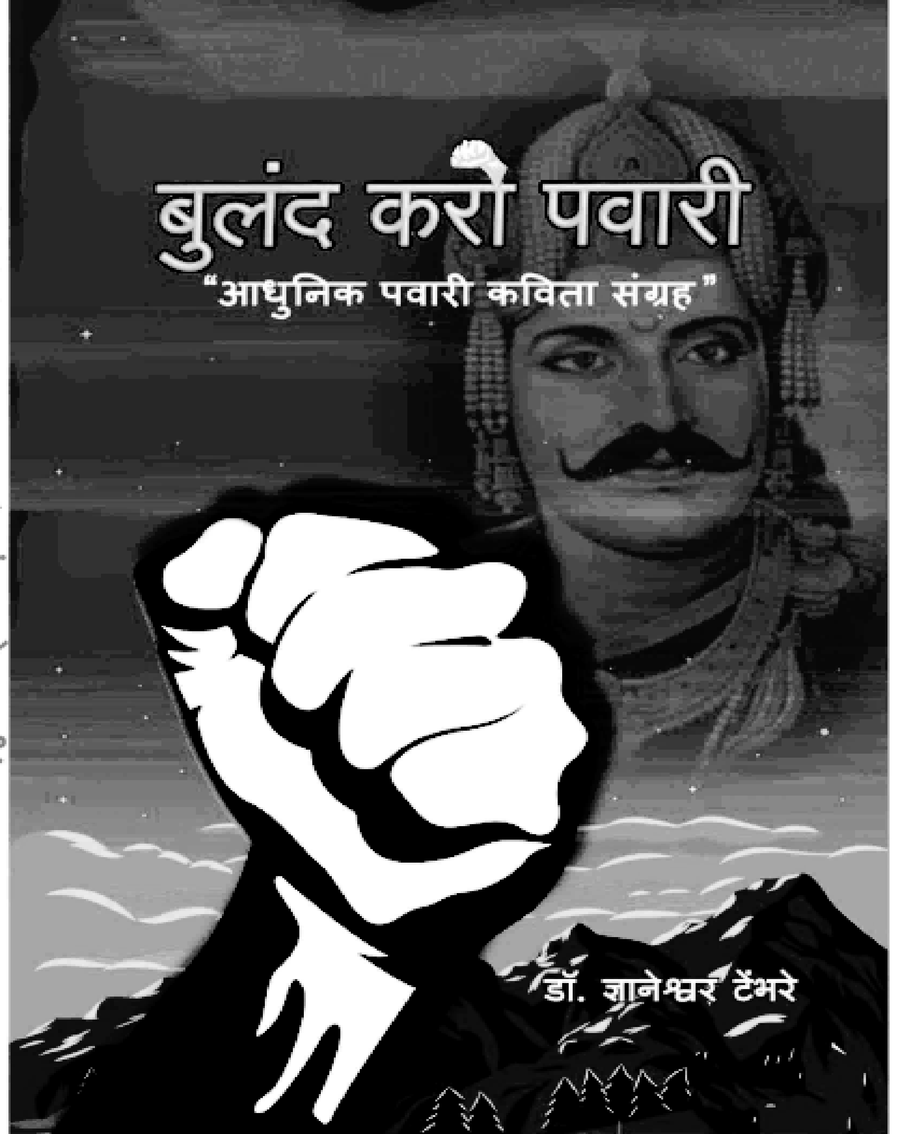
डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

'बुलंद करो पवारी'

हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

बुलंद करो पवारी

"आधुनिक पवारी कविता संग्रह"



डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

हिमालया पब्लिशिंग हाऊस
ISO 9001 : 2015 CERTIFIED

बुलंद करो पवारी

आधुनिक पवारी कविता संग्रह
१५० काव्य पुष्प

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

अध्यक्ष
पवारी साहित्या कला सांस्कृती मंडल
(पं. क्र. - 42/2019-8680 GND)





हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

ISO 9001 : 2015 CERTIFIED

बुलंद करो पवारी

(BULANDKARO PAWARI)

ISBN : 978-93-89652-51-2

प्रथम संस्करण : २०२०

प्रकाशक : सौ. मीना पाण्डेय, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, 'रामदूत' डॉ. भालेराव मार्ग, गिरगांव, मुम्बई-४०० ००४, दूरभाष :२३९६३७६३ / २३८६०१७०, फैक्स :०२२-२३८७७१७८, Email : himpub@vsnl.com * Website : www.himpub.com

शाखाएँ -

दिल्ली : 'पूजा अपार्टमें ट',४बी, मुरारी लालस्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ दूरभाष : २३२७०३९२ फैक्स : ०११-२३२५६२८६

नागपुर : कुंदनलाल चांडक इण्डस्ट्रीयल स्टेट, घाट रोड, नागपुर-४४००१८, दूरभाष : २७२१२१६, फैक्स : ०७१२-२७२१२१५

बैंगलोर : नं. १६/१, जूना १२/१ पहला मंजिला हॉटल हायलैं ड जवल, माधवनगर रेसकोर्स रोड, बैंगलोर -५६०००९ दूरभाष : २२८१५४१ /३२८५४६१, फैक्स :०८०-२२२८१५४१

हैदराबाद : नं. २-२-१ १६७/२ एच. फर्स्ट फ्लोर, रेलवे ब्रिज के पास, तिलक नगर, मेन रोड, हैदराबाद-५०००४४ दूरभाष : ५५५०१७४५, फैक्स : ०४०-२७५६००४१

चैन्नई : नई नं.४८/२, पुरानी नं.२८/२, तल मंजिल, सारंगपानी रोड, टी नगर, चैन्नई - ६०० ०१७ दूरभाष : ०९३८०४६०४१९

पूना : प्रथम तल, लक्ष्य अपार्टमेन्ट, ५२७ मेहुनपुरा, शनिवारपेठ, नजदीक प्रभात सिनेमा, पूना - ४११ ०३० फोनं ०२०-२४४९६३२३

संगणक मुद्रलेखन : श्री गजानन एन्टरप्राईजेस, २१, सुरेन्द्रनगर, नागपूर-१५ दूरध्वनी - ०७१२-२२३४१०४

मुखपृष्ठ : श्री भूषण प्रभुलाल बिसेन, नागपुर मो ८८५७९१८०४५

आमुख

'पवारी' मोरी मायबोली यको मोला अभिमान से. पवारी बोलीभाषा लाच महाराष्ट्र मा पोवारी, मध्यप्रदेश क बैनगंगा क्षेत्र मा पंवारी त् भोयर पट्टी मा भोयरी/भोयरी-पवारी नाव पड़ी से. या बोलीभाषा ई.स.१९५० पहिले महाराष्ट्र क भंडारा, गोंदिया, वर्धा, नागपुर, अमरावती, चांदा, यवतमाल अना मध्यप्रदेश क बालाघाट, सिवनी, छिंदवाडा, बैतुल जिला क गावगाव मा पवार लोक ना दिगर जाति का लोक भी घर् - दार् , बजार-हाट मा बोलत होता. पवारी बोलीभाषा कई सदीवरी यन् क्षेत्र की लोक भाषा होती। पर जस-जसो मराठी, हिंदी, इंग्रजी माध्यम मा खेडा-पाडा, शहर मा पवार लोक शिक्षण लेत गया तस-तसो पवारी मा बोलचाल घटत गयो अना अज या परिस्थिति से का पवार समाज लोकसंख्या का २०-२५% लोकच पवारी बोलीभाषा बोलचाल मा वापरी जासे, तरीपण पवारी ला भारतीय केंद्रीय भाषा सर्वेक्षण सूची मा हिंदी की उपभाषा मुहुन ४२ वो क्रमांक पर अना महाराष्ट्र राज्य भाषा सर्वेक्षण सूची मा मराठी की उपभाषा मुहुन ७वो क्रमांक पर स्थान देई गई से.

भाषाविद जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (१९२७), समाजशास्त्री ले. आर. बी. रसेल, प्रा. डॉ. सु. बा. कुळकर्णी, डॉ. मंजु अवस्थी, डॉ. शारदा कौशिक, डॉ. भारती शरणागत अना डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे न पवारी बोली को भाषा वैज्ञानिक, व्याकरण ना लोकगीत को अभ्यास करीन. पवारी बोलीपर पहिली किताब सु. बा. कुळकर्णी न नागपुर विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित करिस. वोको बादमा गोपीनाथ कालभोर, जयपालसिंह पटले, वल्लभ डोंगरे अना ज्ञानेश्वर टेंभरे न मौलिक रचना अना लोकसाहित्य की पवारी की किताब् प्रकाशित करिन.

पवारी बोलीभाषा सृजन, संवर्धन, प्रचार, प्रसार म्हणजेच पवार

समाज की संस्कृति, संस्कार, वंशीक गुणईन को जतन अना पवार समाज की सामाजिक अस्मिता को राखन करनेवाली धरोहर असी मोरी समजुत से. काहे का मातृभाषा/मायबोली ला समाज को आईना कही गई से. यनच मोरो अंतरमन को हाक न मोला बोलीभाषा को शास्त्रीय अभ्यास, लोकसाहित्य संकलन, स्वरचित मौलिक साहित्य प्रकाशन अना पवारी बोलीभाषा प्रचार-प्रसार की प्रेरणा देईस.

माय वाग्देवी की असीम कृपालक मिन् पवारी ज्ञानदीप (२०११), गूंज उठे पवारी (२०१७), दुर्वांकुर (२०१९) प्रकाशित करि सेव अना आता मि 'बुलंद करो पवारी' यव स्वरचित, मौलिक आधुनिक पवारी काव्यसंग्रह जनता-जनार्दन क हाथ मा समर्पित कर रही सु. यक् मा १५० कविता सेति.

'बुलंद करो पवारी' किताब साहित्य की प्रस्तावना अना समीक्षा कर काही विद्वान साहित्यकारईनन् आपलो मनोगत देई सेन, मि उनको मनःपूर्वक आभार व्यक्त कर्सु.

मि. श्री गजानन इंटरप्रायजेस, नागपुर,खासकर श्री. संदीप वैद्य अना श्री.चंद्रकांत अटाळकर को बार-बार कम्प्युटर पर शब्दांकन, सुधार, सुरेख रचना बांधनीसाठी उनको ऋणी सेव अना सहृदय धन्यवाद देसु. हिमालय पब्लिशिंग हाऊस यन् अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन न् या किताब सुंदर लिबास मा प्रकाशित करिस, उनको मि कृतज्ञ व्यक्त करसु अना उनको सेवाभाव ला नमन करसु.

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
अध्यक्ष
पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल

४४, 'जिज्ञासा' विजयनगर,
दक्षिण अम्बाझरी मार्ग,
नागपुर-४४००२२
मो. ९०१६०८८४३६
EMail ID : dbtembhare@gmail.com

प्राक्कथन

महान इतिहासकार शेरिंग ने अपने जगविख्यात ग्रंथ **'हिंदु ट्राईब्स एन्ड कास्ट्स्** भाग-२' पृष्ठ १३, (वर्ष १९७९) में लिखा है कि पवार जनसमुह बहुत कर मालवा के परमार/पँवार वंश की (Devanuggur) डेवानुग्गुर/देवंग्गर शाखा हैं जिन्होंने अपना राजस्थान-मालवा मूल-मुलुख सम्राट औरंगजेब के राजकाल की अंतिम घड़ी (इ.स.१७०० के आसपास) छोड़ इस बैनगंगा वर्धा घाटी में आकर बस गया. रसेल ने अपने विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ **कास्टस् एंड ट्राईब्स ऑफ सेंट्रल प्रॉव्हिंस** भाग-२, पृष्ठ ३३५ (वर्ष १९१६) तथा नागपुर, भंडारा, बालाघाट, वर्धा जिला गेजेटिअर में भी स्पष्ट कहा गया है कि पवार समाज ने अपने साथ मालवा से इस प्रदेश में अपनी बोलीभाषा - पवारी ले आई, उसे मराठी क्षेत्र में पोवारी तो भोयरी क्षेत्र में भोयरी भी कहा जाता है. **इंपेरियल गेजेटियर ऑफ इंडिया, सेंट्रल प्राव्हिंस,** पृष्ठ १९७ पर लिखा है कि पवारी बोली मालवा तथा दक्षिण राजस्थान की मालवी बोली से बहुतांश में मिलती-जुलती है.

नीचे मालवी का एक गद्यांश तथा उसका वर्धातटीय पवारी, बैनगंगा तटीय पवारी एवम् हिंदी में अनुवाद दिया गया है -

मालवी गद्यांश - कई का दिन एक आदमी अपना छोरा से लिस्के जंगल में जा रह्यो थो. छोरो जो आग आग कहत दौड़तों जाता - थो हांक मारिके कहनों लग्यो कि दादाजी देखो सही यो केतरो बड़ो पेड़ हवा में उखड़ि के जाई पड़्यो. भला देखवो तो यो कसो पड़्यो होंय गो. जब ओका बापने कही कि बेटा या ऊंधावल में गिरी पड़्यो तब जो - का छोरा ने कही कि भला देखवो तो यो बेत को झाड़ कसो पतलो और कितरो अच्छो छे अरू ये-खे उंधावलने क्यों नहीं उखड़्यो? ओ-का बापने जबाब दियो कि बेटा सागोन को जाड़ोपन जो का गिरना को कारण छे. ओखे अपनी डालन को अरु बड़ापन को गर्व थो. वो जब हवा चले तब हलती चलोत नही. बिचारो बेत को झाड़ जरासी हवा में लटुपटु हुई - जाय असो यो बचि गयो (सौजन्य - कन्हैयालाल बोवाडे).

वर्धातटीय पवारी अनुवाद - लय दिन पहिले की बात है, एक भाऊ ओको पोराय ख ले ख जंगल म जात रय ते ओकों पोराय आघ आघ दौड़त जात रहे फिर हाफत हाफत कहवन लग्यो कि देख दादा यू केत्तो बड़ों झाड़ हवा म उखड़ ग्यो. देख तो ले कसो पढ़्यो है यू? तब ओको बाप न कह्यो की बेटा यू हवा धुंद न उखाड़ दियो है तब ओको पोराया बोलोयो कि फिर यू बेत को पटलो सो झाड़ केत्ते अच्छो से ह्यै, यख काहे नी हवा धूंद नी उखड़ायो. तब ओको बाप न कह्यो कि बेटा यू सगुन को झाड़ बड़ों मोटो नोहा को कारण गिर्यो अख यख येकी बड़ी दगिन हुन को बड़ो घमंड होतो रह्य. अन् जब हवा

चली तब्यी हली चली नी. अन् बिचारो बेत को झाड़ जरासी हवा म लूटपुट हो गयो तेखन बच गयो (सौजन्य - डॉ. शारदा कौशिक).

बैनगंगा तटीय पवारी अनुवाद - काही दिवस पहिले एक आदमी आपलो टुरा ला लेय कन जंगल मा जात होतो, तब् वोको टुरा पुढ् पुढ् दौड़त (धावत) जात रव्ह मंग हाफत हाफत कव्हन लग्यो कि देख दादा यू केतो बड़ो झाड़ हवा मा उखड़ गयो. देख त ले कसो पड्यो से यव, तब् ओको बाप न कहिस का बेटा हवा धूंद न उखाड़ देई सेस. तब् ओको बेटा बोल्यो का मंग यो बेत को पतलो सो झाड़ केत्तो अच्छो सो से, यला काहे नही हवा धूंद न उखाडिस, तब् ओको बाप न कहिस कि बेटा उ सागुन को झाड़ बडो मोटो होनो को कारण गिर्यो अना येला बड़ी फांदी / डघालीईन को बड़ो घमंड होत रव्ह. अना जब् हवा चली तब् ए हली डुली नही. अना बिचारो बेत को झाड़ जरासी हवा मा लूटपुट होय गयो वोन् कारण बच गयो.

हिंदी अनुवाद - बहुत दिन पहले एक आदमी अपने बेटे के साथ में जंगल से जा रहा था - तब उसका लड़का आगे आगे दौड़ रहा था फिर आगे चलने के बाद हाफते हाफते पिता से कहता है कि पिताजी देखो ये कितना बड़ा पेड़ हवा में उखड़ गया है और भला देखो तो यह कैसे पड़ा है तब उसके पिताजी उसे कहते है कि बेटा ये आंधी तूफान में उखड़ गया है इतने में लड़का बोला कि फिर ये बेत का पेड़ पतला और अच्छा है और धूंधाडी से ये पेड़ हवा में क्यों नही उखड़ा? तब उसके पिताजी ने कहा कि बेटा ये सागोन का बहुत मोटा था और साथ में इसे अपनी बड़ी बड़ी डघालियों पर बहुत घमंड था जो हवा जब चली तो उसके साथ हिली डुली भी नही इसी कारण ये पेड़ गिर गया और ये जो बेत का पेड़ है ना ये जरासी हवा में उसके साथ हिलने-डुलने लगा इसी लिये ये बच गया.

उपरोक्त गद्यांश के अनुवादों से स्पष्ट होता है कि मालवी तथा पवारी खुप निकटता दर्शाती है. बाद में पवारी बोलीभाषा में स्थानीय बोलियाँ तथा मराठी, हिंदी, अंग्रेजी के शब्दों ने घुसपैठ कर उसे क्षेत्रानुसार रंगरुप प्रदान किया है. भाषा अध्ययन से जान पड़ता है कि हिंदी के शब्द, वचन, लिंग, व्याकरण बहोत ही करीब है तथा मराठी के प्रथम व द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम मराठी व पवारी में एक-समान है.

पवारी बोली स्थानीय हलबा-कोष्टी एवम् मालवा की मानकरी बोली से नजदिकी बताती है -

१. **हलबा-कोष्टी बोली** - निम्नांकित गद्यांश कोष्टी जाति (छत्तीसगढ, मध्यप्रदेश, विदर्भ) की कोष्टी बोलीभाषा से है तथा पवारी से, मिलता जुलता है -

''कोष्टी लोक महाराष्ट्र को भंडारा, गोंदिया, नागपुर, चांदा ना पुरो विदर्भ मा

रव्हसेत अना वय कोष्टी भाषा लगित प्रमाण मा बोल् सेत. नवो जमानो मा आपुन आपली भाषाला भुलाय्यान पण यो आपलो समाज साथी चान्गलो नसा.... सगड़ा ला आमरी प्रार्थना आहा की आपली भाषा ला बिसरू नहीं,.... कृपया यो सूचना सगडानला दो..... यो आमरी प्रार्थना आहा. यदि तुमी असली हलबा-कोष्टी आहो त, तुमला आपली हलबा-कोष्टी भाषा आई पायजे.'' (- श्री मलयुगिरी महाराज,स्त्रोत- नेट.)

२. **मानकरी बोली** - यह कविता मानकरी जाति (धार, झाबुआ, बडवानी, खरगौन, खंडवा, इंदौर, देवास) की मानकरी बोलीभाषा से है तथा पवारीसे मिलती-जुलती है -

उठो रे जागो रे

उठो रे जागो रे करतब आपलो समजो रे
बलपर कसटके स्वरग घरना बनावो रे।

पहाट भई उठो रे झाळोझटक फिरो रे
करशानी आंधुय जयभिव सनबा बोलो रे।

ऐदीपणा सोडो रे दारू जुव्वा टाको रे
कामधंदा करशानी कुटुंब सुखी करो रे।

आपसी झगडा भूलो रे, एकजुट करो रे
पैसो-पैसो बचायशानी भविष्य सुधारो रे ।

शिक्षण को सार समझो रे लेकरू शाळामा धाडो रे
संध्याकाये नेमकन उनकी बडबड वाचन की आयको रे।

पुस्तक हातमा लेवो रे, उनमाकी गंमत वाचो रे
पुस्तक वाचता वाचता मन चांगलो विचारोमा गुतावोरे ।

(- विठ्ठल निरवारे, मासिक फडकी, नोव्हेम्बर २०१९ अंक)

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा सर्वप्रथम ब्रिटीश काल में भारतीय बोली भाषा का सर्वेक्षण किया गया एवं ई.स. १९२७ में **ए लिंग्विस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया** नामक ग्रंथ में संकलन कर प्रकाशित किया गया. इस सर्वेक्षण अनुसार उस समय भारत में कुल ३६४५ बोली-भाषाओं में एक 'पवारी' भी सम्मिलित है. ग्रियर्सन के अभ्यास से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आया कि मालवी व पवारी तथा उसी तरह पवारी व भोयरी भाषाशास्त्रीय सैद्धांतिक तौर पर एकही बोलीभाषा है तथा क्षेत्रीय प्रभाव से कुछ भेद जान पड़ता है.

भारत सरकार के गृह मंत्रालय की २००१ की जनगणना सर्वेक्षण पर

आधारित भाषा सूची में हिंदी को ६ वे तथा पवारी को हिंदी की उपभाषा के रूप में ४२ वे क्रमांक पर रखा गया है। उसी तरह महाराष्ट्र राज्य भाषा सर्वेक्षण सूचि में राज्य की कुल ५२ बोलीभाषाओं में पवारी/पोवारी को ७वे क्रमांक पर (जनसंख्याद्वारा बोली जानेवाली बोलीभाषा के रूप में) स्थानबद्ध किया गया है. असुरक्षित बोलीभाषा सूची अनुसार **इथॉनिक लेंग्वेज ऑफ वर्ल्ड** ने पवारी बोली को ६-बी स्केल पायदान पर पाया जो खतरे को सूचित करती है. अतः पवारी बोलीभाषा का समय रहते सृजन व संवर्धन करना निहायत जरूरी है.

कई सदियों और पीढीयों तक पवारी बोलीभाषा केवल बोली जाती थी अतः उसका प्राचीन साहित्य किताबों में उपलब्ध नही है. सबसे पहले पवारी बोली को कथन से लिखान पर लेजाने वाले महान लेफ्टनंट आर. बी. रसेल है जिन्होंने अपने ग्रंथ **कास्टस् एंड ट्राईब्स ऑफ सेंट्रल प्राविंस** भाग-२ में पवारी के कुछ विवाह गीत लिपिबद्ध किये है -

१. नवरी माय भई गुस्सा ना अमराई गई
आव लौकर लौकर माय कपरा देन की बेरा भई ।
नवरदेव क बापन् पठाइसेस नवरी को बाना घरल्
बाना असो से का जसो पंरवा कोर जड़ी मोतील् ।।

२. पाच साल उमर से बजाबाई नवरी की
पठावो बातमी नवरदेव को मायला जी ।
वोको पोषाक से खुप नहान, पठाव कोष्टी घर नवरा
कोष्टी आहे ना पोषाक ला गोट लगावन ला ।।

३. अलसी फूल चना फूल चैत मास
बार परनू जासे परायो देश...
परायो देश मोरी माय कसो जाऊ वो
देश दाम देजो बार परायो देश जाई जो ....

इसके बाद पवार समाज संगठनों की पत्रिकाओं ने वर्ष १९८० पश्चात लोकगीत, लोककथा, लोकजीवन का प्रकाशन किया। इनमें सर्वश्री स्व. किसनलाल काटवले, स्व. मुन्नालाल देवासे, हीरालाल बिसेन, जयपालसिंह पटले, स्व. मनराज

पटले, स्व.गोपीनाथ कालभोर, स्व.डॉ.नाथुराम कालभोर, यादोराव चौधरी, वल्लभ डोंगरे, डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे आदि ने लोकगीत, लोककला, लोकसंस्कृति को उजागर किया है. साथोसाथ पवारी बोली का भी अध्ययन प्रारम्भ हआ और पवारी लोकगीत व कहानियों का भाषावैज्ञानिक पीएच.डी. संशोधन चल पड़ा. डॉ. सु. बा. कुलकर्णी (१९७२) ने सर्वप्रथम 'पवारी बोली' नामक ग्रंथ का प्रकाशन नागपुर विद्यापीठ के सौजन्य से किया.

उनके पवारी बोली भाषा संशोधन अनुसार - ''पोवारी ही पोवार नावाच्या शेतकरी जमातीची बोली आहे. पोवारांची वस्ती महाराष्ट्रातील भंडारा, गोंदिया जिल्ह्यात व मध्यप्रदेशातील बालाघाट, सिवनी जिल्ह्यात पसरलेली असून १९६१च्या जनगणनेनुसार ती ६४०७८० एवढी आहे. पोवार हे मुळचे माळव्यातील परमार कुळीचे रजपूत असून गेल्या काही शतकात मध्यप्रदेश व वऱ्हाडात स्थायिक झालेले दिसतात.

पोवारांच्या स्थलांतरांचे पडसाद साहजिकच त्यांच्या भाषेत उमटलेले दिसून येतात. आजची पोवारी बोली ही राजस्थानी,बघेली, मालवी व मराठी यांचे विचित्र मिश्रण आहे. नागपूर जिल्ह्यात बोलल्या जाणाऱ्या कोष्टी बोलीशी तिचे अतिशय साम्य आहे. वरवर पाहिले असता देखील या बोलीचा ऐंशी टक्के शब्दसमूह मराठी असलेला दिसेल. ध्वनिव्यवस्था मराठीशी जुळती असली तरी दन्त्य आणि तालव्य घर्षस्पोटके व घर्षके यांच्यामध्ये मुक्तपरिवर्तन आढळून येते. विभक्ति-प्रत्ययांतील सप्तमीचा - मा गुजराथीचा, षष्ठीचा क - पूर्व हिंदीचा, तर चतुर्थीचा - ला मराठीशी साम्य दाखविणारा आहे. परसर्गांपैकी बहुसंख्य परसर्ग मराठी असले तरी -दुन्, -लख्, -परा, आड्पा इ. राजस्थानी - गुजराथीशी जवळीक दाखविणारे आहेत. पोवारीत पूर्व हिंदी प्रमाणे दोनच लिंगे आहेत. नामांना वचन-विकार होत नाही. सर्वनामांपैकी प्रथमपुरुषवाचक व द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनामे मराठी आहेत, तर तृतीयपुरुषवाचक सर्वनामे बुंदेलीशी जुळती आहेत. सार्वनामिक विशेषणे राजस्थानी आहेत. क्रियापदांचे अनेक प्रत्यय पश्चिमी राजस्थानीशी जुळते आहेत. अस्ऱ्या सहाय-क्रियापदाची से सेति इ. रूपे राजस्थानीच आहेत. भूतकाळाची कर्मणी रूपे बघेली सारखी आहेत.''

इसी कड़ी में डॉ. मंजु अवस्थी ने पवारी पर रायपुर विश्वविद्यालय से डी.लीट ई. १९९९ में हासिल की. डॉ.शारदा कौशिक पवार ने भी पवारी लोकसाहित्य पर बरखतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से पीएच.डी. उपाधी प्राप्त की। हालही में, सौ. भारती शरणागत ने पवारी भाषाविज्ञान पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपूर में ई. २०१९ में पीएच.डी. प्रबंध सादर किया है. उसी तरह तुफानसिंह पारधी पवारी शब्दकोश डिजिटायलेशन का पीएच.डी. के लिए महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) में कार्य कर रहे हैं. अतः पवारी बोली विश्वविद्यालयों की पाठ्यक्रम में सम्मानजनक स्थान ग्रहण कर चुकी है.

पवारी बोलीभाषा संशोधन, साहित्य संकलन, सृजन व संवर्धन की दिशा में गत

३० वर्षें से कुछ किताबे भी प्रकाशित हो चुकी है तथा सूची दी जा रही है -

१. गीत गंगा	(गीत)	श्री यादोराव चौधरी,	१९९८
२. भाऊ आता जागो,	(गीत)	ॲड.मनराज पटले,	२००१
३. बिह्या का गाना	(गीत)	श्री. यादोराव चौधरी,	२००२
४. त् आता करोना आपलो विकास	(गीत)	ॲड. मनराज पटले,	२००५
५. पवार गाथा	(गद्य)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२००६
६. पवारी लोक साहित्य काव्य	(लोकगीत)	श्री. गोपीनाथ कालभोर,	२००६
७. ग्रामगीता (पवारी)	(भाषांतर)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२००९
८.पवारी गीत गंगा	(लोकगीत)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२०१०
९. पवारी का आधुनिक काव्य	(गीत)	श्री. गोपीनाथ कालभोर,	२०११
१०. पवारी लोक साहित्य	(संकलन)	श्री वल्लभ डोंगरे,	२०११
११.रूनुक-झुनूक	(शब्दकोश)	श्री वल्लभ डोंगरे,	२०११
१२.पवारी ज्ञानदीप	(लोक साहित्य)	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे,	२०११
१३.पवारी गीत	(गीत)	श्री. गोपीनाथ कालभोर,	२०१२
१४.गीत रामायण (पवारी)	(भाषांतर)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२०१२
१५.सीखो सबक पवारो	(लेखसंग्रह)	श्री वल्लभ डोंगरे,	२०१३
१६.श्रीमद्भगवद्गीता सार	(भाषांतर)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२०१४
१७.बोली लागे जीवा	(समीक्षा)	श्री सुरेश देशमुख	२०१४
१८.राजाभोज गीतांजली	(काव्य)	श्री. जयपालसिंह पटले,	२०१५
१९. गूंज उठे पवारी	(कविता-कथासंग्रह)	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे,	२०१७
२०. दुर्वांकुर	(कहानी संग्रह)	डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे,	२०१९
२१. पवारी साहित्य सरिता	(स्मारिका)	१लो पवारी साहित्य सम्मेलन,	२०१९
२२.पोवारी मायबोली अमर रहे...	(गीत)	श्री. सी.एच.पटले,	२०१९
२३. गांव शिवार	(कथासंग्रह)	श्री हिरालाल बिसेन,	२०२०
२४.बुलंद करो पवारी	(कविता संग्रह)	डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे,	२०२०

पवारी बोली भाषा कला संस्कृति के सृजन, संवर्धन, जतन, प्रचार-प्रसार, साहित्य निर्मिती आदी उद्देश्यों को सामने रखकर पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की स्थापना पवारी प्रेमियों द्वारा ४ नवम्बर, २०१८ को की गई . मंडल के माध्यम से प्रतीवर्ष स्थापना दिवस समारोह, साहित्य सम्मेलन, काव्यस्पर्धा, परिचर्चा, लोककला एवम् कवि सम्मेलन आदि का आयोजन कर पवारी बोलीभाषा साहित्य कला संस्कृति के सृजन संवर्धन की दिशा में कार्य चल रहा है.

- डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

प्रस्तावना

बोलीभाषा व प्रमाणभाषा

'भाषा' हा शब्द 'भाष्' या संस्कृत धातूपासून बनला आहे व त्याचा अर्थ होतो बोलणे. अर्थात भाषा म्हणजे बोलणे व बोलली जाते ती बोली. म्हणजेच भाषा व बोली हे दोन्ही शब्द समान अर्थाचे वाचक आहे. बोलली जाणे हे भाषेचे पहिले व महत्त्वाचे लक्षण आहे. एखाद्या समाजाची, प्रदेशाची वा जातीची बोलीभाषा जेव्हा लिहिण्याची भाषा म्हणून स्वीकारली जाते; तसेच ग्रंथनिविष्ट होऊन प्रसारमाध्यमे व राज्यव्यवहारात वापरण्यात येते, त्यामुळे विद्वन्मान्यता मिळालेल्या भाषेला प्रमाणभाषेचा दर्जा मिळतो. महाराष्ट्रात आज जी मराठी भाषा प्रमाणभाषेचा दर्जा मिळवून प्रतिष्ठित झाली, ती ही एक समाजाची; प्रदेशाची व जातीची बोली भाषा होती. संत ज्ञानेश्वरांची ज्ञानेश्वरी लोकभाषेत रचली, महानुभावीय विद्वानांनी वऱ्हाडी बोलीत मराठीची पहिली ग्रंथरचना केली. या उदाहरणांवरून लोकभाषा या त्या त्या काळात प्रमाणभाषा होत्या हे सिद्ध होते. तसेच प्रभावी रीतीने लोकांपर्यंत संदेश पोहचविण्याकरिता त्यांचा वापर झाला होता हे ही स्पष्ट होते. एखादी बोली ऐतिहासिक कारणांनी प्रमाणभाषा ठरते. पण तिला संजीवन देण्याकरिता बोलीभाषाच नेहमी धावून येतात. हे भाषावैज्ञानिक तथ्य आहे.

पवारी बोलीभाषा

महाराष्ट्रातील बोली ह्या इतर भाषेतील बोलींप्रमाणेच विविधतेने नटलेल्या आहेत. त्या जशा व्यवसायानुरूप निर्माण झालेल्या आहेत, तशाच जातींच्या पर्यावरणातही रमलेल्या आहेत. प्रादेशिकतेचे अवगुंठन घेतलेल्या या बोलींनी मराठी भाषेचे भांडार समृद्ध केलेले आहे. पवारी बोली ही त्यापैकी एक आहे. पवार किंवा पोवार हे कुळ भारतातील बहुतांश जातींमध्ये आढळते. त्याचप्रमाणे या कुळातील लोक जगातील बहुताश देशांमध्येही आढळतात. त्यामुळे 'पुर्थई भया पंवार' हा वाक्प्रचार रूढ झाला. परंतु पवार या कुळनामाचे एका जातीत रूपांतर झाले, त्यामुळे पवार ही एक जात सुद्धा आहे. मध्यप्रदेशात नदीच्या काठावर वसलेले या अर्थाने ताप्ती तटीय, तवा तटीय, बेतवा तटीय, क्षिप्रा तटीय, नर्मदा तटीय, सिंधू तटीय, गंगा तटीय तसेच महाराष्ट्रात वर्धा तटीय आणि वैनगंगा तटीय असे पवारांचे दोन प्रमुख जातीसमूह अस्तित्वात आहेत. त्यांना अनुक्रमे भोयर-पवार आणि पवार किंवा पोवार या शब्दांनी संबोधले जाते. त्यांची बोली काही प्रमाणात बाह्यरूपी वेगळी वाटत असली तरी शरीर मात्र एकच आहे.

हेमंत कुकरेती संपादित ''भारतकी लोक-संस्कृती'' या ग्रंथामध्ये याविषयी माहिती देताना पवारी लोकसाहित्याच्या गद्यप्रकारात १. मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियाँ,

लघुकथाएं, पवारी-सास्तर, पहेलियाँ-(बौद्धिक वृद्धि हेतु) तसेच अड़ंगे-प्रश्नोत्तर पद्धति (अड़वाथा) यांचा समावेश होत असल्याचे अधोरेखित केलेले आहे. याविषयी ते म्हणतात -

''उपरोक्त प्रकार का लोक-साहित्य (वाचिक साहित्य) सतपुड़ान्चल के उन तमाम ग्रामीण अंचलों में विस्तारित हुआ है, जहाँ पवारी बोली बोलनेवाले (मालवी तथा निमाड़ी की तरह) लाखों लोग रहते हैं और गाँव-गाँव में लोक-जीवन के विविध रंगों को जन्म होने से लेकर मृत्यु पर्यंत तक, लोक-गीतों, लोककथाओं, गाथाओं, पहेलियों, सजनगोटो, मुहावरों, लोकोक्तियों, विवाह-गीतों, पालना गीतों, ऋतु गीतों, श्रम-गीतों, बाल-गीत सास्तर एवं वीर काव्य एवं गोन्दर गीत व कथाओं व् भजनों व् सूदन-गीतों (मृत्यु गीत) के रूप में गाए व् सुनाए जाते हैं.

इन गीतों, कथाओं के अतिरिक्त पवारी लोक संस्कृति लोक-कला, लोक नृत्य तथा लोक मनोरंजन व बाल गीत आदि प्रचुर संख्या में मध्यप्रदेश के इस सतपुड़ा-पर्वत शृंखला की तलहटी में बसे क्षेत्र के लोगों में बहुत प्रचलित है.

पवारी बोली तथा उसका लोक-साहित्य-संसार प्रदेश और देश की अन्य बोलियों व भाषाओं के समकक्ष ठहरता है और भविष्य में इसके वाचिक-साहित्य का संकलन, संग्रहण, प्रकाशन व लेखन निरन्तर होता रहेगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए. जिस तरह कोई समाज देरी से जागता और अपनी भाषा-बोली, कला व संस्कृति पर गर्व नहीं करता है तो यही लेट-लतीफी देखने को मिलती है. इस बोली का हश्र और इसकी कला-संस्कृति का अस्तित्व समाप्त होने की कगार पर आ जाता है, तो कोई मसीहा आता है और तब लोक जाग्रति, लेखन और लोक संस्कृति व साहित्य को संग्रहित कर लोगों के सामने जाते है.''

पोवारी बोलीभाषेच्या अभ्यासक प्रा.डॉ. मंजू अवस्थी यांनीही तसेच प्रतिपादन केले आहे की - ''देशातील विविध प्रदेशात बोलीभाषांमधून संवाद साधून आपसातील व्यवहार केले जातात, प्रमाणभाषेपेक्षा बोलीभाषा ही सोपी असल्याने या बोलीभाषेच्या संवर्धनासाठी प्रत्येक समाजाला झटणे गरजेचे आहे. पोवारी बोली भाषा ही देशातील महत्त्वाची भाषा असून राष्ट्रीय स्तरावर हिंदीची उपभाषेच्या रूपाने ४६ व्या क्रमांकावर या भाषेचे स्थान आहे. पोवारी बोलीभाषेमध्ये राजस्थानी, गुजराती, गोंडीसह जैन संस्कृती मिसळली गेली असून त्या भाषेने पोवारी बोलीभाषेतील काही शब्दांना आपल्यात सामावून घेतले आहे. अशा गोड व संपन्न पोवारी बोलीच्या संवर्धनासाठी मात्र समाज कुठे तरी मागे पडल्याने गेल्या एक दशकाचा विचार केल्यास पोवारी भाषेचा ऱ्हास झाल्याने ही भाषाच लुप्त होण्याच्या मार्गावर आली आहे.''

पोवारी बोलीविषयी पोवारी बोलीचे अभ्यासक डॉ. सु. बा. कुलकर्णी म्हणतात की

- ''पोवारी ही एक जातिबोली आहे. जात हे रक्ताच्या नात्याने व अंतर्विवाह नियमाने बांधलेले व्यातमुख्र सामाजिक संघटन असते. यामुळे जातिबोली या अधिक आदानशील असतात व त्वरेने परिवर्तित होत जाताता. जातीच्या तुलनेने जमात हा अधिक सुसंहत व दृढ सामाजिक गट असतो. त्यामुळे जमातबोली या कमी परिवर्तनशील व आर्ष असतात. जातिबोली व जमातबोली यामधील परस्पर भाषिक व्यवहारातून प्रादेशिकतेच्या आधारावर क्षेत्रबोली निर्माण होतात. नागपुरी, चंद्रपुरी (झाडी), वऱ्हाडी, पुणेरी या क्षेत्रबोली होत. क्षेत्रबोलीतील एखादी बोली शिष्टमान्य होऊन लेखन व्यवहाराचे माध्यम बनते व प्रमाणबोलीच्या पदवीस पोहोचते. ऐतिहासिकता व प्रामाण्य या आधारावर ती भाषा म्हणून ओळखली जाते. भाषेचे व्यवसाय, कार्यक्षेत्र, वय, लिंग इ. आधारांवरही प्रभेद संभवतात.'' पोवारी बोली ही एक जातिबोली आहे याविषयीचे विवेचन करताना डॉ. कुलकर्णी यांनी तिचे स्थान या ठिकाणी निश्चित केलेले आहे. पोवारी बोलीचे मूळ माळवी स्वरूप पार बदलून गेले आहे. नागपुरी आणि झाडी बोलीतील बरीचशी वैशिष्ट्ये तिच्यात आढळतात.

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे व त्यांची कविता

पोवार समाजाचे अखिल भारतीय स्वरूपाचे नेते व संघटक डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे हे १९७३ ते २००४ या कालावधीत नागपूर विद्यापीठातील प्राणीशास्त्र विभागाचे प्राध्यापक होते. विभागप्रमुख, अधिष्ठाता, विद्यापीठ व्यवस्थापन परिषद, विद्वत परिषद तसेच विधि सभा सदस्य अशा विविध अधिकारपदावरून त्यांनी विद्येच्या क्षेत्रातील कार्ये करून विद्यापीठीय स्तरावर आपल्या व्यक्तिमत्वाचा ठसा उमटविलेला आहे. त्याचप्रमाणे आपल्या विषयातील संशोधनासाठी त्यांनी जर्मनी व अनेक विदेशांचा प्रवास सुद्धा केला आहे. विद्यापीठीय अभ्यासक्रमासाठी त्यांनी पाठ्यपुस्तके आणि संदर्भ ग्रंथ सिद्ध केलेले आहेत. अनेक राष्ट्रीय व आंतर राष्ट्रीय चर्चासत्रांमध्ये त्यांचे शोध निबंध प्रकाशित झालेले आहेत. आचार्य पदवी प्राप्त करून त्यांनी अनेक विद्यार्थ्यांना आचार्य पदवीसाठी मार्गदर्शन केले आहे. विद्याक्षेत्रातील त्यांचे हे डोळे दीपविणारे योगदान जेवढे ऐतिहासिक स्वरूपाचे आहे, तेवढेच आपल्या समाजाच्या उन्नतीकरिता त्यांनी केलेले संघटनात्मक कार्यही मोलाचे आहे.

१९८२ मध्ये त्यांनी पवार युवक संगठन (आताचे 'पवार समाज संगठन') या संस्थेची स्थापना करून तिचे अध्यक्षपद १९९६ पर्यंत भूषविले व नागुरात पवार विद्यार्थी भवन उभे केले आहे. त्यानंतर अखिल भारतीय पवार महासभेच्या अध्यक्षपदी (१९९९-२००६) राहून त्यांनी देशाच्या विविध भागात पवार समाजाला मार्गदर्शन केले आहे. १९८४ पासून तो आजतागायत ''पवार संदेश'' या नियतकालिकाचे संस्थापक संपादक

या नात्याने कार्यरत आहेत. त्यांची राजा भोज (२००५) पवारी ज्ञानदीप- पवारी भाषा विज्ञान व लोकसाहित्य (२०११), गुंज उठे पवारी कविता-कथासंग्रह (२०१७) व दुर्वांकुर (पवारी कहानी संग्रह) २०१९ ही पुस्तके अतिशय लोकप्रिय झालेली आहेत. विविध नियतकालिकांमध्ये त्यांनी पोवार समाज व त्याचा इतिहास, सस्कृति व भाषा या विषयांवर शोध लेख लिहिले आहेत. या पार्श्वभूमीवर त्यांच्या कवितेकडे पाहताना त्यामागील आशयाचे भान आपणास आल्याशिवाय राहत नाही.

'पोवारी बोली बचाव' अभियानाचे सूत्रधार या भूमिकेतून त्यांनी आपली काव्य रचना केलेली आहे. त्यामुळे बरेच ठिकाणी तिला प्रचारकी स्वरूप प्राप्त झाले आहे. त्याचप्रमाणे पोवार समाजाचा इतिहास व त्याची सांस्कृतिक जडण-घडण यांचे प्रतिबिंबही च्यांच्या कवितेत पडणे स्वाभाविक आहे. 'गुंज उठे पवारी' या त्यांच्या पहिल्या काव्य व कथासंग्रहात एकूण ६० कविता व ५ कथा संग्रहित करण्यात आलेल्या आहेत.

बुलंद करो पवारी

या काव्यसंग्रहातील एकूण १५० कवितांपैकी पहिल्या चार कविता आपल्या आराध्य दैवतांना नमन करणाऱ्या आहेत तर त्यानंतरची अर्थात पाचवी कविता 'बुलंद करो पवारी' या शीर्षकाची आहे. या कवितेत कवी आपला या उपक्रमामागील हेतू स्पष्ट करतो. त्यानंतर येते ते पवारी गीत, तेही नव्या पिढीला प्रोत्साहन देणारेच आहे. त्यानंतरच्या सोळाव्या क्रमांकापर्यंतच्या कविता पवारी बोलीच्या गुण गौरवाचे चिंतन करणाऱ्या आहेत. त्यानंतर पवार समाजाचा गौरवशाली इतिहास कथन करणाऱ्या कवितांचा क्रम लागतो. यातील विसाव्या क्रमांकाची कविता मात्र पवार अस्मितेला स्वाभिमानाने वळण देणारी आहे. ती मध्ये कवी म्हणतो की,

'पवारच सताहा सेत खुद बामन
कर सेत मन भावलका देव पुंजन
बिना पंडित निपटसे बिहा त्योहार सन
सब विधि विधान अन ज्ञान सृजन.'

पवार समाजात आपल्या धार्मिक विधींसाठी ब्राह्मणाला सहभागी करवून घेण्याची परंपरा नाही, हे वास्तव या कवितेमधून डॉ. टेंभरे यांनी मांडले आहे. पवारांच्या इतिहासात मात्र परमार अर्थात पवारांची उत्पत्ती अग्निकुंडापासून झाल्याची आख्यायिका सांगितलेली आहे. पवार आपले गोत्र वसिष्ठ किंवा कश्यप हे सांगत असले तरी ब्राह्मण गौण लेखतात यावरून ये सिद्ध होते, यावरूनही हे सिद्ध होते. पवारांनी आपल्या कृतीने या आख्यायिकेची खिल्ली उडविलेली आहे. कवीने समाज सुधारणेसाठी प्रभावी असे काव्य हे माध्यम निवडून आपल्या योजकतेचा परिचय दिला आहे.

या संग्रहातील 'सामाजिक ऋण' या कवितेतून सामाजिक बांधिलकीचा कवीचा हेतू स्पष्ट होतो. यात काही कुटुंब कविताही आहेत.

कुटुंब कविता आपल्या आईचे आपणावर असलेले उपकार आपणास कधीही फेडता येत नाहीत, या वास्तवाची जाणीव करवून देणाऱ्या 'वा मोरी माय होती', 'माय नही कव्ह कभी', 'माय मोरी काशी', 'माय घर की आंबील', 'माय घर की याद मा',या कविता कवीच्या हळुवार भाव संवेदनांचा प्रत्यय आणून देतात. तसेच बहिण भावाच्या निव्वळ प्रेमाचे स्मरण करवून देणारी 'राखी आय प्रेम बंधन', मुलगी व वडिलामधील जिव्हाळा व्यक्त करणाऱ्या 'पापा ना आओ ठेसन', 'बेटा-बेटी!' या कविता कुटुंबातील सदस्यांच्या परस्पर संबंधाची वीण उलगडवून देतात. त्यांच्यामधील जिव्हाळा, ओढ, एकमेकांपासून दूर जाताना होणारी तगमग अशा कितीतरी भाव-भावनांची रांगोळी काढण्यात डॉ. टेम्भरे रंगून जातात. या कवितांना या ठिकाणी कुटुंब कविता या शब्दांनी संबोधले असले तरी त्या केवळ कुटुंब कविता नाहीत, तर कवीच्या मनःपटलावर उठलेले त्या त्या भावनांचे तरंग आहेत. त्याचप्रमाणे साऱ्या संवेदना टिपताना कवीच्या मनाला पडणारा पीळ या कवितांमधून व्यक्त झालेला आहे. त्यांच्या काही कविता - 'जवाब मांग रही से नारी', 'बेगरचार', 'कोन तेरवी रोटी खाये', कुप्रथा निर्मुलन आणि काही शिक्षण, प्रचार प्रसार, व्यवसाय व सामाजिक एकतेचा संदेश देतात.

या काव्यसंग्रहाचा तपशीलवार परामर्श या ठिकाणी घेणे शक्य नाही. परंतु याठिकाणी एवढेच सांगतो की, 'पोवारी बोली बचाव' हे केवळ निमित्त आहे. डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे याशिवाय एक कवी म्हणूनही उरतातच. त्यांच्या या कविता सामाजिक भान आणून देणाऱ्या असून पोवारी बोलीच्या प्रचार व प्रसारात त्यांचे योगदान ऐतिहासिक स्वरूपाचे ठरणार यात शंका नाही. त्यांचे कुटुंब खूपच मोठे आणि व्यापक झाले आहे. त्याला संत ज्ञानेश्वरांच्या 'हे विश्वचि माझे घर' या शब्द संहतीचा आंतरिक स्पर्श झालेला आहे. त्यांच्या नावातच ज्ञानेश्वर आहे, त्यामुळेही कदाचित ही वैश्विकता त्यांना लाभली असेल. त्यांच्या साहित्य निर्मितीला असेच वैश्विकतेचे कोंदण लाभो, अशी अपेक्षा करतो आणि पुढील साहित्य निर्मितीच्या प्रवासात त्यांना मनस्वी सदिच्छा देतो.

यवतमाळ दिनांक : १६/१२/२०१९
मो. ९३२५५१४२७७

डॉ. अशोक राणा
पूर्व प्राध्यापक, महिला महाविद्यालय,
संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ,
अमरावती (महाराष्ट्र)

अभिप्राय

'बुलंद करो पवारी' शीर्षक के साथ ही आधुनिक पवारी काव्य यह एकसौ पचास कविताओं का ऐसा संग्रह है जिसमें पवारी बोली के वर्तमान रूप के साथ ही समाज की मिट्टी की सोंधी खुशबू भी है.

सदियों से पवारी लुप्तप्राय हो रही थी अब जब एक पढ़े -लिखे समाज के अंग ने समाज, और बोली के उत्थान का बीड़ा उठाया है तो अब किसी को भी पीछे मुड़ कर देखने की आवश्यकता नही होगी. जब किसी बोली को साहित्यिक रूप मिलने लगता है तो यह स्पष्ट होने लगता है कि अब वे दिन दूर नहीं जब यह समाज विकास और उत्थान के मार्ग पर चल पड़ा है. यह समाज उन्नति के लिए लालायित है. अब यह समाज आत्मकेन्द्रित नही संपूर्ण समाज के विकास के लिए प्रयत्नशील है. प्रत्येक कविता मिट्टी की सोंधी सुगंधि के साथ ही कुलदेवी, कुलदेवता, परंपराओं, संस्कारों, पहनावा, रहन-सहन, लोकजीवन, लोकसंस्कृतिओं और समाज के छोटे-छोटे अंश पर दृष्टिपात् करती है. यह संग्रह समाज के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगा.

मै डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे जी को इस हृदयस्पर्शी काव्य संग्रह के लिए साधुवाद देती हूँ, और विश्वास करती हूँ की अपनी प्रतिभा के दिन प्रति दिन और अधिक निखार प्रदान कर समाजोत्थान में योगदान देंगे. उनका यह प्रयास स्तुत्य है.

अपनी हार्दिक शुभेच्छाओं सहित

दि.१३/८/२०१९

डॉ. सौ. मंजु अवस्थी
से.नि. प्राचार्य
शासकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बालाघाट, (म.प्र.)

आमुख गीत

बुलंद करो बुलंद करो पवारी

गर रहे बचावनो पवारी संस्कृति
गर रहे बचावनो पवारी संस्कार
गर रहे बचावनो पवारी अस्मिता
त बुलंद करो, बुलंद करो पवारी .....

गर से ठेवनो जिती मालवी की सखी
गर से ठेवनो जिती मुंज भोज की वाणी
गर से ठेवनो जिती माय, वाग्देवी स्तुति
त बुलंद करो, बुलंद करो पवारी .....

गर से पावनो कुलदेव देवी की कृपा
गर से ठेवनो पितरहिन की प्रतिष्ठा
गर से राखनो मायबोली की गरिमा
त बुलंद करो, बुलंद करो पवारी .....

गर करनो रहे वऱ्हाडी झाडीबोली की यारी
गर करनो रहे हिंदी मराठी ला समृद्धशाली
गर करनो रहे मनन, सृजन, संवर्धन पवारी
त बुलंद करो, बुलंद करो पवारी .....

गर से करनो पवारी लोकभाषा अमर
गर से ठेवनो लोकसाहित्य कला जिवंत
गर से विश्वविद्यालय मा गूंजावनो पवारी
त बुलंद करो, बुलंद करो पवारी .....

***

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

१. पवार कुलदेवी स्तुति

पवारी गाव-गाव मा रव्हसे देवी को ठाना
बड़ क झाड़ खाल्या बसी रव्ह से माय माता
संकट, दुख दर्द मा देवी कर् से आमरी रक्षा
अखाड़ी, नवरात्री, बिह्या मा होसे महापूंजा।

पवारी घर-घर नवरात्र मा होसे घटस्थापना
पवार मरदमाना आईमाई पाल् सेत निष्ठा
घर् - घर् होसे देवी पाठ, जस ना अर्चना
अष्टमी ला होसे सबजन साठी महापरसादा।

पवारी घर्-घर् नव कुमारी पावसेत भोजन
घरकी नारी ला लेख् सेत लछमि गौरन
वाच बन्से महाकाली ना कर्से घर की रक्षा
पवार नारी ला से मान भारी जसो देवीला।

पवार कुलदेवी अवतर् से नवदुर्गा सप्तमी ला
देवी कालरात्रिच आय आमरी माय गढ़कालिका
गढ़कालिका लाच कव्हसेत महामाया काली माता
वोलाच कसेत भद्रकाली, भैरवी चंडी, अना चामुंडा।

माता गढ़कालिका कुलदेवी आमरी अष्ट भूजाधारी
तन बदन से कारो-कारो चमक से काजर वानी
अम्बे तू च जगदम्बे कालीका, जय मा गढ़काली
तोला नमन करे पवारी, तोरी उतारे सब आरती ।

***

२. पवार कुलदेव प्रार्थना

शिवजी, तुमि आमरा कुलदेवता
पवार वंश का तुमि पालनहारा
बेलफूल, दूधदही अर्पण तोला
हर-हर महादेव भोले-शंकरा ......

भोलेनाथ महेश रुद्र निलकंठा
करे त्रिलोक दर्शन तिसरो डोरा
हाथ मा त्रिशुल गरोमा नागमाला
हर-हर महादेव भोले शंकरा ......

तू रामेश्वरम् नंदीवर्धना
तू महाकाल ओंकारेश्वरा
तू बहाय जटाल् गंगाधारा
हर-हर महादेव भोले-शंकरा .....

हे केदारनाथ बैजनाथ विश्वनाथा
हे सोमनाथ नागेश्वर मल्लिकार्जूना
हे घृणेश्वर भीमाशंकर त्र्यंबकेश्वरा
हर-हर महादेव भोले शंकरा ....

***

३. हर-हर भोलेनाथ

दीन-दयालु महा-कृपालु,
शिव भोले भंडारी।
हर-हर भोले नाथ तुमरी,
लिला से न्यारी ।।

देवईन का देव तुमि,
काल को महाकाल।
हर-हर भोले नाथ तुमरी,
लिला से न्यारी।।

अलख निरंजन हे योगेश्वर,
भजत तुमला त्रिचाल।
हर-हर भोले नाथ तुमरी,
लिला से न्यारी।।

वंदन तुमला बारम्बार,
आमि सब संसारी।
हर-हर भोले नाथ तुमरी
लिला से न्यारी।।

एक हाथ बसे गौरी,
दुजे पर गणपती।
हर हर भोले नाथ तुमरी,
लिला से न्यारी ।।

कंठ सजे विशधारी
जयजय त्रिशुल धारी
हर हर भोले नाथ तुमरी,
लिला से न्यारी।।

***

४. गुरू वंदना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा
गुरूः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरूवे नमः

गुरु ब्रह्मा करे निर्माण विश्व
गुरु विष्णु चलाए जीवन चक्र
गुरु महेश देवाये अंतमा मोक्ष
गुरु करे मार्गदर्शन बन पार्थ ।

पहलो गुरु माय भरे संस्कार
दुसरो गुरु बाप ढाले पुरुषार्थ
तिसरो गुरु शाला मा दे ज्ञान
चौथो गुरु महात्मा दे अध्यात्म ।

गुरु करे तेज बौद्धिक शक्ति
गुरु जगाये प्रखर ईच्छावृत्ति
गुरु तराशे विवेकशील बुद्धि
गुरु करे सक्षम चरित्र निर्मिति ।

गुरु बिन नही प्रतिभा उजागर
गुरु बिन नही व्यक्तित्व कनखर
गुरु बिन नही सत्य को दर्शन
गुरु तुमला शत् शत् नमन ।

***

५. बुलंद करो पवारी

सबदुन सोपी मीठी से भाषा पवारी
सबदुन साधी भोली से भाषा पवारी
शब्द मोज्या माप्या पर से अर्थ भारी
घर बाहेर सबका मन जोड़े पवारी ।

आपल् पवारी भाषा पर से गर्व आमला
पवार आजन आमि कसे पवारी जनता
पवारी मन की आय आशा अभिलाशा
पवारी संस्कार संस्कृति ल भरी से भाषा ।

अद्‌भुत अद्वितीय, अनुपम से पवारी
पवार समाज को अलंकार से पवारी
पवार समाज की पयचान से पवारी
पवार समाज को इतिहास से पवारी ।

पवारी बोलो, पवारी लिखो, पवारी सुनो
कथा कहानी लेख आलेख सब लिखो
जनमानस क आंगण मा लहराओ पवारी
बुलंद करो पवारी! गा बुलंद करो पवारी!!

***

६. पवारी गीत

आओ! सब मिलजुलकर गाओ
पवारी गीत संगीत गुणगुनाओ ।।धृ.।।

पवारी तन-मन, पवारी जन-गण
पवारी जनम-मरण, पवारी जीवन ।

पवारी धडकन, पवारी क्रंदन
पवारी चिंतन पवारी सृजन ।

पवारी संस्कार, पवारी संस्कृति
पवारी बोली, पवारी ज्ञान देवी ।

पवारी माता, पवारी पिता
पवारी गुरु, पवारी ब्रह्मा ।

मराठी हिंदी इंग्रजी परदेशी
पवारी आमरी से मायबोली
मराठी हिंदी इंग्रजी उपजी बादमा
पवारी से जन्मी वैदिक कालमा।

मराठी हिंदी इंग्रजी नौकरी पुरती
पवारी आमरी आय पवार भारती ।
पवार समाज धरोहर पवारी
करो करो बुलंद करो पवारी ।

***

७. पवारी रहे अमर अजरामर

पवारी मा आब् बी जान प्राण से
पवारी जबान मा तेज तुफान से
धावती पराती हवा को झोका से
पतंगवानी आकाश मा उड़ान से ।

पवारी आय हिंदी की नहान बहीन
पवारी आय मराठी की मावस बहीन
पवारी की माय मालवी बुंदेली जिंदा से
जबवरी सेत चांद सूरज पवारी आबाद से ।

पवारी मा आबु अग्निकुंड की आग से
पवारी मा बैनगंगा वर्धा की धार से
पवारी मा धार को राजशाही थाट से
पवारी मा समायो आमरो इतिहास से ।

चाहे हिंदी मराठी अंग्रेजी मचाये शोर
चाहे कोनी बी सम्हाले भारत की डोर
जबवरी से विराजमान पवार धरती पर
पवारी रहे हमेशा अमर अजरामर ।

***

८. चलो चलो पवारी ढुंढन चलो ...

जित् देखो उत् पसरी से अंधारो
नही मालुम पवारी छुपी कहां से
ढुंढन वोला दिवा बाती जराओ
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

भय गई से बोहुत आता उसिर
जागो कब् वरी सोवत रहो तुमि
चलो-चलो पोवारीला ढुंढन चलो
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

वैभवशाली पवार समाज भयेव निर्धन
वाग्देवी-सरस्वती बस गई रूठकन
पवारी संस्कृति अस्मिता खोय गई कहां
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

कोनी न् आपली बोली फेकीस अंधारो मा
कोनी न् आपला संस्कार फेकीस कचरा मा
न जाने जात-धरम खोय देईन कहां कोंटो मा
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

नही मालुम पवारी छुप गई कहां,
घनघोर अंधारो मा लुप गई कहां
चलो चलो करो उजारो दिवा जराओ
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

भय गई से बोहुत लम्बी उशिर
पवारी पराय गई से बोहुत दूर
धावो धावो तेज रफ्तार बढाओ
पवारजन उठो-उठो पवारी ला ढुंढन चलो ।

***

९. तु काहे पोंगा फुक्सेस?

हिंदी मराठी क बजार मा
पवारी फूटफूटकर रोवसे
बहरा गुंगा की बसती मा
तु काहे पोंगा फुक्सेस?

पवारी बचावन क चिंता मा
तु काहे मर-मर कर्सेस
बहरा गुंगा की बसती मा
तु काहे पोंगा फुक्सेस?

मराठी लावनी हिंदी ठुमका
पवारी मा नाहाय गंदो धंदा
बहरा गुंगा की बसती मा
तु काहे पोंगा फुक्सेस?

इंग्रजी को डिस्को बजसे
टुरा टुरी ला जोस चढसे
बहरा गुंगा की बसती मा
तु काहे पोंगा फुक्सेस?

***

१०. बोली संवर्धन

जब् होसे जनम
बोल फुटसेत तब
कंठ क अंदर
जीब-ओठ हलसेत्
त फुट पड्सेत श्वर
स्वर-व्यंजन गुथकर
बन जासे वर्णमाला
शब्द-शब्द की लहर
बोहसे बोली बनकर ।

बोली जोडसे मन
दिल-दिमाग की लहर
धावसे एक दुजो कन
एक क मुख ल उडकर
समाय जासे कान मा
करसे झंकृत कन कन
स्पंदीत होसे सारो अंग
जोड़ देसे जन-जन ।

शब्द-शब्द जुड जुड
बन्सेत क्गा धागा
धागा धागा गुथकर
बन जासेत मजबुत दोरा
दोरा उडाव्सेत पतंग
धरती जुड जासे आसमां संग
मानुस उडसे कबी आसमां
त उतरसे कबी जमीन पर।

बोली समजो अंकुर
बीजल् उगेव दुर्वांकुर
बाद मा बन कर पौधा
लहरासे स्वच्छंद हवामा
रवात पानी देव रोज वोला
संवर्धन करो मातृभाषा ।

***

११. पवारीवानी नही कोनी सौंदर्य सुंदरी

माथा पर शोभे अनुस्वार की टिकली
कान चापु पर चमके प्रश्नचिन्ह की फुली
नाक पर सजे स्वल्पविराम की नथनी
पवारीवानी नही कोनी सौंदर्य सुंदरी!.....

गरो मा से काना-मात्रा की माला
बेनी पर से अं-अः को फूल चाफा
वेलांटी को पदर चढी से डोई परा
पवारीवानी नही कोनी सौंदर्य सुंदरी!.....

कमर ला लटकीसे उद्गार को छल्ला
चेहरा पर चमके मन की आभा
पाय मा बजे उकार का पैजना
पवारीवानी नही कोनी सौंदर्य सुंदरी!.....

पूर्णविरामी तीर चमके गालपरा
गुलाबी ओठ लाल शाईल् रंग्या
कारो सुरमा कारी शाई की रेखा,
पवारीवानी नही कोनी सौंदर्य सुंदरी!.....

***

१२. त वोला कोन कहे पवार?

खुदला कसे मिस्टर राम
बापला कसे डियर डॅड
मायला कसे प्रिटी मॉम
त वोला कोन कहे पवार?

रहे बटा लिखेव-पढेव खुब
रहे ना वु साहेब अफसर उच
लगे जेला बोलन पवारी लाज
त वोला कोन कहे पवार?

रहे बंगला-गाडी खुबसुरत
रहे नही पैसा की किल्लत
लगे जेला पवारी बोलन शरम
त वोला कोन कहे पवार?

नही घुया-सुरण को सवाद
नही कोचई बडी की आस
नही बुल्या कुसुंब को स्वाद
त वोला कोन कहे पवार?

घर पर अंग्रेजी मा नामपट्टी
बोलसे हरदम हिंदी मराठी
पर नही आव् बोलता पवारी
त वोला कोन कहे पवार?

***

१३. से मोला खबर, से तोला पता

मि पवारी, से मोला खबर
तु पवार, से तोला पता
होय रह्या सेत अलग-अलग
आमरा तुमरा दुही का रस्ता .....

चलत-चलत दूर-दूर अंतर
बन गयो खुप लम्बो फासला
मुख मा भर गई कई भाषा
पर सेव मि तोर् अंतरमन ......

मालुम से मोला ऐश्वर्य गयो लूट
खबर से मोला घर गयो तूट
पर खंडहर सेत आब् बी उभा
हास रह्या सेत तोर् उदासी परा .....

भाषा आवसे जसो बारीस को पानी
भाषा धावसे जसी नदी की धारा
भाषा होय जासे गायब जसा सपना
पर नही मरू मि कबी जसी आत्मा .....

***

१४. 'मि पवार'

सुखा पाका को नही भेव मोला
धरू नही कभी हाथ मा कटोरा
से आपलो बाहु पर गर्व मोला
'मि पवार' से अभिमान मोला ....

माय कसे ईमान ठेव बनाय बेटा
बाप कसे मेहनतच तोरी पूंजा
स्वाभिमानच समझ तु प्रतिष्ठा
'मि पवार' से अभिमान मोला ....

पवार कभी बिक् आपली बेटी नही
पवार कभी लेय खरीद जवाई नही
पवार घर् जर् कभी बोहू नही
'मि पवार' से अभिमान मोला ....

कोनी पवार नक्षलाईट नही
कोनी पवार चोर डाकु नही
कोनी पवारजन देशद्रोही नही
'मि पवार' से अभिमान मोला ....

पवार जगजाहीर धर्मयोद्धा
पवार जगजाहीर कर्मयोद्धा
पवार जगजाहीर ज्ञानयोद्धा
पवार जगजाहीर रणयोद्धा....

***

१५. पवार राजवंश महान

परमार पवार राजवंश महान
आबु अवंति धार ल करे राज
बन्या मालव चक्रवर्ती सम्राट
भया अमर अजरामर प्रख्यात।

सुर्य चंद्र धरती करे नाज
शिव काली दे आशिर्वाद
हिंदूराष्ट्र करीन उभो
सत्यं शिवं सुंदरं शंखनाद।

नीति धर्म न्याय जनकल्याण
भाषा साहित्य ज्ञान विज्ञान
संस्कार संस्कृति की खान
मालव की होती असी पैचान।

विक्रम भोज जगदेव पवार
इतिहास का हीरा जवारात
जेला नही जाति अभिमान
उ समजो मुढ़ पशु समान।

आमि इत् उत् सब बिखर गया
परमार पवार पोवार भोयर
सबको खून से आमरो एक
आमि अखिल भारत की शान।

***

१६. परमार-पवार

जनम भयो अर्बुदगिरि पर
पवार जनम्यो अग्निकुंड ल
वर्ण भयो अग्निवंशी क्षत्रिय
मालव को भयो मालवाधिश् ।

पवार भयेव संस्कृत मा प्रमरः
बोलचाल मा भयेव परमार
पवार भयेव मालवी मा पुँवार
मराठी हिंदी मा भयेव पोवार पवार ।

झाड़ी पट्टी मा रहनेवाला झाडी पवार
भोयर पट्टी मा रहनेवाला भोयर-पवार
मालवा पट्टी मा रहनेवाला मालव-पँवार
या त् आय क्षेत्रीयता की पयचान ।

पोवार को अंग्रेजी उच्चारण पोंवार
तसोच भयव पवार को पंवार
बोलचाल मा जग मा गूंजे पवार
जसो फल एक पर कहे अमरुद, पेरु, जाम्ब।

प्रमार कहो या कहो परमार
पवार कहो या कहो पोवार
भोयर कहो या कहो भोयर पवार
डी.एन.ए. त सबको एकच आय ।

***

१७. आओ चलो साथ-साथ

डबका को मेंढ्क समजसे आपलो ला महाराजा
पानी आटेव डबका को, का लेसे मंग महानिंद्रा
बरसाद भर करसे टर टर, गरो फाड़ फाड़ कर
बाद मा रव्हसे पड़ेव बिल मा, अधमरेव बनकर ।

मधमासी को जग विशाल, रव्हसेत सब एक साथ
राजा रानी सेवक रक्षक, रव्हसेत सदा मिलजुलकर
मजला पर मजला बनाय महाल, जगसेत शहद पीयकर
उठसेत बससेत चलसेत फिरसेत, आपलो झुंड बनायकर ।

आमरी उत्पत्ति से एकच - माउंट आबु को अग्निकुंड की
आमरा कुलदेवता एकच- शिवशंकर ना माय गढ़काली
आमरो किरदार एकच - पयले युद्ध ना मंग खेति बाड़ी
समय क फेर न् बढाय देईस आमरी आपस मा दूरी ।

मुहन कसु - एकता मा से महाशक्ति मानो मोरी बात
बैनगंगा वर्धा, नर्मदा घाटी का पवार एकच नदी की धार
नही कोनी उंचो-नीचो, नहान-मोठा, सब सेती एक समान
आओ चलो साथ-साथ, करो समाज को सर्वांगिण विकास ।

***

१८. आमि पवार

आमि पवार इतिहास का रचनाकार
बनाया गौरवशाली भारतीय समाज
फैल्या सेजन देशभर कई कई प्रांत
हर पवार समुह पर दुनिया करे नाज।

पवार क हरदय मा जरसे क्रांति की मशाल
मुहन त दुनिया मा से पवार समाज की साख
बिक्रम सम्वत्सर कराये सम्राट बिक्रम की याद
भोजशाला मा गूंज उठे राजा भोज की आवाज।

उठो उठो तुमला पुकार रही से उषःकाल
रच देव तुमि अनखी वैभवशाली समाज
चलाओ कलम कम्पुटर को चक्र दिन रात
करो जग मा डिजिटल क्रांति को आगाज।

ज्ञान-विज्ञान कला कौशल मा बनो निपुन
शिक्षा व्यवसाय उद्योग मा बनो तुमि विपुल
भाषा साहित्य कला तंत्र को करो आगाज
बनाओ मेधावि प्रतिभा, बनो जगमा सरताज ।

***

१९. याद करो इतिहास

पवार मन मंदिर को आंगण मा
शंखनाद कर रही से महाकाल
जागो जागो महानिद्रा ला सोड़ो
क्षत्रिय धर्म निभावन होवो तय्यार।

तुमि पवार धार का, करो अतित याद
करिन कई शतक भारत पर राजपाट
भया महावीर महाकवी ना महाराज
विक्रम भोज जगदेव पर से जगला नाज ।

शक ला भगाय संवत्सर चलाय
विक्रमादित्य भयेव महान सम्राट
होतो वोको विद्वत नवरत्न दरबार
अज बी करे दुनिया कालीदास याद।

भोज राजा न बनाय राजधानी धार
पच्पन बरस वरी करिस वोन् राज
चलाय तलवार ना कलम एक साथ
करिस भोजशाला जगमा विख्यात।

याद करो महावीर जगदेव पवार
नगरधन गढ़चांदुर को बनेव महाराज
चढाय मायकाली कंकाली ला शिश
भयेव महादानी वीर मुहुन प्रख्यात।

उठो पवारो करो याद आपलो इतिहास
आव तुमि विक्रम भोज जगदेव की संतान
चलाओ कलम, करो कर्म, बनाओ किरदार
बन जाओ शक्ति, कर्म, धर्म की मिसाल।

***

२०. पवारच सताहा सेत खुद बामण

पवारच सताहा सेत खुद बामण
कर् सेत मनभावलका देव पूंजन
बिना पंडीत निपटसे बिह्या त्योहार सन
सब विधिविधान अन् ज्ञान सृजन ।

कई सदी बितेव दूर्गम देहात मा जीवन
पर धरम संस्कार चलत रह्या अखंड
सब देव देवीको से मालुम भजन
सब विधि विधान का ज्ञाता नही पड़ खंड ।....

पहले कर् सेत मंगल तिलक धारण
बादमा हथेली मा जल धर आचमन
मंग कर सेत गज-गणपती ला नमन
सब विधि-विधान का ज्ञाता स्वजन ...

सुरवात मा स्मरण इष्टदेव कुलगण
मंग विष्णु-शिव-गणेश, सूर्य, दुर्गा पूजन
गंगा यमुना गोदावरी, सरस्वती नर्मदा वंदन
गंध चंदन तुरसी पुष्प जल ना अक्षता अर्पण ....

अंत मा गाये आरती बजाये शंख
पुरो समर्पण ल् होसे ईश्वर स्तवन
दीप धूप पुष्प गंध संग करे प्रार्थना
पूंजा मा भूल चूक की मांगे क्षमायाचना ....

***

२१. सामाजिक ऋण

ए मोरो समाज मि एक अनु शुक्ष्म
तु सागर भव्य
सागर ल् फुटी अमृत धारा
देव भया अमर सारा
बनाय शेष नाग को ठिया
भगवान विष्णु सोये वऱ्या
चातुर्मास की महानिद्रा
मि प्यासो को प्यासा....

मि एक कण शुक्ष्म
तु पर्वतराज हिमालय
दुर्गा कर् से तपस्या
शिव करे योगा
डमरू क धून पर
नाचे गणेशा
उ विघ्नहर्ता करे धन वर्षा .....

ए मोरो समाज
तोरा सेत असंख्य उपकार
तोरो बिना मि निर्गुण निराकार
मोरो से अज अस्तित्व
यव तोरो से कर्तृत्व
तु ना रव्हतोस शिल्पकार
त मि आसु बन
बह जातो मंजधार.....

***

२२ वा मोरी माय होती

फाटक मा बजी रे बजी सायकलकी घंटी
सैराबैरा धावत-धावत आवत होती
लेय दफ्तर मोरो, हाथ मा आपलो
डोई पर हाथ फेरत-फेरत लेजात होती
वा मोरी माय होती - वा मोरी माय होती...

बसताच गिलास भर पानी देत होती
ड्रेस पट्टा काहाड हाथपाय धोवत होती
गरम-गरम रोटी तावापर सेक-सेक
लोनीसंग् पोटभर खानला देत होती
वा मोरी माय होती - वा मोरी माय होती...

तापल् होये हलाकान मोरो प्राण
धाय-धाय दवाई-पानी देत होती
दुख करन कमी, हाथपाय आंग चुरत होती
रात-रात भर नही सोवत होती
वा मोरी माय होती - वा मोरी माय होती...

सुट्टी होये कब् ना बेटा घर् आये कब्
दिवस-रात रोवत बाट देखत होती
चाकोली लाडु बनाय-बनाय थकत नोहती
माच का आम्बा धोय-धोय चोखन देत होती
वा मोरी माय होती - वा मोरी माय होती.

***

२३. माय नही कव्ह कभी .....

माय नही कव्ह कभी 'बेटा खुश ठेवजो मोला'
माय त् कसे हरदम 'बेटा खुश रव्ह तु सदा'।

माय नही कव्ह कभी 'बेटा मोरो दुख बाटले जरा'
माय त कसे 'बेटा दुख ना रहे तोरो जीवन मा'।

माय नही कव्ह कभी 'बेटा काहे भूखी ठेयेस मोला'
माय त कसे ' बेटा भगवान दे धन दौलत तोला '।

माय नही कव्ह कभी 'अज उपासीच रवनो पड़े मोला'
माय त् कसे 'बेटा नाहाय काहि कमी खान तोला'।

माय ला नही दिस्यो बेटा घरमा त कसे 'घर खाली से'
माय न् देखिस बेटाला त कसे 'घर समृद्धशाली से'।

***

२४. माय मोरी काशी

माहेर मोरी सरी, घर मोरी गरसोली
दादाजी मोरो किसन, माय मोरी रुकमिनी ।१।

माय मोरी काशी, बाप मोरो पंढरी
मंग कायला करू, मि तिरथ की फेरी ।२।

कासीबाई कसे, तोला लगेव माहेर को रोग
बाप मोरो आम्बा, त माय अंजीर लगे गोड़ ।३।

नोको कहु कासी बाई, मोला माहेर येड़ी
जनम भयेव वहां, कटे यहां जनम बेड़ी ।४।

माय-माय करु, माय जंगल की चिड़िया
चिड़िया गई उड़कन, मि भई निर्धन ।५।

माय - माय करु, माय साखर की गोनी
माय को नाव लेता, जीभ पर शहद पड़ी ।६।

माय-माय करु, माय की माया नही जगमा
माय-माय कव्हत, देव-देवी झुरसेत सरगमा ।७।

माय-माय करु, तोंडमा माय भरीसे केतरी
गंगा मा भगिरथी भरीसे, गा बाई जेतरी ।८।

माय-माय करु, माय सोनो की द्वारका
जहाज मोरो बुड़ेव, केतरी मारू मि हाका ।९।

***

२५. मायघर की आंबिल

नही पायजे महाल-माड़ी
नही पायजे सोनो-चांदी
मायघर की आंबिल की भूरवी
बनाय ठेवो भाऊ-भौजी सत्ता एतरी ।

जमीन जायजाद तुमला मुबारक
भगवान दे फसल छप्पर फाड़कन
मायघर की आंबिल की भूरवी
बनाय ठेवो भाऊ-भौजी सत्ता एतरी ।

नही पायजे गाय-भस आंदन की
नही पायजे धन-दौलत की गठरी
मायघर की आम्बिल की भूरवी
बनाय ठेवो भाऊ-भौजी सत्ता एतरी ।

नोको घडाओ कड़ा पाटली बंगडी
नोको पेहराओ नवो लुगड़ा -आंगी
मायघर की आम्बिल की भूरवी
बनाय ठेवो भाऊ-भौजी सत्ता एतरी ।

***

२६. मायघर की याद मा

मायघर की कनकी खंडा चटनी
लगे बाई मोला अमृतसो गोड़
पाचतारा होटल को पंचरंगी जेवन
लगे बाई मोला कडू बेचव ।

मायघर की वा एटलस सायकल
याद आवसे अज बी होती अनमोल
नोको बसाओ मोला एंपाला मोटर
का करे वा रेहका की सर ।

माय को घर-आंगण बाड़ी मोठी
मोठांग मरद-माना नहानांग नारी
मोठांग महादेव बावला नहानांग बिंद्राबन
संस्कार संस्कृति ल भरेव से माहेर ।

गुंड मथनी मा पानी बाजुमा कांडी
उखर-मुसर जातो सील पाटा हांडी
जगरा मा होये दुध गरम, सिको पर दही
मिक्सी फ्रिज ओवन का करेत बराबरी?

***

२७. राखवी आय प्रेम बंधन

भाई की बाट बहिन देरवत रही
डोरा का आसू दिवसभर पोसत रही।

भाई आहे अज बहिन ला होतो भरूसा
कामकाज सोड आहे होती या आशा।

भाईसाठी बहिन दिवसभर झुरत रही
हाथ मा धर राखवी बाट देरवत रही ।

द्रोपदी आपल् किसन क याद मा भूरवी
सूरज ढलेव दीवो की बात बुझ गई ।

राखवी सिरफ दोरा नही आय प्रेम बंधन
भाईसाठी बहिन क हरदय को स्पंदन।

नही आय सकेव, सुटी रहे बस, रेलगाडी
भगवान देय दे वोला लम्बी उमर मोरी।

***

२८ पापा ना आओ ठेसन

आई बेटी गर घर् त खुशीला पारावार नही
पापा ला दवाई पानी लेनकी रव्ह फुर्सत नही
माय मंघ यव बनाव उ बनाव की रव्हसे तुतारी
यलाच कसेत बाप-बेटी की अदृष्य माया न्यारी ।

सामान आन् से घर पापा याद कर-कर कन
आनसे पापा मिठाई का डब्बा याद कर-कर
थमाय देसे हाथ मा मोरो क्रेडीत कार्ड हासत
कसे जाय बजार लेन कपरा आपलो मनपंसद।

जानको बेरा चिंता पापाला मोरो टिफीन की
भरपुर नास्तापानी रवाजो संग मा लेजान की
आवताच गाड़ी पापाला होसे घाई बर्थ धरन की
होय जासे पापा तब् नहान् टुरु पोटु वानी ।

सीट रवाल्या पापाको सुटकेश भरनो करनो
टीफीन नास्ता-पानी को झोरा वऱ्या ठेवनो
पल-पल सामान टिकट पर्ससाठी सांगनो
मोलाच आवसे पापा कन देरव खुप रोवनो ।

पापा, लुकाव् सेव तुमि आसु, पलकइन मा
मुस्कराव् सेव मनकर मोठो से मालुम मोला
पापा करू बिनंती ना आओ सोडन रेलगाडी परा
ना आओ पापा ठेसन रोवन ना रोवावन मोला ।

***

२९. बेटा-बेटी

बेटा जनमे पर बाटे पेढा
बेटी जनमे पर बाटे बर्फी
त पुछे बेटी-सांगो पप्पा मम्मी
बेटा बेटी मा यव भेद कसो जी!

बेटा ला फॅशन की छूट पुरी
बेटी क आड़ आये आपली संस्कृति
त पुछे बेटी सांगो पप्पा मम्मी
बेटा बेटी मा यव भेद कसो जी!

बेटा क सिर पर नही चुटी
बेटी ला कहे ठेव लम्बी बेनी
त पुछे बेटी-सांगो पप्पा मम्मी
बेटा-बेटी मा यव बेध कसो जी!

बेटा को शिक्षा ला नही सीमा
बेटी ला कहे ठेव लम्बी बेनी
त पुछे बेटी-सांगो पप्पा मम्मी
बेटा-बेटी मा यव भेद कसो जी!

बेटा को शिक्षा ला नही सीमा
बेटी ला कहे भई बिह्या की बेरा
त पुछे बेटी सांगो पप्पा मम्मी
बेटा-बेटी मा यव भेद कसो जी!

बेटा साठी ढुंडे नोकरी जगभर
बेटी ला कहे तु बिह्यावरी घर बस
त पुछे बेटी - सांगो पप्पा मम्मी
बेटा-बेटी मा यव भेद कसो जी!
***

३०. रोय रोय सुख गया डोरा

सांगु कसी मि तुमला
नही आव् गाव् मोरो टुरा
सुट्टी कसे नही भेट् मोला
बाट देखवत, सुख गया डोरा।

बाप ला लकवा को मार
माय ला कमर को वात
कोनी नही यहां पानी देनला
बाट देखवत सुख गया डोरा।

फोटो तुमरी देखवत रव्हनो
याद करनो ना हासत रव्हनो
तुमरो साठी देवला हाथ जोडनो
सुख स्वस्थ समृद्धि की मांग करनो ।

नाती-पोती भया रहेत मोठा
इस्कुल मा जात रहेत आता
बस मरनो पयले देखवन की आशा
मंग लिजायले सरग मा भगवंता ।

***

३१. नवती-नवाड़ी बोहू

बोहू नवती-नवाड़ी आई सासुरवाड़ी
रव्हसे दिवसभर कामकाज मा गुथी
नही फुट् मुरव ल शबद करे काही
बनी रव्हसे बोहू घर मा एकल कोंड़ी।

दबावसे सुरव-दुरव आपल् मन को मनमा
ठेवसे उनला बंद आपल् पलक क कैद मा
नही बहाव् अंतर्मन की आपली कबी वेदना
हासनो-रोवनो जसो मालमुच नही वोला।

सासु कसे का तु असी मुकी बनकर रव्हजो
का तु आपला दुरव दर्द मन का नही बाटजो
नही रिवल जो कमलवानी मन हल्को करजो
त एक दिवस तू अवघान मा चली जाजो।

आज्-सासु समजावत रव्हसे बोहू ला
गुथ नवरा संग पहले घट्ट रिस्ता नाता
देवर-देवरानी संग बांध प्रेम को धागा
ना हासत बोलत खुश रव्ह तु सदा।

***

३२. बोहु सेर त सासु सव्वा सेर

बोहू कसे - सासुबाई जानको से मोला माहेर्
मोरी भौजी से रवरा खुपच बिमार् ।
सासु कसे - पयले बाई करूला को बीज पेर्
मंग चली जाय आपलो माहेर् ।
बोहू कसे - सासुबाई करूला को बीज भयेव पेरकर्
आता पठाय देव मोला माहेर् ।
सासु कसे - पयले बाई करूला को बेला दे आवन्
मंग चली जाय आपलो माहेर् ।
बोहू कसे - सासुबाई करुला को बेला आयेव हाथभर
आता पठाय् देव मोला माहेर्।
सासु कसे - पयले बाई करुला ला फूल दे आवन्
मंग चली जाय आपलो माहेर ।
बोहू कसे - सासुबाई करूला ला फुल आया जमकर
आता पठाय देव मोला माहेर।
सासु कसे - पयले बाई करुला ला लगन दे फल्
मंग चली जाय आपलो माहेर् ।
बोहू कसे सासुबाई करूला ला करूला लग्या ढगभर
आता पठाय देव मोला माहेर् ।
सासु कसे - पयले बाई करूला की स्याक ठेव बनायकर्
मंग चली जाय आपलो माहेर् ।
बोहु कसे - सासुबाई करूला की स्याक भई बनायकर्
आता पठाय देव् मोला माहेर।
खुब भया आतावरि बाहाना एक पर एक
आता आब्बच जानको से मोला माहेर ।

***

३३. नारी तोरा नाव अनेक

मानुस ला मानुस बनावसे **विद्या**
मानुस ला अमीर बनावसे **लक्ष्मी**
सुख साठी घरमा पायजे **शांति**
पुंजा करो हर रोज **काली दुर्गा**।

दिनको उजारो संग आवसे **उषा**
दिनको बुड़ता बुड़ता आवसे **संध्या**
सोवन साठी आवसे धावत **निशा**
सपना मा दिससे **गवरा तुरसा** ।

सकारी सकारी जपो मंत्र **माला**
मंग पढो मन लगाय कन **गीता**
करो **आरती** पूंजा **अर्चना वंदना**
लगाओ **श्रद्धा** ल **ज्योति चंदना** ।

संग ठेवो सदा **प्रेमा, स्नेहा, मेघा**
गंध लगाओ **चमेली रातरानी कुंदा**
जपो गुण सारा **करूणा ममता क्षमा**
त जीवन मा मिले **जया विजया माया** ।

निराशा संग आवसे **आशा किरण**
अंधश्रद्धा संगच फिर् से **श्रद्धा सुमन**
ताईच बनसे बादमा **माई माउली**
नारी बिना नही नार **समृद्धि** ।

***

३४. एक दुजा को बंधन

लाड-प्यार करसेजन एक-दुजा
मन मा बसाय ठेया एक-दुजा
मर्जी निभावन पुढ् सदा एक-दुजा
दुख-सुख मा संग्-संग् एक-दुजा ......

पर मानुस की एक खुदगर्जी बी होसे
पैसा कमावन ड्युटी जानो पड़से
वोला घरदार चलावनो पड़से
सूरज-चांद ला बिछड़ जानो पड़से ...

सय-सय, आठ-आठ घंटा को दुरावा
उजारो जाय अंधारो कारोख पड़ता
नदी-समुंदर को मिलन होय जासे
दुही की भूख-तहान सब मिट जासे ....

एलाच कसेत नवरा-बायको को बंधन
दुय शरीर आत्मा को अटुट मिलन
मालुम नही पड़ जींदगी को यव सफर
सात जनम को विधाता को बनायो सम्बंध ....

***

३५. आयेव जवाई

आयेव जवाई बोवा गाव्
लेजाव खार खंदन खेत्
धरो पेंडी बांधन संग्
मारो पेंडी फेकन हाक् ।

धरो जवाई बोवा नांगर्
फिराओ सावकास दतार्
मारो पठ्ठा जरा देखकन्
बनाओ चिखल पानी महिन् ।

धरो जवाई बोवा परा की पात्
जोरल्, चलाओ आपलो हाथ्
बरसात आईत् होये मोठो घात्
सिदोरी की देखो नोको बाट् ।

जवाई बोवा न् खुब करिस काम्
जवाई बोवा न बहाईस खुब घाम्
दुय किलो को कोंबडा रांध् आता
दूर करो जवाई बोवा की थकान।

***

३६. कसा गया दिवस

आमि माय क कोरालक कब् जमीन पर उतऱ्या
जमीन पर गलंडता-गलंडता कब् रांगन बस्या
रांगता-रांगता कब् चलन लग्या
चलता-चलता कब् धावन लग्या
कसा गया दिवस, नही लगेव पता !

चलावन लग्या कब् गाडोरली आंगण मा
भगावन लग्या कब् सायकल गली-गोद्री मा
जान लग्या कब् कॉलेज मोटर सायकल पर
चल्या कब् आफिस दफ्तर मोटर-कार लक
कसा गया दिवस, नही लगेव पता !

गाव को माती कुहिट को घर छोड़कर
रव्हन गया कब् शहर क किराया घर पर
किराया घर सोड़ कब रव्हन गया क्वार्टर मा
क्वार्टर लक कब् रव्हन आया आपलो घर मा
कसा गया दिवस, नही लगेव पता !

आमरा टुरुपोटु भया कब् मोठा
आपल् पाय पर भया कब् उभा
आमि बन गया कब् नातुपोतुवाला
डोई का कारा केस कब् भया भुरा
कसा गया दिवस, नही लगेव पता !

***

३७. कसो रूसु मि कोणी पर

कसो रूसु मि कोणी पर
प्रेम को धागा दोरा लक
गाठ मजबुत आपली बंधी से
दिल लक दिल आपलो जुडी से ।

कसो रूसु मि कोणी पर
आधार तुमरो हमेशा भेटी से
संगत लक तुमरो हिम्मत आई से
जीवन मा मोला सफलता मिली से ।

कसो रूसु मि कोणी पर
सद्भावना हमेशा बरसी से
संकट का पहाड़ खस गया तब्
शक्ति तुमरि साथ मोरो रही से ।

कसो रूसु मि कोणी पर
तुमरो कारण पयचान मोरी से
लढ़े सिपाई नाव सरदार को
मुहुन कृष्ण नही, अर्जुन युद्ध जीती से ।

***

३८. हासत रहो

नान्या को खद्-खद् हासनो
करसे सबजन को मन प्रसन्न
पर नान्या भयेव आता मोठो
करसे हमेशा मोठमोठा प्रश्न ।

तरुनाई आनसे डोई पर जिम्मेदारी
लदेव रव्हसे घर ओझोल् गधावानी
मालुम नही कहां खोय जासे हासी
चेहरा पर झलकसे हरदम उदासी ।

जसी जसी बढन लगसे आपली उमर
मानुस होय जासे आपलोसिनच बेखबर
करत रव्हसे कुटुम्बना टुरूपोटु की फिकर
गृहस्थी मा फसजासे घाना को बैल बनकर ।

भूल जासे पहले आपुन बी हासत होता
चेहरा पर चम-चम लालिमा फासत होता
आता हासन को मुहुन मानुस हाससे सदा
काहेका शिष्टाचार निभावनो पड़से वोला।

मन करसे फुल्हिन वानी हासत रहो
धकधकी को जीवन मा मुस्कराता रहो
करो नोको कबी जीवन निराश आपलो
नान्या बन खिलखिलाय हासत रहो ।

***

३९. बरसाद ल घडु मि तोरो बिसरो

तोरो साठी अज सिरफ
बरसाद ल घडु मि बिसरो....
नहान-नहान बुंदइनको
पट्टा बांधसु कमरमा ....
टपोरा-टपोरा थेंब बेचकर
डोल टाकसु कानमा ....
बरन धार ला धरकन
सरी टाकसू गरोमा....
हिवरोपिवरो गवतका
कंगन चढाऊ हाथमा ....
टप-टप पानी की आवाज
भरदू तोरो पायलमा ...
चमचमाती बिजली धरकन
तोरो चेहरा बनाऊ चंद्रमा ....
कारा-कारा ढग ओढ़कन
काजर भरदेसु डोरामा ....
सातरंगी धनुष बाण
चढाऊ तोरो चेहरामा ....
हवा-तुफान को झोकाल्
उड़ायदू तोरो पदरला ....
माती को अत्तरल्
महकाऊ तोरो आंगला ....
सावन का सुंदर फूल
शोभे तोरो जुड़ामा ....
नाच नाचे राधा-किसन
झुमझुमकर बरसादमा ....

***

४०. सावन की मज्या

सकारी-सकारी आये रिमझिम बरखवा
जित् देखो उत् हिरवो-हिरवो गालिचा
फिरनो से मोला बिना चप्पल जूता
लेनदेव मोला दिलभर सावन की मज्या .....

पानीच पानी जमा भयेव आंगण मा
फुदक-फुदक चलनो मा आवसे मज्या
डोईपर नाहाय ओढनो मोला रे मोऱ्या
लेनदेव मोला दिलभर सावन की मज्या .....

कभी तपन कभी बदली करसे लुकाछिपी
बादर मा चमकसे धनुष बाण कभी बी
मौसम सुहानो कोन बसे भला घर मा
लेनदेव मोला दिलभर सावन की मज्या .....

मेंढक की टर-टर संगीत गूंजसे रात मा
कीड़ा-माकुड़ा घर ना जुगनु चमके बाहेरा
मन मोरा रंग गयो सावन को रंग मा
लेन-देव मोला दिलभर सावन की मज्या .....

***

४१. गाव को पोरा

नाटी नाटी भूरनाटी
देखो बईल की सिंग-सिंगोटी ...

आठ खड़ा नौ धारा
बईल पड़ेव सिंग का भारा ...

अस्सी मन को मन पुड़ा
माला-मनका को हुड़ा...

घोलर घंटी झुल ल् सज्या
सिंग पर बेगड़ माथा पर बासिंग चढ्या ...

परसाद साखर सोजी
आम्बा तोरन फुल बेलपाती...

बईल भया तोरण खाल्या उभा
आनो आरती करो जी पूंजा...

बजेव सिंग डफरी को बाजा
बईल सुट्या भरा-भर मुंड़ा ...

***

४२. बैल महादेव को नंदी

बैल-बैल, भाऊ नोको कहो
बैल, भाऊ महादेव को नंदी
बैल-बैल भाऊ नोको कहो
बैल, खेती, बाडी को धनी अनादी ....

बैल श्रमजीवी बैल कर्मजीवी
बैल कष्टकरी मानुस पोटभरी
बैल किरसान का देवदैवत
बैल भूमिपर मुरत से इश्वरी ...

पाठ पर झुल ना सिंग पर झिल्ली
गरो मा कवडीमाला ना घोरल घंटी
डोई पर बासींग ना तुर्रा रंगी
नवी बेसन कासरो ना माथापर बिंदी ....

सजधज चली बैलजोडी तोरण खाल्या
पोरा को उत्सव मा लोक जम्या सारा
पुजापाठ आरती ना बजे डफरी बासुरी
तुटी तोरण ना सब बैलजोडी मुंडा छुटी....

पहिलो दिवस खांदापर तेल-हरदी
दुसरो दिवस पाय धोय टिका पुंजी
भेटसे पाहुनचार पुरण बड़ा सुवारी
दुय दिवस कर् सेत बैल विश्रांति ....

बैल धरतीपुत्र देवतुल्य शिवभक्त
बैल आजीवन समर्पित किरसान मित्र
बैल को खुन-पसिना उगाये अन्न
बैल लाभ शुभ समृद्धि को बोधचिन्ह ....

***

४३. कोजागिरी

कोजागिरी को रात खिलेव चांद पुरो
फैलावसे शुभ्र शितल प्रकाश मनोहर
लगसे बरस रही से बरफ आकाश लक
धरती बन गई बर्फिली मान-सरोवर।

कोजागिरी की रात भरसे मन मा स्नेह
चांदीसरिखी रोशनी करसे मन प्रसन्न
पुनवा को चांद बरसावसे अमृत धारा
धरती क जिव जंतु ला देन अमरता।

वाग्देवी क स्वागत मा चांद से व्याकुल
आवन की बाट देख रही से चातक बनकर
चांद की प्रकाश किरण पडी भूमंडल पर
धून पर नाच रह्या सेत तारा गगन पर।

चांद कोजागिरी क रात मा बिखर् से प्रकाश
सजाय देसे मानुस को दिव्य गुणलक मन
करावसे अन्तरात्मा मा पवित्रता को दर्शन
कर देसे मानुस जीवन प्रकाशवान शुभ्रतम ।

कोजागिरी क शुभ्र स्वच्छ प्रकाश मा राती
लछमी आवसे घर् वाहन पर होय सवारी
कोन-कोन जाग रही से देखसे झाक कर
जो रव्हसेत जागत, धन बरसावसे उन पर ।

***

४४. दिवारी

राम लखन अना जानकी
कर बनवास की सजा पुरी
लौट्या जब् अयोध्या नगरी
जनता न मनाईस दिवारी।

पाच पांडव अना द्रौपदी
कर बनवास सजा पुरी
लौट्या जब् हस्तिनापुरी
घर घर जगमगाई रोशनी ।

कृष्ण न मारिस नरकासुर
जनता भई भारी हरषित
कैद ल हजारो भया मुक्त
घरघर भयो आनंद खुप।

दैत्य राजा बली शक्तिबीर
देख देवि-देवता भया भयभीत
वामण न पठाईस पातालघर
दिवारीला आये बलिराजा याद।

भर्तुहरी बनेव बैरागी
विक्रम ला भेटी गादी
जनता खुशी ल् नाची
घरघर जली दीपजोति।

***

४५. किरसान की दिवारी

धान की फसल खेत मा उभी
कटाई चुरनी की चिंता लगी
खिसा मोरा खाली खाली
कसी मनाऊ मि दिवारी ।

घर कसे रंग बिरंगी मोला सजाओ
दरवाजा खिरकी कसेत पेंट लगाओ
खिसा मोरा खाली खाली
कसी मनाऊ मि दिवारी ।

बिना तेल की खासेजन स्याक
बिना घिव को डटावसेजन भात
खिसा मोरा खाली खाली
कसी मनाऊ मि दिवारी ।

टुरुपोटु देखसेत बाट बाँब पटाखा
दंड्यार वाला मांगसेत बम धमाका
खिसा मोरा खाली खाली
कसी मनाऊ मि दिवारी ।

टवरी साठी तेल कहां ल आनु
घरभर दिवा कसा जराऊ
खिसा मोरा खाली खाली
कसी मनाऊ मि दिवारी ।

***

४६. 'दिवा जराओ आंजुर मा'

चलो चलो मनाओ दिवारी
चार दिवा धरो आंजुर मा
पयलो ठेवो मन मंदिर मा
दुसरो ठेवो बेसकड मा।

तिसरो ठेवो घर आंगन मा
उजारो पडे मोठांग मांडो मा
चौथो ठेवो असो ठिकान पर
नव चैतन्य आये जीवन मा ।।

मन मंदिर उजरे अंधारो मिटे
सद्बुद्धि को अंकुर फले फुले
सदाचार की बाट कदम धरे
घर बाहेर समृद्धि की धारा बहे।

दिवो ले चल असत्य ल सत्यकन
दिवो ले चल अंधारो ल उजारोकन
दिवो ले चल अधर्म ल धर्म कन
दिवो ले चल अंधश्रद्धा मिटावन ।

***

४७. जरावो ज्ञान का दिवा

जमीन की तहान बुझ्से
जब् बादर ल पानी बरस् से
दुखी मन खुश होय जासे
जब् प्रेम की बरसाद होसे.....

सुरज जब् होय जासे अस्त
अंधारो फैलावसे आपला पंख
तब् दीपशिखा ल् जन्मसे जोत
त अंधारो नही मालुम कहां जासे.....

मानुस जग्से अज्ञानवास मा
लोभ माया मत्सर को जाल मा
तब् दिल दिमाग मा जोत जरसे
मानवता को ज्ञान ल् मन भर्से....

धनतेरस ला लुटाये कुबेर खजाना
लक्ष्मीपूजन ला लक्ष्मी करे धन वर्षा
बलिप्रतिपदा ला याद करो बली राजा
दिवारी ला जराओ खुप ज्ञान का दीवा ।।

***

४८. होरी

फाग को आयो मास
परसाड़ी भई लाल ।
फाग को आयो मास
आनिस बसंत बहार ।।

फाग को आयो मास
रंग-बिरंगी मस्ती कि बहार ।
होरी पूनवा की रात
जरे आगमा अहंकार ।।

पाड़वा की भई सकार
एक-दुजोला लगावो गुलाल ।
जुना गिला शिकवा भूल
गरो ल् गरो मिलाव ।।

रंग खेले श्याम संग राधा
मोहन संग खेले रंग मीरा ।
पिचकारी को रंग मा
उड़ाओ प्रेम की धारा ।।

***

४९. नवो जमानो की पाय लगनी ।

पोवार करसेत पाय लगनी आता हॉल मा
नही आव् पानी आता पाय धोवन् गंगार मा
पवारी पाय लगनी होसे आता सिंहासन पर
नही आव् आता टुरी डोई पर पल्लु ओढ़कर ।

टुरा-टुरी की पाय लगनी होसे आता एकसाथ
नाहाय कोनीला फुरसत आवन की बार-बार
कोरो ड्रेस, बिसरो नानो ना देसेत फल-फलावर
दुही पक्ष का पाहुना पाय लग्सेत उनका भराभर ।

टुरा-टुरी बस्सेत जोड़ालक सिमटकर
एक-दुजो को गरोमा टाकसेत हार हासत
दुहीजन को हाथलक छुरी चलसे केक पर
एक-दुजो ला खवासेत केक तुकड़ा तोंड भर।

मंग चलसे गृप फोटो ना विडिओ रंगी सेशन
नवो जोड़ा बिक देसे सब लाजसरम
यहां नही कोनिला मान मर्यादा की पर्वा
पवार संस्कृति संस्कार को देखो नाच नंगा।

***

५०. पवारी आधुनिक बिह्या

पवारी मा बिह्या होय रह्या सेत मॉडर्न
बारा डेरी को हिरवो मांडो भयो गायब
मंडपाच्छादन बी भयेव पत्रिका मा मायनस
जवाई नही दिस् लगावता मांडो ला तोरण ॥१॥

गाव की गई मातामाय ना गयो महाबीर
हरदी नारेल ल भया गाव का देव वंचित
कुलदेव पुरखा जागसेत घरदार आवार
देवघर क चवरी टवरी पर मकडी को जार ॥२॥

पवारी नेंग-दस्तुर भया आता आऊट
सिलिमा टीवी को नजारा होसे रिपिट
गोधुली बेला आवसे अर्धरातरी पहाट
नाचसेत सड़कपर डीजे संग नरनारी ॥३॥

नवरदेव को सिर फेटा नवरी पर बोंगडी
कसेत आबच पारलर लक सजकर आई
सऱ्या मंगलाष्टक ना आई माल्यार्पण बेरा
नवरदेव चंघ्यो दुय फुट वऱ्या त नवरी चार ॥४॥

***

५१. पितर चरण मा

पितर चरण मा करु नमन
मन मा धरू तुमरो ध्यान
ठेवो आमरोपर तुमरी कृपा
सिर पर ठेवो वरद् हाथ .....

यव कुटुम्ब आय तुमरो
तुमरोच आय यव परिवार
तुमरो आशिर्वाद रहे तबच
फले फुले आमरो संसार.....

भूल-चुक आमरी माफ करो
करो दिल खोल क्षमा दान
यश वैभव लक घर भरो
संकट विघ्न कर देव पार .....

तुमि आमरो सदा हृदय मा
तुमरी आमि निज संतान
तुमरो खून बोहसे रगरग मा
तुमरो नाव लक आमरी शान .....

तुमरो कर्ज आमरो पर सदा
जीवन भर नही चुकाये जाय
सात जनम बी पडेत कम
वेद पुराण ग्रंथ करे बखान .....

हर दिन हर पल ठेवो नजर
डोई पर आमरो ठेवो हाथ
वंशबेल अखंड बढत रहो
देत रहो सदा यव वरदान ......

स्वीकार करो जल तर्पण
करो ग्रहण भोजव्यंजन
पुरो भक्तिभावल करू वंदन
चरण मा तुमरो श्रद्धांजली अर्पण.....

***

५२. देख नजारा भयो उदास

नही खऱ्यान नही मेढ
नही भारा नही पुंजना
नही मोड़ा नही दावन
देख नजारा मि भयो उदास .....

नही आकोड़ी नही हेरफेर
नही चुरनो करन गाडो बेलन
नही सुपड़ा नही कोनी उड़ावन
देख नजारा मि भयो उदास....

धान की रास रव्हसे खेत मा
भुसारी वहांच आवसे मोजन ला
खाली खोका घर का कंडगी ढोला
देख नजारा मि भयो उदास.....

बांधी मा नही लाखोरी अलसी चना
धुरा पार पर नही तीर तोर दाना
भाजी-आजी को नही कहीं निशाना
देख नजारा मि भयो उदास .....

***

५३. किरसान

सोय जासेत बिचारा उबर-धोबर धुरो-पार पर
गवत-काड़ी ना कचरा तनिस बिछाय कर
जीवन बितावसेत अर्धो नंगो कपरा पेहरकर
अना पेट भरसेत दुनिया को, अर्धो पेट रयकन ।

नही थकत गोटाड़ी मा नांगर बखर चलायकन
अख्वा दिवस चिखल-पानी मा चल-फिरकन
तहान बुझावसेत धोडी-बोड़ी को पानी पियकन
भूख भगावसेत रुखी सुखी सिदोरी खायकन ।।

नही रव्हत पैसा टुरूपोटुला वर्ह्यावरी सिकावन
नही रव्हत पैसा बायकोला अस्पताल भर्ति करन
नही रव्हत पैसा-कौरी सावकार को कर्जा चुकावन
नही करत मंध् पुढ़ को बिचार फासी परा चंघन ।।

वोला कव्हसेत किरसान जो रोवसे हरदम
वोला कव्हसेत अन्नदाता जो तडपसे हरदम
वोला कव्हसेत बलीराजा जो रव्हसे फटे हाल
वोला कव्हसेत देश की आत्मा 'जय जय किसान' ।।

***

५४. जुनो जमानो मा...

नातिन पुस् से आपल् आजा ला
बाबाजी पयले क जमानो मा ...
तुमि लोक रव्हत होतात सांगो कसा
ना घर पक्का ना डाम्बर का रस्ता।

ना सुपर मार्केट ना मोठा मोठा मॉल
ना मोटर, सायकल, कार, बस, विमान
ना कम्पुटर, कॅलकुलेटर, मोबाईल,
ना एसी ना कुलर, फॅन, फ्रिज, ओवन।

आजा सांग से आपल् नातिन ला -
बेटी, का नही होतो आमर् जुनो जमानो मा
आमि रव्हत होता माती कवेलु क मकान मा
गाव-गाव होता मोहऱ्यान अमराई बगिचा रान ।

सब अनाज तेल भाजी होत होती खेती-बाड़ी मा
भेटत होतो किराणा कपरालत्ता आठवडी बजार मा
फिरत होता घोडा पर ना बैल, घोड़ा की खासर मा
घर होता थंडा, बिजना फेकत हवा, जप लग् गाढ ।।

***

५५. पयले को जमानो

पयले को जमानो
होतो खुपच चांगलो
होता सादासुदा घर
ना होता सादासुदा लोक ।

नही होता अंगला बंगला
नही होता बिजली का खंबा
नही होता कुलर पंखा
नही होता एसी का डब्बा ।

घर होता माती गोटा का बन्या
पर लोक होता प्रेम क दोरा ल बंध्या
रहन-सहन होती बेढ़ंगी
पर होती मर्यादा मा बंधी ।

घर मा सगा का ना दुजा का
नोहतो आपस मा दुजा भाव
सुख मा का ना दुख मा का
सब होता रव्हत एकजुट बनाय ।

पाहुना बेसकर मा दिसताच
सब धावत राम-राम लेन ला
पाय धोवन पानी पिन्हो आनत
ना हासत-हासत करत सन्मान।

नोहोतो फोन, मोबाईल वोनो जमानो मा
तरी एक-दुसरोंक़ी खबर भेट् कानोकान
रिस्तेदारी मा जब आव् संकट की घड़ी
आव देखत ना ताव, सबका सब धावती ।

***

५६. आता मि राम कहां लक आनू!

कोनतो रावन की भूजा काटू
कोनतो लंका ला आग लगाऊ
घर-घर रावण पग पग लंका
आता मि राम कहां लक आनू!

नफरत घर-घर मा से फैली
जन-जन मा से भरी पापीवृत्ती
लक्ष्मन सीता ला कहां ल ढुंडू
आता मि राम कहां लक आनू!

बेटा काहड् से बाप ला बाहेर
बोहू करसे चट सासुला बेघर
कलयुग मा मर्यादा भई गायब
आता मि राम कहां लक आनू!

अज गाय भय गई हिंदू मय्या
ना बकरा भय गयेव मुल्ला अल्ला
जहां देखो वहां हल्ला गुल्ला
आता मि राम कहां लक आनू!

***

५७. चलो उठो भई झुंझुरका

चलो उठो जागो भई झुंझुरका
पानी पीव दुय घुट तांब्याका
चल काहार बाहर बैल-खाट्या
धरो खराटा करो साफ कोठा-गोठा ।

चलो उठो जागो भई झुंझुरका
उठो बाई-भाऊ घर भर का
धरो बोहरी झाड़ो घर-आंगण ला
सड़ा-सारवन को लगो कामला ।

चलो उठो जागो भई झुंझुरका
सूरज निंघन की देखो ना बाट
मुर्रा-पोहा भेली मुठ भर फाको
दुय घुट गरम चाहा का घिटको।

चलो उठो जागो भई झुंझुरका
जल्दी जल्दी खात की डाली जुपो
नांगर बखर पर फास चंघाओ
गायकी भसकी ला दुध दोहन सांगो ।

चलो उठो जागो भई झुंझुरका
गरम करो दुध पेटाओ चुल्हो
रई काढो जल्दी घुसरन चढावो
लोनी काढो मही करची मा टाको ।

***

५८. तब् मोला गुस्सा आवसे...

जब् कोनी उसिरा सोयकन उठ् से
बिना धोये तोंड चाहा बिस्तरपर पिव् से
तंबाखु गुपसे ना इत्-उत् पिचपिच थुक् से
तब् मंग मोला ओकी खुब गुस्सा आव् से ।

जब् कोनी इत्-उत् अठल-मठल कर् से
एला-वोला फुकट्को स्याहनपन सांग् से
बिना धोये आंग-पाय खानपान ला मांग् से
तब् मंग मोला ओकी खुब गुस्सा आवसे ।

घरको काम-धाम सोर गांव मा मांदी कर् से
नेतागिरी करत दिन-रात भूतवानी फिर् से
आपलो पऱ्हा-पानी सोड़ वोट मांगन जासे
तब् मंग मोला ओकी खुब गुस्सा आव् से ।

घर मा नाहाय खानला नोट उडावसे दारू मा
जमीन बिक से हर साल कसे मि मालदार
आपल् घरदार टुरू पोटु को नही कर् ख्याल
तब् मंग मोला ओकी खुब गुस्सा आवसे ।

***

५९. बेगरचार

दुही बेटा होता राम-लखन जसा
भयो बिह्या रंग्या बोहुक् रंग मा
स्वार्थ का फुट्या अंकुर दिल मा
दिवार भई उभी दुही क बीच मा.....

दुही कसेत करो जल्दी
बेगरचार की आई घड़ी
बाटो जमीन अर्धी-अर्धी
घर को बीच टाको परदी....

अर्धो-अर्धो करो सब बिसरो
करो घर खेती को सामान अर्धो
करो गाय बैल बी अर्धा-अर्धा
बर्तन-भांडा बाटो सब सारखा.....

सरी का करो दुय तुकड़ा
एक देव मोला अना दुसरो वोला
माय की पाटली देव एकला
अना चिल्लर बिसरो दुसरो ला.......

माय कसे जनम देयेव बेटा मि तुमला
भयात मोठा करदेव मोरा दुय टुकड़ा
बाप कसे मि बि भयेव आता बुरगा
गाड़देव मोला जितोच जमीन मा....

***

६०. कोन तेरवी रोटी खाये?

नवरा को वियोग मा विधवा रोये
कपार कुकु भांग सिंदुर झट मिट जाये
जीवन नय्या अंधारो मा पुरी डुब जाये
मंग समाज वहां का तेरवी रोटी खाये?

बिमारी इलाज लक कर्ज मा डुबी
पुढ जींदगी की पहाड बन चिंता उभी
घर नही दाना पारी भूखो मरण की
मंग समाज वहां का तेरवी रोटी खाये?

दाहसंस्कार दसक्रिया पींडदान भारी
पंडित कसे तेरवी रोटी बिना नही मुक्ति
जब् धर्मग्रंथ मा नहाय रोटी ल् मोक्ष प्राप्ति
मंग समाज वहां का तेरवी रोटी खाये?

तेरवी की रोटी मा तेलरांधा की बंदी
लोक कसेत बनावो भजिया बुंदी
जहां जीवन भय गयो चिंधी-चिंधी
मंग समाज वहां का तेरवी रोटी खाये?

बंद करो या जुनी पुरानी कुरीति
सहयोग करो चलावन पुढ् जींदगी
जहां घरजन पुरो अनाथ होय जाये
मंग समाज वहां का तेरवी रोटी खाये?

***

६१. का करे किरसान

का करे किरसान
काही समज् नही
अरवाड़ी-जिवती गई
पानी काही बरस् नही।

आवसे रिमझिम फुआर
बरन काही थिपक् नही
कव्हनला त आवसे पानी
बांधी मा काही संगर् नहीं।

ढग सेत भऱ्या बादर मा
पर काही बरसत नही।
चमक्से बिजली बारम्बार
पर पानी काही बरस् नही।

यन् बी साल का सूका पड़े?
खानला नही दाना पानी मिले?
मानुस का कर्जा चिंता मा लदे?
ना हाय-खाय फासी पर चढ़े?

***

६२. आता मि पानी कहानल् आनु?

घर की बिहिर आटी
गावको तरा खाली
नदी मा रेतीच रेती
आता मि पानी कहानल् आनु?

मि तहान कसी भगाऊ
तोला पानी कसो पिवाऊ
गुंड खाली, मथनी खाली
आता मि पानी कहानल् आनु?

बैलजोडी खुट पर उभी
गाईभसी आंगन मा खड़ी
डोंगा-डोंगी खाली खाली
आता मि पानी कहानल् आनु?

रोहनी गई मिरूग आयो
खार भरण उसिर भयो
चिंताल् जर् रही से मानुस
आता मि पानी कहानल् आनु?

***

६३. आमि लोक गावरान

गावच आमरो सरग
तराच आमरो सरोवर
हुड़की-जंगल मा मंगल
घर घर बोहे प्रेम की लहर ।

पटील की हवेलीच भव्य महाल
हनुमान मंदिरच तीरथ जहान
मातामायच आमरो वैष्णवी धाम
आमी ठहऱ्या भाऊ गावरान ।

वोघर बोहोसे जसी गंगा जमना
अमराई खवाये पाड़ का आम्बा
मोहऱ्यानका मोहु करे तोंड़ मिठा
खेत-धुरा पर नही बोर को घाटा।

गाव भर नाचसे आपुलकी
जहां वहां भेटसे भाऊ-बंदगी
चारी दिशा बजे प्रेम की बंसी
वहां भेटसे मन ला तसल्ली ।

***

६४. बदलो, बदलेव जमाना

ढाल तलवार गदा भया इतिहास जमा
नांगर-बखर दतार भया जुना पुराना
टॅक्टर थ्रेसर रोटर को आयो जमाना
पोवार भाऊ बदलो, बदलेव जमाना ।

नौकर-चाकर गाड़ो-खाचर भया जुना पुराना
आधुनिक युग मा खेती ला बनावो कारखाना
खपे जो रातदिवस स्वता सतत खेत बाडी मा
करे उन्नती समझो उच यन् आधुनिक युग मा।

टुरूपोटु ला सिकावो ज्ञान-विज्ञान
कला-कौशल मा करो उनला तयार
बनेत युवक-युवती जब कर्म प्रधान
त देश-विदेश मा कमायेत अपरम्पार ।

तुमि हर क्षेत्र मा करो धमाल कमाल
श्रम-परिश्रम ल धरो राष्ट्र की कमान
प्रज्ञा-शील-करुणा मानुस की धार जान
तब् होये जगमा तुमरी जयजयकार।

***

६५. शिक्षा

समय परिवर्तन की कुकृपा
खेतीबाड़ी की भई खुप दुर्दशा
किरसानी बनी बड़ी समस्या
रोज रोज बढ रही से दरिद्रता ।

हाथ मा नही पैसा-अधला जमा
का करे कोनी दुकानदारी धंदा
बिना कला कौशल नही नोकरी
शिक्षाच उज्वल भविष्य की ज्योति ।

सिकावनो पड़े आता टुरूपोटु
देनो पड़े हाथ मा पाटी-खडु
करावनो पडे मॅट्रीक स्नातक आयटी
बनावनो पड़े अभियंता डॉक्टर वकील ।

पढ़ेत लिखेत त युवा जाहेत पुढ़
नौकरी व्यवसाय उद्योग भरे पेट्
हाथ मा लेनो पड़े लैपटॉप कम्पुटर
अख्खो दुनियाला समजो कुरुक्षेत्र ।

***

६६. पवार अना किताब

पवार बनावसेत घरदार मोठा
गायढोर ल भऱ्या रव्हसेत कोठा
जमीन-जायजाद धन को नही तोटा
पर किताब संग दूर दूर को नाता ।

न्यूज पेपर बाचसेत टपरी परा
समाज पत्रिका मांगसेत फुकट मा
पंडीतलाच कसेच बाच तू भगवतगिता
पर किताब संग दूरदूर को नाता ।

घरमा जमी किताब बिके रद्दी मा
किताब पेज फाड-फाड करे नास्ता
सिलिमा पार्टीला नही कमी पैसा
पर किताब संग दूरदूर को नाता ।

कथा कहानी कादंबरी शास्त्र काव्य
कसेत कोनतो कामका वै आपलो
घर ला सजाओ गाड़ी घोड़ा भगाओ
पर किताब संग दूर दूर को नाता ।

***

६७. किताब देनो से मोला

किताब आय सर्वांगीन विकास की सीढी
वोलच समझे विकसित दुनिया की रीति
वा किताब नवी पीढ़ी क हाथ मा देनो से मोला ।

किताब आय कतृत्ववान मानुस को श्रृंगार
वोलच चमके तुमरो बहुआयामी किरदार
वा किताब नवी पीढ़ी क हाथ मा देनो से मोला ।

किताब करावसे ज्ञान विज्ञान को दर्शन
कला कौशल संग कराये उद्योग को मंथन
वा किताब नवी पीढ़ी क हाथ मा देनो से मोला ।

किताब आय धर्म कर्म आध्यात्म की गीता
सत्यज्ञान को कराये दर्शन भगाये अंधश्रद्धा
वा किताब नवी पीढ़ी क हाथ मा देनो से मोला ।

किताब आय अंतरमन की दिव्य दृष्टि
संस्कार संस्कृति सभ्यता की दे सृष्टि
वा किताब नवी पीढ़ी क हाथ मा देनो से मोला ।

***

६८. वा त् बस वैदिक शिक्षा होती!

जहां जीवन को मूल लक्ष्य
केवल मोक्ष की इच्छा होती
वा त् बस वैदिक शिक्षा होती !

जहां भूख मिटावन को माध्यम
केवल घर-घर की भिक्षा होती
वा त् बस वैदिक शिक्षा होती !

जहां गुरु पुज्य होतो पिता तुल्य
अना शिष्य सदा होतो पुत्र तुल्य
वा त् बस वैदिक शिक्षा होती !

जहां शिक्षा एक तपस्या होती
अना दीक्षा एक परीक्षा होती
वा त् बस वैदिक शिक्षा होती ।

जहां गुरु क् पदचिन्हों पर चलनो
शिष्य क मन की अहम इच्छा होती
वा त् बस वैदिक शिक्षा होती!

****

६९.   ए बेलगाम कागज का घोड़ा

ए बे-लगाम कागज का घोड़ा
धाव रह्या सेत पागल बन सैरा-बैरा
उडाय रव्ह्या जित् उत् खुप गागरा
इनला लगाम बांधे कोन सांगो जरा ।

नही दिस् दूर दूर वरी कोनी घोड़की
जो बन सके किसन वानी सारथी
कर सके जो आपल् बसमा ए घोड़ा
ना जुप सके अर्जुन को युद्ध रथ ला ।

ए बे-लगाम कागज का घोड़ा
मार्सेत पछाड़ी धाय-धाय कना
आवसे सपाटा मा जो-जो इनको
ढेर होय जासेत जरव्मी बिचारा ।

गई नही आब् बी बेरा सम्हलन की
लगाम कसो यन् उपादिहिन पर की
कुरुक्षेत्र मा से अगर युद्ध जितन को
त करो काबुमा ये बेलगाम कागज का घोड़ा ।

***

७०.   ये नवश्या कार्यकर्ता

आपलो फायदा नुकसान क चक्कर मा
हरदम साथी जुरसेत ना, तुटसेत यहाँ
कबी कबी कोनी तुमरी किंमत परख् सेत
त कबी कोनी आपली किम्मत लगाव् सेत ।

आवसेत कोनी पद लेन साठी संगठन मा
त धावसेत कोनी मंच की मज्या लुटन ला
मौका देख नेता बनन कर् सेति तोर-फोड़
खेल् सेत चौसर गोटी शकुनि मामा बनकर ।

आवसेत संगठन समाज जोरन क नावलक
चली जासेत संगठन ला सुरुंग लगायकन
कोनिला नाहाय समाजसिन काही लेनो-देनो
बस यहाँ सबला से आपलो नाव गूंजावनो ।

जो ज्ञानी ध्यानी वोको करत कोनी मोल नही
जो निस्वार्थी सेवाभावी वोको काही मोल नही
लगाओ नारा 'जय राजा भोज', 'जय गढ़काली'
पवार लोकहिन ला भरमावन से एत्रोच काफी ।

कसेत नोको समजाओ आमला समाज कल्याण की भाषा
कसेत नोको देखाओ आमला समाज विकास को नकशा
से मालुम जलसा भराओ पोस्टर चमकाओ, करो धूम-धड़ाका
मंग देखो कसी, आमरो गरो मा पडसे फूल की माला ।

***

७१. आमरा साहित्य भूषण

पवार-पवार कव्हत वानावनो सोड़ो
आपलो डोस्कीपर नचावनो सोड़ो
उनला नही काही तुमर्‌सिन लेनो
पवार-पवार आपुन कव्हनो सोड़ो ....

भाषाशास्त्र मा बीए एमए पीचडी भया
अध्यापक प्राध्यापक बन ड्युटी मा रंग्या
मराठी हिंदी इंग्रजी का साहित्य भूषण
पवारी बोली को नाव अता पता शुन्य ....

कोनी रंगसे भाषा मंडल को संवाद मा
कोनी गावसे गाना कवि सम्मेलन मा
कोनी होसे दंग कथा कहानी नकल मा
पर नही भाव् पवारी साहित्य संस्कृति कला.....

लोकसाहित्य कला संस्कृति का ज्ञाता
ढुंढ-ढुंढ कर जमाव् सेती जुनो डॉटा
पर नही भेट् इनला पवारी को जाता
पवारी मा बोलन इनला आवसे शरम आता.....

***

७२. आत्मचिंतन

गुस्सा करो त करो आपलो पर
माया बर्सावो त बर्सावो दुसरो पर
काढ़ो मैल मन लक, करो शुद्ध निर्मल
सद्‌विचार आचार ल भरो आचरण ।

करो सम्मान नहान मोठो को समान
ना करो कभी गरीब अमीर मा भेदभाव
अज को मोठो काल होतो लहान-सहान
काल को गरीब अज अमीर-धनवान ।

पद सत्ता धन को ना अहंकार धरो
राम-रावण माको भेद जरा समझो
सोनो की लंका चुटकी मा भई खाख
अधर्म पर धर्म न करिस आघात ।

जीब ला आपलो आवरनो सिखो
जीब ला गोड़ मधूर बनावनो सिखो
जीब ल प्रेम सरिता बहावनो सिखो
जीब लक सबला जोड़नो सिखो ।

***

७३. शब्द

शब्द कहो या कहो ओंकार
शब्द कहो या कहो प्रणव
शब्द कहो या कहो गणेश
शब्द कहो या कहो ईश्वर ।

शब्द श्रृष्टि की प्रथम ध्वनी
शब्द प्रकृति की प्रथम कृती
शब्द मन आत्मा की वाचा
शब्द जगत की महामाता ।

शब्द ब्रह्म, परब्रह्म, ब्रह्मांड
शब्द साक्षात दिव्यरूप ज्ञान
शब्द एकाक्षर त्रिकाल ओंकार
शब्द सृष्टि अकार उकार मकार ।

शब्द ब्रह्मा विष्णु रुद्र वाचक
शब्द जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति वाचक
शब्द स्थूल सूक्ष्म कारक वाचक
शब्द योगी योगेश्वर आचार्यक ।

शब्द मा भरी से मंत्र गायत्री
शब्द मा करसे निवास सरस्वती
शब्द मा बस्या सेत व्यास वाल्मिकी
शब्द श्रृजन करे देव-देवी की आरती ।

***

७४. प्रारब्ध - रिसर्च

आंबा को झाड़ देय फल गोड़
बड़ को झाड़ देय सावोली थंड
परसा को झाड़ ओढे लाल छत
यव त् आय उनको उनको प्रारब्ध ।

करूला चव लगे जिभला कडु
चिच चव लगे खट्टी - आंबट
पेन-खजुर लगे खुपच गोड़
यव त् आय उनको उनको प्रारब्ध ।।

मानुस चले पैदल जमीन पर
घार उड़े पंख फैलाय बादर
मसरी पोहे जलपरी बन सागर
यव त् आय उनको उनको प्रारब्ध ।

मानुस ज्ञान विज्ञान की मुरत
संघर्ष करसे विरुद्ध प्रारब्ध
करसे दुनिया मा अशक्य ला शक्य
वोनच ताकत ला कसेत रिसर्च ।

गर न होतो रिसर्च त नही होतो हवाई भ्रमण
गर न होतो रिसर्च त नही होतो दूरध्वनी श्रवण
गर न होतो रिसर्च त नही होतो दवा-शल्य प्रबंध
अशक्य ला शक्य करे वोला कसेत रिसर्च ।

***

७५. डोरा

डोरा करावसे जग दर्शन
डोरा करावसे पथ दर्शन
डोरा करावसे शब्द दर्शन
डोरा करावसे कला दर्शन
डोरा करावसे देव दर्शन
डोरा करावसे मन दर्शन.....

डोरा, उघडसे कोनी
डोरा लपावसे कोनी
डोरा मिच्से कोनी
डोरा दबावसे कोनी
डोरा कहाडसे कोनी
डोरा वन्ह्या करसे कोनी.....

डोरा कोनीका कारा
डोरा कोनीका पांढरा
डोरा कोनीका लाल
डोरा कोनिका पिवरा
डोरा कोनिका काना
डोरा कोनिका गिजरा.....

कोनी क डोरा मा आसु
कोनी क डोरा मा हासु
कोनी क डोरा मा सरम
कोनी क डोरा मा घमंड
कोनी क डोरा मा छल
कोनी क डोरा मा कपट......

***

७६. बेरा

कभी ना कहो मोरा पवार भाऊ
का दिवस आपला खराब सेती
समज लेव का तुमि आबक् घड़ी
काटाहिन ल् घेन्या गुलाब सेवजी!

बांध ठेवो हिम्मत, दिवस आपला भी फिरेत
काटा को झुडुप मा, कभी गुलाब बी खिलेत
लगी से तहान सुख गयेव गरो त् उठो
टाको बालटी बिहिर मा, चलो पानी खिचो!

थक कर नोको बसो, जानो से दूर तुमला
पोहचनो नाहाय मुस्किल, बनो धीर गंभीर
एक बेरा आये वा भी, जब स्वागत करे कोनी
जीवन जगन को भरपुर मज्या आये चलफिर ।

कोनी न लेईस खबर, तुमर् साथ से कोन?
मि न् हासकर कहेव, मोरो संगी 'समय'
अगर से उ सही, त् सब आपला संगी
अगर से उ गलत, त् आपलो कोनी नही!

वक्त हीरा ला भी, काच बनाय देसे
वक्त रंक ला भी, राजा बनाय देसे
वक्त को जो करसे, जीवन मा मोल
त कोरसा भी होसे हिरा अनमोल!

***

७७. सुख

ए सुख तु भेट् सेस कहां
का तोरो काही पक्को से पता
का बस जासेस बन अन्जाना
आखिर का से गा तोरो ठिकाना।

कहां कहां नहीं ढुंडेव तोला
पर तु कहीं नही भेटेस मोला
ढुंढेव तोला उचो महाल माड़ी मा
ढुंढेव मोठ मोठ् राज दरबार मा।

मोठ-मोठा धनवान बी ढुंढसेत तोला
राजा-महाराजा बी ढुंढसेत तोला
ऋषि महर्षि सन्यासी बी ढुंढसेत तोला
वय तोरो पत्ता बिचारत होता मोला।

मि उनला कहेव-लहानपन मा भेटेव होतो
मोरो संग खुब हासत खेलत रव्हत होतो
पर जसो-जसो मि मोठो होत चलेव पुढ्
सुख मोरो पासून दूर परान लगेव सरिखो।

एक दिवस भयो चमत्कार, वनच देईस आवाज
नोको ढुंडूस मोला यहां-वहां मि सेव तोर अंदर
मि सेव बसेव तोरो मन क संतोष समाधान मा
घरजन, अडोस-पडोस परिजन क मुस्कान मा!

***

७८. सपना

रंगीन सपना डोरा मा भरकर
सफर जीवन को करसु मि तय
रंगीत ख्वाब देखन को अंदाज मा
मि पुढ़ चलसु ठेय नजर जमीन पर ।

मोरो सावन भादो बीत गयो हासत
बरसाय खुशी चली गयो मौसम
मन का काही कागज रय गया कोरा
मन का काही ख्वाब रय गया अधुरा ।

मि आग उगलती तपन मा
सफर करन चल पड़ेव
तपनो त से जीवन भर
सावली क पुढ् पुढ् धावत रहेव ।

ज्योती जलसे मन मंदिर मा
बनकर तमसो मा ज्योतिर्गमय
घनघोर अंधारो बिजली पानी
आडी-मोडी को रस्ता मि चलेव।

हार नही कभी मि मानु जानु पालु
जंगल पहाड़ नदी नाला ला नही भिऊ
बादर छटे त् सूरज की किरण देखु
कबी ना कबी त मि निखर उठूं !

***

७९. श्रम

चलो श्रम की राह करो विकास
चाखवो श्रम का मीठा फल ना प्यार
बनो श्रम की तपीस मा कंचन लाल
बहाओ श्रम लक जीवन मा बहार।

श्रमच आय धरम, श्रमच आय पूंजा
श्रमच, श्रद्धा, विकास को खम्बा
श्रम को घाम रस्ता बनावसे मुलाम
विकास की मंजिल मांगे श्रम दान।

श्रम न बनाईस विक्रमादित्य ला सम्राट
श्रम न बनाईस भोज ला राजा महान
श्रम न बनाईस महादानी जगदेव पवार
श्रम बिन नही मानव जीवन को उद्धार।

बिन श्रम मानुस से निरो पशु समान
नही काही वोको मुल्य मान-सम्मान
श्रम लक सूरज बन चमकसे इंसान
श्रम आय मानव जीवन को शास्वत प्राण ।

***

८०. चिंता

चिंता कराये चिंतन मंथन
कराये समस्या को निदान
चिंता रोग पराये कसो
सुझाये एकसे एक उपाय ।

चिंता से दिमागी कसरत
बुद्धि की वा लेसे परीक्षा
करावसे खुप अभ्यास
जो करे पास उ पुढ् जाय।

चिंता ला नोको कहो चिता
ना मांगे कंधा ना स्मशान
वा त् मांगसे अचुक दवाई
ज्या सके बचाय रोगीकी जान।

चिंता करसे मन आशावादी
जो धावत रव्हसे लढ़न साठी
लेय धनुष अर्जुन हाथ मा धर
करसे संकट तुफान को पतन।

***

८१. पानी

पानी शब्द एक भावार्थ अनेक

डोरा मा जब् आवसे पानी
त वोला कव्हसेती आसु
कबि सुख त कबि दुख मा
असी से उनकी महती ।

सामने दिसी जलेबी रबड़ी
त तोंडला सुटसे पानी
खाता पीता लगेव ठसका
त् डोरा मा आवसे पानी ।

धनवान घर् लछमि देवी
कसेत भर्से सदा पानी
अवकात दून जास्त खर्च त्
डोस्की वऱ्यालक जासे पानी ।

जहां मारो लाथ त निंघसे पानी
वोला कसेत लोक कर्तृत्वशाली
पर जब् मेहनत पर फिरसे पानी
त वोला कसेत सब दुर्भाग्यशाली।

जे क डोरा मा चमकसे पानी
वोला जानो चतुर गुणी महाज्ञानी
जेन् पिईसेस बारा गांव को पानी
वोला ठगावनो काही सोपो नही।

मायबाप पालसेत टुरूपोटु
आपलो रकत को कर पानी
पर काही निंघसेत कपुत असा
मायबाप ला नही पिवावत पानी ।

***

८२ टोभा

करु बार बार रफु पर रफु
लगाऊ थिगरा पर थिगरा
थक गई सुई, सर गयेव दोरा
पर मोरो जिंदगी का टोभा
रय गया जसा का तसा ....

नाता गोता जगभर मोरा
काही मोठा त काही छोटा
हार गयेव मि खुश करता करता
पर मोरो जिंदगी का टोभा
रय गया जसा का तसा.....

देख-देख जनम कुंडली का फेरा
बाच-बाच हथोली की हस्तरेखा
सिवत रहेव मि दुसरो का टोभा
पर मोरो जिंदगी का टोभा
रय गया जसा का तसा ....

***

८३. पान

तुरसी का पान विठ्ठल ला चढावो
बेल का पान शंकर ला बहावो
रुई का पान बजरंग को चरण
देवईन की खास पसंद पान विशेष ।

केरा का पान सुस्वागतम द्वार
मेंदी का पान शुभ शकुन जान
पिपल का पान मुंज को काम
मंगलकार्य मा पान ला मोठो मान ।

नागवेली का पान बिड़ा को काम
केवड़ा का पान नागदेव को नाम
दुभारी दुर्वा गणपती को सनमान
देव पूंजा नही बिना चंघाये पान ।

परसा-बड़ का पान ल बने दोना पत्री
आम्बा का पान आये तोरण को काम
सिंदी का पान ल बने चटई छान
पान-पान से बड़ो महत्व को जान ।

गोड़निंब का पान फोरणी/कढ़ी मा टाक
कोचई का पान ल बड़ी पकवान खास
तेजपान बिना नही मसाला मा जान
पान बिना नही शाक भाजी ला सवाद।

बही का पान लिखन को काम
पुस्तक का पान ज्ञान की खदान
आपटा /सेमी का पान सोनो जान
पान को जीवन मा मूल्य महान।

***

८४. पुरुष

पुरुष बस उच वीर आय
रव्हसे सदा जो तय्यार
गुण यव आयसक् से तब्
जब् आचरण रव्हसे उँच ।

नैतिक बल रव्हसे वोला
जो चरित्र ल रव्हसे पाक
लोह पुरुष कव्हसेत ओला
जो बनकर रव्हसे लोहा ।

संयम रव्हसे जेको खुद पर
रव्हसे काम क्रोध मोह दूर
रव्हसे सचमुच बलवान वु
जो कभी नही होय मजबूर ।

दासी बन रव्हसे वहां
शौर्य धैर्य ना जुनुन जहां
जब् आपत्ती आवसे सिर
होय जासे क्षण मा दूर।

***

८५. कर्मठ मधमासी

समर्पित सेवाभाव की मिसाल से मधमासी
धाय-धाय न जाने फेरा केतरा लगावसे
बाग-बाग चुन-चुन एक-एक फूल
मध पराग पुड़-पुड़ देख्व भरत रव्हसे
वा नही कोनी अनिख्व, कर्मठ मधमासी से ....

घिटक-घिटक पराग गरो घाटी मा
पानी छाटत छाटत कभी थक् नही
लार वाहां मिलाय-मिलाय बार-बार
पराग को शहद मिठो बनावत् रव्हसे
वा नही कोनी अनिख्व, कर्मठ मधमासी से ....

माय-बाप राजा रानी की बेटी अभागी
जन्म लक वा बिचारी बांझन वाझन से
अंडा, ब्राा माता पिता को पालन करनो
याच वोन् बिचारी को धरम करम से
वा नही कोनी अनिख्व, कर्मठ मधमासी से ....

आजीवन पालक को आपलो कर्तव्य
पीढ़ी दर पीढ़ी अनवरत निभाव् से
भाई-बहिन नाती पोती पननात-नाती
की वा आई माई दाई सब बनजासे
वा नही कोनी अनिख्व, कर्मठ मधमासी से ....

***

८६. दृढ निर्धार

मि कमकुवत, मि असमर्थ
यव भ्रम से मन ल मिटावनो
रेगिस्थान ला से हरोभरो करनो
यव दृढ-निर्धार से बनावनो ....

से सोड़नो मनकी हीन भावना
से ओढ़नो अजातशत्रु को बाना
से होनको तुरत कुरुक्षेत्र रवाना
से होनो भरती अर्जुन की सेना ...

से दृढशक्ति का घोडा रथला जुपनो
से धैर्यशौर्य का कासरा हाथमा धरनो
से कृष्ण बन सक्षम सारथी बननो
से द्रोणाचार्य बन शस्त्र उठावनो ....

से करनो विकास को शंख्वनाद
से करनो हरक्षेत्र आपलो नाव
से करनो सार्थक क्षत्रिय कर्म
से करनो सम्पन्न पवार समाज ....

***

८७. धरम को भावार्थ

□ धरम मनजे सभ्यता
याद करो रुषि व्यासला
समजावन लिखिस चार वेद
पर का आमि अजवरी समज्या धरम?

□ धरम मनजे-मर्यादा
याद करो श्रीराम ला
समजावन वाल्मिक न लिखिस रामायण
पर का आमि अजवरी समज्या धरम?

□ धरम मनजे करम
कसे श्री किसन
समजावन लिखिस गीता
पर का आमि अजवरी समज्या धरम?

□ धरम मनजे संस्कृति संस्कार
कसेत रुषि मुनि साधू संत महान
समजावन लिखिन पुराण, उपनिषद,
पर का आमि अजवरी समज्या धरम?

□ धरम मनजे-मानुसकी की घड़न
कसेत महावीर, गौतम, विवेकानंद
समजावन लिखिन विद्वानहिनन् ग्रंथ
पर का आमि अजवरी समज्या धरम?

□ धरम मनजे परमार्थ निस्वार्थ सेवा
मानव सेवा को जगाओ मन मा भाव
पुरुषार्थ लक करो जन कल्याण
यवच आय धरम को खरो भावार्थ ।।

***

८८. मोक्ष

एक दिवस भेटेव मि एक पंडित ला
मि पुछेव - गुरुदेव सांगो मोक्ष को मतलब?
पंडितजी बोल्या - मोक्ष आय मानव जीवन को अंतिम लक्ष्य,
मरनो को बाद मिलसे स्वर्ग,
स्वर्ग मा मिलसे देवत्व,
रुक जासे जीवन-मरन चक्र ....

काही दिवस बाद एक तेरवी मा भेटेव एक पंडित ला
मि पुछेव-गुरुदेव सांगो मोक्षसाठी विधि विधान?
पंडितजी बोल्या - मरनो बाद बेटा न् करे पायजे मुंडन,
मंग करे पायजे अस्थि विसर्जन ना पिंडदान,
मंग करे पायजे मृत्यु-भोजन ना गोदान,
अना बिनचुक करे पायजे वर्ष-श्राद्ध करम कांड...........

कुम्भ को मेला मा भेटेव मोला एक संत महात्मा...
मि पुछेव- स्वामीजी का करम-कांड लक भेटसे मोक्ष?
संत महात्मा बोल्या - कोन् अनुभव करिसेस मोक्ष?
कोन् देखिसेस स्वर्ग?
कोन्ला से मालुम देवत्व?
जनम-मरण त् आय प्राणि जीवन को अटल चक्र!
जीवन मा ईच्छा संतुष्टि यवच् मोक्ष!!

***

८९. ग्रहचक्र

नोको हासो कोनीपर
बेरा सांगकर नही आव्
काल बेस अज खराब
यव त ग्रहचक्र को खेल्....

बीरबल होतो बुद्धिमान
पर मंत्री को मंत्रीच रहेव
अना अकबर राजा बन मरेव
यव त् ग्रहचक्र को खेल्....

नाता गोता कबी तोलो नोको
पैसा को प्रदर्शन करो नोको
मि राजा तु रंक सोचो नोको
यव त ग्रहचक्र को खेल्......

अमिरी गरिबी आय धूप छाव
जसी फिरसे दिवस मंघ् रात
लक्षमी अज यहां त् सकारी वहां
यव त ग्रहचक्र को खेल् ......

आपलो हाथ मा से एकच
एक-दुसरो साठी जगनो
सुखदुख आपस मा बाटनो
बाकी सब ग्रहचक्र को खेल्......

***

९०. मोरो बंद मुट्ठी मा

मोरो बंद मुट्ठी मा
न जाने केतरा बहुरूपिया बंद सेत,
गोरा कम कारा अधिक,
खुबसुरत कम बदसुरत अधिक,
इंसान क भेष मा हैवान छुप्या सेत ......

मोरो बंद मुट्ठी मा
न जाने केतरा बहुरूपिया बंद सेत
सेवा कम मेवा अधिक
काम कम हल्ला अधिक
समाजसेवी क भेष मा ढोंगी छुप्या सेत....

मोरो बंद मुट्ठी मा -
न जाने केतरा बहुरूपिया बंद सेत
धर्म कम अधर्म अधिक
पुण्य कम पाखंड अधिक
साधू क भेष मा डाकु छुप्या सेत ....

मोरो बंद मुट्ठी मा -
काश! मि ठेय सकु दिवो
कर उजारो मिटाऊ अंधारो
कारो मन कर सकु गोरो
कंश ला बनाय सकु कृष्ण .....

***

९१. मंग सांगो तुमिच ....

मानुस मरे क बाद
देह जासे अग्नि क साथ
राख ना अस्ति जासे जल क साथ
आत्मा जासे स्वर्ग पींड क साथ
तेरवी मिटावसे दुख को पहाड़
मंग सांगो उ का लिजासे आपल् साथ .....

मानुस मरे क बाद
सोड जासे बँक खाता
जमा-पुंजी ना घर-दार
सोड जासे जमीन-जायजाद
कर जासे सब तुमर् नाव
मंग सांगो उ का लिजासे आपल् साथ ......

मानुस मरे क बाद
लेखक सोड जासे किताब्
चित्रकार सोड जासे पेंट ब्रस्
गायक सोड जासे आवाज
सब सोड जासेत आपली जायजाद
मंग सांगो उ का लिजासे आपल् साथ ......

मंग काहे फैलाव सेव माया को जाल?
मंग काहे बहाव् सेव अनीति की धार?
मंग काहे कर सेव आजीवन लुट-पाट?
सब त सोड़ कन जानो से यहांच!
मंग काहे नही बनकर रव्हो इंसान?
अंतमा इंसानियत लिजाव आपलो साथ!
***

९२. अंतिम सत्य

डोरा को पानी बनेव आसु
याद् सेत वोकोमा भरी
बासुरी का मधूर धूंद भयी बंद
गीत-गोविंदा काव्य भयो मौन
रही आता अबोल मन की प्रित
बुझेव जोत समान भयेव दीप .....

चांद-चांदनी भया कहीं लापता
बादर भर भर गया ढग कारा
निरस विरस भई जीवन आभा
तारा सितारा की नही रही आशा
शब्द सरिता की अमृत जलधारा
बन गई खारट सागर ज्वारभाटा .....

थकेव शरीर, हाथ-पाय थक्या
जीवन बाग सुक गयो रे सप्पा
नही फूल, नही गंध, से पाला
जनम सत्य, मरण सत्य
शरीर नश्वर, आत्मा अमर
अध्यात्म कसे यवच अंतिम सत्य ....

***

९३. जीवन सार

खटखटाता रहो दरवाजा
एक दुसरो क हरदय का
झाककन देखो त जरा
स्वागत मा सेत सब उभा ।

देख्सेत टकटक एक दुसरो कना
कोन पहले खटखटाये दरवाजा
जब कोनी खोल देसे बंद ताला
त फटकन फुट जासे प्रेमधारा।

बोल बोलसेत मन की भावना
सुख-दुख परख्सेत प्रेम धागा
पैसा तब् चली जासे कचरा मा
मानुसकीच आवसे मानुस क काम मा।

जीवन की किताब उठाओ
कव्हर की सुंदरता भूल जाओ
पानपर का अक्षर जरा निहारो
उच समझो जीवन सार तुमारो।

***

९४. जीवन को अंतिम लक्ष्य

मानुस को जीवन
लक्ष्य बनाये सार्थक
लक्ष्य चले मंजिल
सीढ़ी पर बढ़े कदम .....

कर्म नही बिन धर्म
धर्म नही बिन नीति
नीति नही बिन ज्ञान
ज्ञान नही बिन गुरु .....

विकास रथ को सारथी धैर्य
विजय को सारथी संकल्प
संकल्प को सारथी कर्मठ निष्ठा
निष्ठा को सारथी शक्ति पर विश्वास .....

शक्ति को मूल आत्मविश्वास
आत्मविश्वासको मूल अध्यात्म
अध्यात्म को मूल आराधना
आराधना को मूल श्रद्धा .....

श्रद्धा भरे अंतकरण मा आनंद
आनंद भरे जीवन मा चितवन
सुख भरे मन मंदिर मा संतोष
यवच जीवन को अंतिम लक्ष्य ......

***

९५. मोरो मन बडो चंचल

मोरो मन बडो चंचल
कबी धावसे जमीं पर
कबी उडसे हवापर
पंछी बन यव मोरो मन ......

कबी हिंडसे बाग बगिचा
कबी बससे फुल पंकडी वऱ्या
कबी खेलसे झाड़ झाडुला परा
फुल पाखरू बन यव मोरो मन ......

कबी फिरसे खेत-खलियान
कभी धावसे अमराई मोहऱ्यान
कबी करसे मुलुख को सफर
जुगनु बन यव मोरो मन ......

कबी बजावसे किसन की बंसी
कबी गुणगुनावसे गीत मंजिरी
कबी नाचसे पहाड़ जंगल
कोयल बन यव मोरो मन ......

***

९६. मन

मन पर लेय ओझो मोठो
मन ला भारी बनावो नोको
लेय सहारा धैर्य संयम को
मनको बोझो खाली करो ....

मन पर लेय ओझो क्रोध को
मनमा आग ना भड़कावो
आग पर पानी बरसावो
प्रेम की थंडी मलम लगावो ......

मन रव्हसे कली सो कोमल
मन ला ना कबी मुरझावो
मन ला देय जाई चमेली गंध
मनमंदिर मा इत्रर महकावो ......

मन नही करो तुमि नहान-नाटो
मन नही करो तुमि खोटो-झुठो
मन मा ममता-माया दया भरो
मन लक खुशी प्रेम बरसावो ......

***

९७. हकीकत जींदगी की

जींदगी को लम्बो सफर मा
हस्थरेषा पर चलकन देखेव
देव पुंजेव पोथी पुराण देखेव
कर्मच देसे फल आखिर समजेव ।

जो बी भेटेव चल्या लेय साथ
देया एकदुसरो को हाथ मा हाथ
साथ साथ मिलकन लगाया बाग
हर फल पर से लिखेव उनको नाव।

लोग कसेत से किस्मतवालो बागवान
ओको पर से वर्ह्यावालो मेहरबान
संगठन की शक्ति सक्या न लोग पयचान
एकता मा रव्हसे राम अना घनशाम।

जिनको जवर सेत आपला
वय झगड् सेत आपस मा
जिनका नही कोनी आपला
वय धुंड् सेत भीड़ मा आपला।

सकारी न मि रहुं, न रहो तुमि
रहे सिरफ आपल् करम की निशानी
चलो रहो मिलजुलकर खुशी खुशी
याच से हकीकत जींदगी की।

***

९८. खुबसुरती

जिंदगी भर खुबसुरती जमाय
बटवा मा ठेवत जोड़त गयेव
फुरसत लक खर्च करुन
बस यव हमेशा सोचत रहेव।

उधरती रही सिलाई
करत गयेव तुरपाई
फिसलत रही खुबसुरती
करत रहेव भरपाई ।

एक दिवस भेटी मोला फुरसत
सोचेव या जमापुंजी लुटाऊँ
आरसा मा खुदला जब देखेव
त खुदलाच पयचान नही सकेव।

ध्यान लक देखेव चेहरा आपलो
त जमी होती डोई पर चांदी की परत
होतो त मोरो सखिसोच सामने
पर नही मालुम कोन होतो उभो ।

***

९९. थकेव मानुस-ना बुझेव कंदील-एक समान

बात पेट् से
तेल जर् से
उज़ारो कर् से
अंधारो मिटाव्से, धुंगा फेक्से ....

काच की पायली
जोत झाक् से
वारा रोक् से
जोत जर् से, उजारो फेक् से ....

पायली से साफ
त उजारो झक्कास
पायली पर राख
त उजारो खल्लास, अंधारो फैल् से ....

कंदील महान
रात मा राजा
दिवस् मुर्दा
रव्हसे टंगेव
खुटिला कोंटा मा ...
तसोच से मानुस को
जबवरी ताकत आंग मा
जुपेव रव्हसे गाड़ो ला
पेटभर खववासे सबला
देववानी पूंजसेत वोला ....
पर जब उ थक जासे
खुद दुसरो पर लद जासे
त बुझेव कंदील बन जासे
कोंटा मा अंधारो झेलत खुटि पर टंग जासे .....

***

१००. नही देख सकेव मि राजा भोज की मुरत

मि ढुंड रहिसेव
राजा भोज की मुरत
मालवा भयेव फिर कर
धारा भई छान कर
पर मि भयेव हैरान
नहीं देख सकेव मि
राजा भोज की मुरत .....

राजा भोज की मुरत
मोला काही दिसी नही
भोज किला मा नही
भोज महाल मा नही
भोज शाला मा नही
नही देख सकेव मि
राजा भोज की मुरत .....

मि गयेव जहां वहां
तलाश करेव ग्रंथालय
किताब् देखेव असंख
पान-पान उलटतो रहेव
शिलालेख खोजतो रहेव
नही देख सकेव मि
राजा भोज की मुरत .....

ताम्रपट बाचतो रहेव
लोकगीत सुनतो रहेव
कालीदास की कथा कहानी
भी आयकत बसेव
पर भयेव निराश
नही देख सकेव मि
राजाभोज की मूरत .....

***

१०१. थंडी

थंडी देसे सबला संधी
नोको असो कुरकुडावो
ओढ लेव चौफेर शाल
कर लेव आपलो संमान.....

थंडी देसे सबला संधी
नोको इत् उत् परावो
पेटावो जगराभर काडी
सेको मनसोक्त धगाडी.....

थंडी देसे सबला संधी
पेहरो कोट स्वेटर टोपी
ओढो कापुसकी रजाई
जब वरी नही फुटे गर्मी .....

थंडी देसे सबला संधी
करो कडकडातो पानी
आंग धोवो घंटावरी
जब वरी छट् नही थंडी .....

थंडी देसे सबला संधी
पिवो चहा गरम गरोवरी
खावो गरम अक्ष्या लेप्सी
मिटावो मन की सुस्ती .....

***

१०२. समस्या

होतो सोयेव मि जपमा
हरुच आयेव एक सपना
सपना मा दिसी बहिना
वा होती उभी समस्या ....

समस्या मा होती समस्या
मि सेकत होतो आग वहां
बाहेर होती बोहत थंडी हवा
काड़ी होती उडावत धुंगा ....

मि होतो तोंडल् फुकत हवा
धुंगाल् होन लग्या लाल डोरा
फुफ्फुस बन गया खाती को भाता
गुदमुर गयो होतो मि वहां.....

चिखेव चिल्लायो मि जपमा
तुट गयो मोरो भयानक सपना
नही मालुम कसी पराई समस्या
पर घर भर मच गयो भारी हल्ला .....

जाग गया सब घरका एक पल मा
प्रश्न पर प्रश्न की बरसी झड़ वहां
मि मुख बधिर बन गयो तन्हा
मिच बटा बनेव घरकी समस्या .....

***

१०३. सूरज - दीपक

तु सूरज, मि दीपक
तु दिवाकर, मि निशाचर
तु तपिष, मि शितल
तु नभवासी, मि धरतिपर ।

तु विश्वव्यापी, मि घर साथी
तु जगतपिता, मि घरगुती
तु किरण सौर, मि ज्योति
तु अखंड प्रकाश, मि बाती ।

तु जीवन, मि रोशन
तु अमर, मि नश्वर
तु सागर, मि गागर
तु स्वामी, मि सेवक ।

तु अफाट, मि सुक्ष्मतम
मि पिऊ तेल,जलाऊ बाती
जब, तु सोये, मि उजारू
तु सूरज अना मि दीपक ।

***

१०४. एकता को गुलदस्ता

एकच माली का सेत बेटा चार-चार
चारही की से अलग अलग दुकान
चारही की से गुलाब फूल की दुकान
पर से रंग की अलग आपली पैचान ।

एक क दुकान मा बिकसे गुलाब कारो
दुसरो क दुकान मा बिकसे गुलाब पांढरो
तिसरो क दुकान मा बिकसे गुलाब पिवरो
चौथो क दुकान मा बिकसे गुलाब लाल ।

चारही बेटाहिन का एकच मायबाप
चारही फुलहिन को एकच बागवान
सबको पालनहार से एकच भगवान
पर बट गया बिचारा चार दुकान।

माली रोवसे आपल् फुटेव किस्मत पर
चार ही टुरा असा कसा भया रे मुरख
चार ही गुलाब तलास्सेत एक मसीहा
जो सबला मिलाय बनाये एक दुलदस्ता।

***

१०५. ना करो निरर्थक वादविवाद

से लिखेव प्रमर, परमार ग्रंथ शिलालेख मा
से लिखेव पंवार, पोंवार अंग्रेजी साहित्य मा
चल पड़ेव प्रचलन पवार, पोवार मराठाराज मा
का से रख्येव जातिनाम पर नाहाक वादविवाद मा।

गयो राजपाट त चल पड्या उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम
बिखर गया मालवा झाडी ना भोयर आदि पट्टी पठार
कहलाई मालवा-पवार, झाडी-पवार, भोयर-पवार जात
जहां भी गया लहराईन अग्निवंशी पवार की बयार।

अलग अलग क्षेत्र मा बस्या त् नाव बी क्षेत्रवार भयो
दुर्गा, काली देवी का नाम बी त एक सौ आठ समझो
राष्ट्र एक पर नाम भारत, इंडिया, हिंदुस्थान पड्यो
भारतीय संस्कृति की विविधता मा एकता परखो।

का पड़से फरक प्रमर कहो या कहो परमार
का पड़से फरक पन्वार कहो या कहो पवार
का पड़से फरक पोन्वार कहो या कहो पोवार
का पड़से फरक भोयर कहो या भोयर-पवार।

जिनकी ज्या मर्जी लिखो बोलो जाति नाम
उठे-सुटे ना करो निरर्थक उभो दंगा फिसाद
पवार समाज मा सौहाद्रता ना करो खराब
बनाय ठेवो जाति-प्रेम सद्भाव सदा आबाद।

***

१०६. चढ जासे फासी

जिनको जवर भऱ्या अनाज भंडार
पर खानपान शिक्षा स्वास्थ बेहाल
जिनको आंगण मा बोहसे दूध की धार
पर चाखन दूधदही मही घीव को अकाल!

मेहनत कर कर काया भई कारी
पर जीवन जगसेत जसा भिकारी
कव्हनला जग कहे उनला अन्नदाता
पर सोव्सेत वय अर्धो पेट उपासी!

कृषि तंत्र मा वय सेत माहिर
पर सुखा, पूर किडाल् ग्रसित
आस लगाय टक टक देखे बादर
पर नसीब मा उनको चंद्रग्रहण!

घर मा नही जानवर, दैवत बनेव ट्रॅक्टर
पर बिन पैसा, नांगरणी बखरनी नही
फसल खेत मा उभी, काटन नही कोनी
अना बिन पैसा चुरणी गहानी बी नही!

किरसान भयेव आता कर्जबाजारी
पर सरकार, सावकार नही वाली
बेचैन, बेवसी मा जगसे जिंदगानी
बैतागकन बिचारो चढ़ जासे फासी!

***

१०७. या बेरा बी निंघ जाये

मानुस केतरो बी गोरो रहो
पर सावोली त् कारीच रव्हसे ।
मानुस केतरो बी सुंदर रहो
पर प्रेम त् सदाचार ल् होसे ।।

अर्जुन कहे कृष्ण ला मि श्रेष्ठ
देखवो कर्ण को रथ तोडेव कसो ।
कृष्ण कहे मि श्रेष्ठ यव विश्वास
पर तु कहे मि श्रेष्ठ यव अहंकार ।।

अर्जुन कर्ण दुही वीर महान
एक धर्म त दुसरो मित्र अगाध।
मि उठेव जो तोरो रथ लक खाल्या
त देख तोरो रथ का हाल का भया?

सुख दुख आय जीवन की धूप छाव
संयम ठेवो तुमि या बेरा बी निंघ जाये ।
मुहुन कसु - दुख मा खुब रोवनो नही
अना सुख मा अहंकार कबी करनो नही ।।

***

१०८. जरा सोचो

बादर मा चमके चांद, चांदनी तारा
दिससे रात मा रंगी-बिरंगी नजारा
तारा तुट पड़ जासेत जमीन परा
त का रोवसे बादर सांगो जरा!

चांद पंधरा दिवस कहीं खोय जासे
रात कारीकुट्ट अंधारी होय जासे
चांदनी तारा तरी जगमगाये रात भरा
त का वय रोव् सेत बरा चांद परा ।

जम् से जब् कारो ढगइन की गर्दी
चांद चांदनी तारा छूप जासेत सभी
बादर पर छाय जासे सावोली कारी
त का नभो मंडल हताश होसे कभी।

कोन साथी कोन विरोधी न करो ख्याल
कोन हाससे कोन रोवसे न देव ध्यान
कोन मंगल कोन अमंगल न देखो पंचांग
तुमि सिर्फ तुमर् कर्म का सेव हकदार।

***

१०९. बिचारच बिचार

उठता-बसता बिचार, हिंडता सोवता-जागता बिचार
खाता-पिता बिचार, हिंडता फिरता बिचार ।
दिवस उगता-बुरता बिचार, दिवस-भर बिचार
अंधारो-उजारो मा बिचार, तपन-सावली मा बिचार।

बरसात-पानी मा बिचार । थंडी-गरमी मा बिचार
धूंद-तुफान मा बिचार । अकाल-दुष्काल मा बिचार।
नहानपन मा बिचार । जवानपन मा बिचार
बुढ़ापापन मा बिचार । मरता-मरता बिचार ।

पूजा-पाठ क बेरा बिचार, भजन कीर्तन क बेरा बिचार
योगासन क बेरा बिचार, काम कबेरा बिचार।
लिखनो-पढ़नो को बिचार, धंदा-पानी को बिचार
घर-गृहस्थिको बिचार, वर्तमान-भविष्य को बिचार

नवरा-बायको को बिचार । माय-बाप को बिचार
टुरू-पोटु को बिचार । नाती-पोती को बिचार ।
घर-दार को बिचार । अरोस-परोस को बिचार
देश-विदेश को बिचार । लोक-परलोक को बिचार।

मानुस बिचारी प्राणि । आय दिमाग को धनी
मानुस सद् बिचारी । सद् आचारी करसे बिचार ।
बिचार नही रव्हता त् नही रव्हतो जीवन
संस्कार, संस्कृति, सभ्यता को नही रव्हतो स्मरण ।

***

११०. उठो जागो

रस्ताल् चलनेवालो मानुस
ढुंढ लेसे आपलो ठिकाना
गोधा क बाहेर उड्यो पंछी
चुनच लेसे चोच मा दाना!

राम अगर नही जातो बनवास
नही बनतो उ भगवान श्रीराम
रावन अगर सीता नोहतो भगाय
नही होतो सोनो की लंका को विनाश!

काही पावन मेहनत त करनो पड़े
भांडा बनावन माती त चुरनो पड़े
देगा हरि पलंगपर हलवा पुरी
का कबी कोनिला से मिली!

मुंगी दीवार पर बारबार चंघ् से
थोड़ीसी बढसे ना खाल्या पड् से
मकड़ी जाला गुथ से पर तुट् से
पर आखिर मोठो छत बनच जासे!

लिख्या पड्या तुमि जवान लोक
तुमरो जवर से काम कला-कौशल
घर क बाहेर निंघों, से काम उभो
उज्वल भविष्य को कवाड़ से उघडो!

***

१११. चलनो पड़े तुमला

अनुभव भेटया मोला खट्टा मिठा
जीवन से सुख-दुख धुप-छाव को रेला।
अगर जीवन मा से बननो काही
त सोच बनावो मि नहान तुहि मोठा।

चलनो पड़े तुमला वोन रस्ता
जहां भरी से धूल ना कंकड
चलनो पड़े तुमला काटा भरी राह पर
बहावनो पड़े तुमला खून पायलक ।

बननो पड़े एकलव्य सरिखो शिष्य
बनावनो पड़े द्रोणाचार्य सरिखो गुरुवर्य
बननो पडे कर्ण सरिखो यौद्धा
चिरकन भिडला धावनो पड़े पुढ़ ।

संकल्प ना जीत का घोड़ा रथला जुपो
अर्जुन सरिखो अस्त्रशस्त्र निपुन योद्धा बनो
कृष्ण सरिखो तरबेज सारथी संग धरो
जीवन क महाभारत युद्ध ला जीतो ।

***

११२. एकटो चलनो पड़े

यव जीवन आय तोरो
चलनो पड़े एकटो तोला
नोको गमाऊ पल फुकट मा
नही कोनी देये साथ तोला।

चल उठ, पड़कन से उठनो तोला
उठकन से लम्बो चलनो तोला
चल-चल चलनो से पुढ् तोला
थकनो बसनो भूल जाय आता।

पग-पग पर रस्ताभर काटा
छलनी भया पायका तलवा
नाहाय हिम्मत हारनो तोला
काटा बनेत नरम लोनी जसा ।

नोको लुकाऊस जखम आपला
मलम लगावनो पड़े तोलाच तोला
नोको लुकाऊस आसु सुज गया डोरा
पोसनो से उनला तोलाच तोला ।

आपलाच लोक बिछावसेत काटा
आपलाच लोक करसेत जखमी तलवा
भूलकन दुख, सम्हाल स्वताला
जींदगी बनावन अमन चमन,
एकटोच चलनो पड़े तोला ।

***

११३. खुदला बननो पर्से.

स्वभाव ला ठेवन चांगलो
पर्से रोज रोज दवाई लेनो
अधीर मा को 'अ' काहारकन
पर् से जरा धीर धरनो।

संताप को 'ताप' सोरकन
पर्से जरा संस्कारी बननो
सोरकन आपलो मन हट्ट
बनावनो परसेत रिस्ता घट्ट।

मन मा को 'मि' सोरकन
धरनो पर्से 'आमि' पन
आपल् जिबली ला आवर
आदत टाको सबकी आयकनो।

एक दिवस मा नही सही
पर बदलो आपलो मन
गुस्सा ला पुरो पियकन
संयम ठेवो बनायकन।

***

११४. वर्तमान मा जगनो सिखो..

दिवस को उजारो मा, दिवा लगावत नही
सूर्य ला दिवो देखावनो मा काही अर्थ नही।

रात मा सूर्य किरण, काही करो दिसत नही
अंधारो मा आपली परसाई, कबी दिस् नही ।

होसे आसमान की उंचाई मापनो बड़ो मुस्किल
होसे समुद्र की गहराई, भापनो बी तेढी खीर ।

नसिब मा का लिखी से, ब्रह्मदेव ला नही ज्ञान
भविष्य की चिंता ना करो, वर्तमान करो गुलशन ।

सपना देखनो सोड़, यथार्थ मा जगनो सिखो
पुरुषार्थ करो उजागर, कर्म की रोटी सेको ।

काल होता राजा, अज रंक सोचनो सोड़ो
भूतकाल बिसरो, वर्तमान मा जगनो सिखो ।

***

११५. खोटो की से किम्मत!

उभो मि खोटो बन तराजु मा
उभो मि हासत भरेव - बजार मा
उभो मि माप तोलन दुकान मा
खरो मि, जनता क नजर मा ।१।

मालुम से मोला, मि खोटो, नाटो
मालुम से मोला, दुकानदार झुठो
मालुम से मोला, पुरो जग खोटो
तरी खरो मि शत-प्रति-शत्, सुगो ।२।

मालुम से मोला, खोटो बजार मा सजेव
मालुम से मोला, माल खोटो मा रंगेव
मालुम से मोला, खोटो प्रचार ल बिकेव
मालुम से मोला खोटो की से किम्मत ।३।

बजार मा देखवो कसा लोक आवसेत मुखवडा बदल कर
भितर लक रावन, बाहेर राम को चेहरा लेय लगाय कर
यहां सुगो ला भाव नही, झुठो लेसेत तोल-मोल कर
सुगो को हाथ मि जाय न सकु, रहुसु दिल मसल कर ।४।

***

११६. दौड़

दौड़ मा अव्वल यव जरुरी नही
मंघ सबला सोड़ो जरुरी नही
जरुरी से दौड़ मा शामिल होनो
जरुरी से दौड़ ला तय्यार रव्हनो....

जरुरी से पड़कन अनखी उभो होनो
जरुरी से उभो होय दौड़ मा धावनो
जरूरी से कभी हार नहीं माननों
जरूरी से दौड़ ला तय्यार रव्हनो ...

जींदगी मा कदम कदम पर होसे परीक्षा
जींदगी मा निराशा मा ढुंढनो पड़से आशा
अज क दौड़ की हार करसे सकारी जीत
अज सेत जे पुढ् वै सकारी पड़ जासेत चीत ...

बस दौड़नो सोड़न को नही कभी तुमि न्
बस हिम्मत हारन को नही कभी तुमि न्
मुंगी भीत पर चढ़से ना पड़से ना चढ्से
आखिर मा वऱ्हा चढ़त चली जासे ...

***

११७. पर देव वोट आमला

इस्कुल ईमला पड् से त् पड़न देव
टुरूपोटु पानी मा भिगसेत त् भिगन देव
मास्तर भरती रुकी से त् रुकन देव
पर डोरा बंद कर वोट आमलाच देव।

अस्पताल गंदगी ल सड़ी से त् सड़न देव
लोक इंफेकसन ल मर् सेत त् मरन देव
डॉक्टर नर्स नदारत सेत त् रव्हन देव
पर डोरा बंद कर वोट आमलाच देव ।

खाद सबसिड़ी गई त् जान देव
करजा माफी नही त् नोको देव
किरसान फासी चंघसे त् चंघन देव
पर डोरा बंद कर वोट आमलाच देव।

लिख्या पढ्या बेकार सेत त् रव्हन देव
नोकरी भरती पर रोक से त् रव्हन देव
टुराटुरी बरबाद होय रव्ह्या सेत त् होन देव
पर डोरा बंद कर वोट आमलाच देव ।

***

११८. जीवन अगर से बनावनो

जीवन अगर से समृद्ध बनावयो
त् मेहनत दटकर करनो सिखो
काम-काम करो घाम बहाओ
जीवन मा फल-फूल खिलाओ।

आंधी को झुला मा झुलो
हवा की दिशा ला मोड़ो
पंख लगाय हवा मा उड़ो
आसमान ला हाथल् छुओं ।

बादर माका पराता ढग अड़ाओ
एक ढग ला दुसरोसिन टकराओ
धमाका करो बिजली कड़कड़ाओ
धरती पर पानी की धारा बरसाओ ।

रोटी तोला राम शाम नही देने वालो
रोटी तोला ज्योतिष नही बाटने वालो
जीवन क मैदान मा अखंड युद्ध करो
उठो आपली भूख प्यास खुद मिटाओ ।

***

११९. अजब-गजब

अजब-गजब देश को हाल । अधिकार को ख्याल
कर्तव्य पर नही ध्यान । देश को गजब हाल
चोर मचावसे हल्ला । सज्जन करसे विलाप......

अजब-गजब देश को हाल
पढ्या लिख्या वाह्याद
पैसा-पैसा की लुटमार
घर-घर मा याच बात
सिर पर नाच रहिसे भूतनाथ....

अजब-गजब देश को हाल
बेटी ला बाप घर् उजागरी नाहाय
बेटाला भेटसे पुरी जमीन-जायजाद
बेटी ला सिखाये मर्यादा को पाठ
बेटा ला हरदम मोकरो मैदान
बेटी क बेरा स्त्रीधन अभिशाप
बेटा क बेरा स्त्रीधन अभिमान
जहां सोच को से अकाल
कसो समाज करे कमाल .....

अजब-गजब देश को हाल
भ्रष्टाचार का गीत गावसेजन रोज
पर चढावा पर नही रव्ह परहेज
ज्ञान बाटनों मा आमि धुरंधर
पर खुद कभी करजन नही अमल
राजनीति बनी से लुटपाट को धंदा
समाज नीति बनी मंच माला माईक को धंदा
धर्म क आड़ मा अधर्म बजाव् से डंका
ना आमि देख रहया सेजन तमाशा ....
***.

१२०. बिचारा निष्ठावान

लिख्या पढ्या खाली टुरु पोटु पवार
चहापानी खर्रापान की जागसेत दुकान
खेतीबाडी उद्योग धंदा प्रेस्टीज क खिलाप
बनन को से उनला देश को नेता महान।

आई रे आई नेताजी की मोटर कार
सुटसेत मुंडा टाकन गरो मा हार
मिलतोच इसारा गाडी पर होसेत सवार
नेताजी पुढ् बिसर जासेत आपलो काम ।

आयेव चुनाव का फिरसेत गाव-गाव
भूल जासेत बायको औलाद माय बाप
पैसा बोहावसेत बिक घर को अनाज
जुलुश मा होत बेहोश करसेत नाच।

नेता जासेत विधान संसद राजदरबार
ये फिर् सेत संग उनको मटनमुर्गी खात
फिरता-फिरता होय जासेत सफेद बाल
बन जासेत सतरंजी उचलनेवाला हमाल।

कसेत जुड़ेव रहेव मि जनमभर ईमानल्
कदर होये पार्टी मा अज नही त उसिरल्
नेता को टुरा टुरी ला भेटसे वारसानी हक्क
मर जासेत निष्ठावान कफन ओढकर।

***

१२१. कसा बन्या हमाल!

कार्यकर्ता सतरंजी उचलनेवाला
बर्साबाद गाढ जप् ल् भया जागा
कोनला देनको से केरा को घड़ा
यव त रव्ह से नेता को दिलपरा.....

आता एक भाऊ कसे दुसरोला
देरव कसा बन्या आपुन हमाल
पुसो भाऊ एकमेक का डोरा
कहाड़ो रिवसाल् आपली रुमाल.....

रवानपान घर बिसर आपलो
दिनरात कऱ्या परचार ईनको
का उनन् कबि देईन रव्याल
सोचो जरा का करिन बिचार .....

कायला करन को आपस मा झगड़ा
कायला फोडन का आपस मा डोसका
बेईमानइन की गर्दी इनको बंगलापरा
होसेत वय उनका प्यारा मित्र सरवा.....

तोरी मोरी कबकी देरव् सेति बाट्
बिचारा बुरगा आपला मायबाप्
करबिन उनकी सेवा दिवस रात्
त मिले भाऊ अजेय आशीर्वाद्.....

***

१२२. आपलो अंदर पर झाके कौन?

झांक रह्या सेत सब इत् उत्
आपलो अंदर पर झाके कौन?

ढुंढ रह्या सेत सब दुनिया मा कमी
आपलो मन मा पर ढुंढे कौन?

दुनिया सुधारो सब चिल्लााए
खुद क धर ला पर सुधारे कौन?

उपदेश देत नही थकत जगला
खुद पर वय पर पाले कौन?

आमि सुधऱ्या त जग सुधरे
जाने सब पर समझे बुझे कौन?

चरित्र बनावनो से आपल हाथमा
पर चरित्र निर्माण पथ चले कौन?

विद्या बिन मानव निरो पशु समान
जाने सब पर दिल मा जोत जगाये कौन?

द्रौपदी को चीरहरण ला कृष्ण बचाये
पर अज गली-गली को चीरहरण राखे कौन?

(कबीर को दोहा पवारी मा)

***

१२३. माय मोरी अन्नपूर्णा

उठकन सकारी सरावसे रांधनखोली
पेटायकन चुल्हो बनावसे दूध चहापानी
बटकी भर-भर देसे चिवडा लाडू घेंगरी
मायको उत्साह देखताच बनसे भारी ।

भयव सयपाक का लगावसे पिढ़ा चौकी
भानी पिलेट ना गडु गिलास भर पानी
वाढसे दार भात स्याक घीव ना चटनी
माय सरिखी सुगरण अन्नपूर्णा नही कोनी।

भात चेन्नुर, दार तोर ना श्याक बगन की
भेदरा की चटनी ना नोनभरी हिवरी मिरची
आवरा को मुरब्बा ना आम्बा रायतो की फोड़ी
माय की बराबरी जगमा नही कर सक् कोनी।

सनत्योहार नही बिना सुवारी बड़ा खीर
पुरण रोटी घीव मा डुबाय डुबाय खिलाय
त कभी आटेल बुल्ल्या भज्या को पकवान
माय की करु का मि तारिफ शब्द नाहाय।

गणपति दूर्गा को जेवन रव्हसे गर्दी भारी
लगसे भीड़ एतरी का आंगण पड़से कमी
पंगत पर पंगत चलसे अरधो रात वरी
पर माय क उत्साह मा रतीभर नही कमी।

***

१२४. बोहू

बेटी जासे मायघर ल सुसरो घर्
पानी बाहेर मसरी सरिखो होसे हाल
बेटी साठी या कसी रीति रिवाज
घर की बेटी परायो धन बन जाय।

सासु सुसवो भासरो सामने बंद जुबान
रांधनखोली मा दिनभर घुट मरसे जान
सब खासेत पेटभर, बोहू बचेव मा करे समाधान
बोहू ला मुहुनच कसेत सीता सावित्री समान ।

टुरा-टुरी ला खवाय अफू दे सोवाय
चली पन्हा लगावन बिचारी खेत सिवार
जब् आवसे याद लेकरू, ममता तड़पाय
बिचारी को मन को घाव मन माच भर जाय।

बहु सब को करसे प्यार दुलार
सब की करसे सेवा मन लगाय
पर रव्हसे सदा उजागरीहिन नार
बहू को जीवन काटा को जाल।

नही उजागरी सांगन मनकी वेदना
मन को मन झरसे दुख को झरना
गरसोली की बजावन आन बान शान
चंदनवानी जीवनभर घासत जाय।

***

१२५. सारो-जीजा को रिस्ता

एक सारो त दुजो जीजा
अजब-गजब को रिस्ता
कभी करे जमके खिचाई
त कभी तोंडभर वाहवाई ।

कभी हासत हासत गोष्टी
त कभी वाद-विवाद तगड़ी
एक आवरा त दुजो बेहड़ा
प्रेम अंदर, बाहेर ३६ को आकड़ा।

एक से भाई त दुजो नवरा
जसा मोरा डावा बाया डोरा
दुही को काटा चकरी मा
फस जासे बिचारी गवरा ।

जीवन काटनो से नवरा यहां
पति परमेश्वर का लागु पाया
भाई जी दुय दिवस को पाहुना
बहिन को प्रेम ल आईसे यहां।

काहे कसेव 'घर में न हो साला'
और 'खेत में न हो नाला'
समजो सारो बिन संसार अधुरो
एक बाजु सारो त दुसरो बाजु संसार!

***

१२६. जवाब मांग रही से नारी

जब् संस्कृति कसे नारी शिक्षा की देवी
मंग काहे होति ओला शिक्षा की पाबंदी
धर्मशास्त्र मा होतो ओला यज्ञोपवीत वर्जीत
मुहुन रही बिचारी युग युग शिक्षा ल विमुख।

जब मान् सेत् नारी ला धन की देवी
मंग काहे नोहती वोला खर्च करन उजागरी
कसेव लुगड़ा आंगी आन् आपलो मायघर की
भले ही होय जाय तु अन्सी बरस की।

जब पत्नी ला कसेव तुमी सहधर्मचारिणी
मंग काहे होती जात पत्नी पतिमृत्युपर सती
जब कसेव तुमी पति-पत्नी ला शिव पार्वती
मंग काहे नही जाये पति पत्नीमृत्युपर सती?

जब नारी गौरी दुर्गा अंबे महाकाली
मंग काहे वोको सिरपर कलश भारी?
कसेव तुमी माय दुर्गा भक्त सताहा ला
मंग काहे नही धरो कलश डोयीपरा?

सवाल सेत् एक पर एक गहन भारी
जवाब मांग रही से बारम्बार नारी
सत् त्रेता द्वापर कली युग मा वाच कहानी
पुरुष प्रधान समाज मा बेबस बिचारी नारी।

***

१२७. परिवर्तन

मोरो परदादा होतो रव्हत बाडा मा
होतो लगावत तिलक बिंदी माथा परा
सिर पर होतो बांधत मोठो साफा फेटा
आंगपर होतो ओढत पंच्याको पल्ला ।

मोरो दादा होतो रव्हत लम्बी सरई मा
बगल मा रव्ह झलकत जनेऊ दोरा
सिर पर रव्ह चढी गांधी टोपी सदा
आंगपर होतो रव्हत बंडी फतई झगा ।

मोरो अजी होतो रव्हत चौबारा मा
माथा तिलक बगल जनेऊ दिसेना
सिर बोडखा होतो गमछ्या गरो ला
आंगपर होतो चमकत पैजामा कुरता ।

मोरो रव्हनो होसे आता लक्झरी फ्लॅट मा
माथा पर क्रिम स्नो पावडर चमकसे सदा
सिर रव्हसें मुंडा, टाई लहरासे गरो मा
आंगपर सजसेत शर्त पँट कोट ना जुता ।

मोरो परदादा ला होता पाठ संस्कृत श्लोक
मोरो दादा ला मुप्पाठ रामायण भागवत
मोरो अजी गाव् तुकड्यादास का भजन
आमरी पीढी से फिल्मी गाणा मा दंग ।

***

१२८. ... से अनमोल

डोराल् अंधरा देखे सारो जग
कानल् बैहरा सुने मन का बोल
पायल् लंगडा धाये दिवस भर
हाथल् लुला उठाये भारी गिरवर
संकल्प साधना धीर से अनमोल ।

गरीब समझ नोको करो मन हीन
अन्पढ समझ नोको बनो मति मुढ
स्वार्थ मा पुरो डूब, नोको सोडो समाज
सर्वसमर्थ मि मान नोको करो गर्व
कर्म, विद्या, धर्म, त्याग से अनमोल।

पंछी रव्हसेत बस्या झाड भर
उडसेत हवा मा झुंड बनायकर
मुंगी रव्हसेत एक बिल मा जीवनभर
फिरसेत लम्बी सेना रांग बनाय कर
पंछी मुंगी ल सिखो एकता से अनमोल।

मानुसच नही बंदरा बी रव्हसेत एकसाथ
उठसेत बससेत खासेत फिरसेत एकसाथ
साथ-साथ चलेबिन नही सर्वांगीण विकास
बिना सहकार मानव समाज को नही उद्धार
संघ संस्कार, संस्कृति, सभ्यता से अनमोल।

***

१२९. जीवन की सुााई

सोपो से कागज पर कलम चलावनो
पर कठिन होसे, जीवन मा उतारणो ।

कव्हन ला त, आमि ज्ञान दान धरम का धनी
पर व्यवहार मा करनी, कथनी होसे न्यारी
दुसरो ला सांगन आदर्श की बरससे झड़ी
पर वन रस्ता पर न चल् करे स्वार्थ सिद्धी ।

दुसरो की निंदा करन, नही करजन काही कमी
पर आपलो मा कमी, कभी आमला दिस् नही ।
नदी को पूर पार करन क् बेरा बनसेत सब साथी
पर काम निंघे पर कसेत, तु कोन आस अजनबी ।

सुख दुख जीवन का साथी, उगसे इंद्रधनुष कबी कबी
सप्तरंगी इंद्रधनुष रव्हसे नजर मा भरी घरीवरी ।
दिवस-रात मानुस मरसे सब मोरो-मोरो कव्हत
जीवन क अंतिम मोड़ संग होय जासे नदारत ।

***

१३०. साया

तुमि मोरो माथा
मि तुमरि मान
मान उठाये माथा
माथा देये सम्मान!

तुमि मोरा डोरा
मि तुमरि नाक
नाक उची नाचे डोरा
डोरा मा सजे जहान!

तुमि मोरा ओठ
मि तुमरि जिब
जिब नाचे मुखमा
ओठ गाये संगीत!

तुमि मोरो हरदय
मि रकत की धारा
रकत बोहे सरसर
हरदय चले निरंतर!

तुमि मोरा राया
मि तुमरि साया
साया धाये मंघ् राया
जसी राम मंघ सीता!

***

१३१. नाच रे गौरा नाच

नाच रे गौरा भटजी को ताल मा
नाच रे गौरा नाच, नाचरे गौरा नाच!

जनम पत्री पंचाग पोथी की कारी छाया
तांत्रिक मांत्रिक बोवा भटजी की माया
देव धरम जंतर-मंतर फूक ताईत आया
घर् सुख शांति को पर नही कहीं ठिकाना .....

सांगिस बाबान् से कालसर्प कुपित
जानो पडे करन पूंजा तोला नासिक
कालसर्प की कर पूंजा करनो पडे शांत
करनो पडे माय गोदावरी मा स्नान .....

बुद्धि तोरी सपा गई गवत चरन रे
लिख पढकर बी सुध नही आई रे
अंधश्रद्धा क चक्कर मा फस गई रे
अर्धी लुटी, लुटत लुटत पुढ् चली रे.....

नाच रे गौरा भटजी को ताल मा
नाच रे गौरा नाच, नाच रे गौरा नाच ....

***

१३२. बिचारी का करे गवरा।

चुल्हो पेटायलक काही पेटेना
काड़ी फाटा ओला काही जरेना
धुंगा भर गयो रांधनखोली मा
पोंगरी ल फूक हवा दुखे छाती मा .....

कन्हारो को कन्हारो रै गयो भात
कुगी की कच्चीच रै गई दार
कोन जाने कसी होये या स्याक
अज बी पड़े आयकनो सबकी दाट .....

सयपाक ला भई खुप अज बेरा
चिल्लाय रही से बाहेर मोरो नवरा
रांधन खोली मा सेत हाल बुरा
बिचारी थकीहारी का करे गवरा .....

लेयात आबवरी मोरी खुब परीक्षा
बिको तुरत खंबुरा की मोरी गय्या
चली जाहे नही त एक दिस जान
दया करो मोरो पर भगवान ....

***

१३३. मोरी कहानी

पग-पग उठाय चढेव पंच्यातर सीढ़ी
पल-पल कर याद रचेव आपली कहानी ।

माय संस्कार गुरु, बाप कर्मगुरु, गुरु ज्ञानदाता
वयच आत मोरो सफल जीवन का खरा रचयिता।

पंख नही त ईच्छा बल को साथ मिल्यो
जमीन ल उड़कन आकाश मा उड़त रह्यो।

नोकरी-चाकरी मान-सम्मान उन्नत होत गयो
माय-बाप गुरुजन समाज ऋण चुकावत रह्यो।

झाड़ जसो जरकन तपन मा देसे सावोली
चंदनवानी घास तन, तहान बुझायो सबकी ।

भगवान को देयेव से जवर मोरो सब काही
धूंदवानी जीवन भर धायो, समाज साठी ।

जीवन भर पान-पान मि रंगावत गयेव
समाज की रंगीन तसबीर बनावत गयेव ।

तसबीर क तुकड़ा-तुकड़ा मा से मोरी कहानी
जोड़-जोड़ उनला गुनगुनाऊ आपली जुबानी।

***

१३४. आपला सपना सिवत रहेव

गाव को बाड़ा सोड़
चाळ मा रव्हन गयो
पलंग बिछुना सोड़
जमींपर सोवत गयो ।१।

ऐस आराम भूलकर
इस्कुलमा सिकन गयो
मायबाप को लाड़ सोड़
गुरू की छड़ी खात गयो ।२।

सबन् लेईन मुंदी चैन
मिन् किताब पेन लेयो
सब देखत सिलिमा ड्रामा
रातभर मि बाचत रहेव ।३।

मोरा भाइबंद पटील राव
जमीन सोनो लेत जात
परीक्षा पर परीक्षा देत
डिग्री पर डिग्री मि लेत गयो ।४।

वय धन-धंसी मा खुश
विद्याधन मि लेत गयो
एक सुई-धागा लेयकन
आपला सपना सिवत रहेव ।५।

***

१३५. मोरो मिच स्वयम्भू

नही पायजे कोनी की कुबड़ी
नही पायजे कोनी को खांदा
सर वोऱ्या कर फिरू मि सदा
मोरो मिच, हो-हो मिच स्वयम्भू।

नही मोला मंच माईक की पर्वा
नही मोला पायजे हार ना तुर्रा
नही करू मि कोनी की हाजी हाजी
मोरो मिच, हो-हो मिच स्वयम्भू।

नही मि कोनी को करप मा गयो
नही मि कोनी को लेबल लगायो
नही मि धरेव कोनी की दाढ़ी वाढ़ी
मोरो मिच, हो-हो मिच स्वयम्भू।

नही मौताज मि प्रशस्तिपत्र को
नही लालाईत पद पुरस्कार को
मि त शब्दविश्व मा खुशी मनाऊ
मोरो मिच, हो-हो मिच स्वयम्भू।

करो तुमि केतरो बी भू भू भू भू
नही कोनी ला मि भिऊ घबराऊ
सरस्वतीमाय पुढ़ मि सिर नमाऊ
मोरो मिच, हो-हो मिच स्वयम्भू।

***

१३६. दीप दास - सूर्य जगन्नाथ

सूर्य करसे प्रकाशित सारो जग
मिटावसे अंधारो, दिवस भर निरंतर
चलावसे अथक दिवस-रात कालचक्र
वोला नही पायजे तुमरो प्रमाण-पत्र ।

तुमि सेव टिमटिमाता दीवा घड़ी दुय घड़ी का
तुमि सेव भूखा-प्यासा, बाती-तेल ना घिव का
सेव माती का बन्या, जमाय ठिया सेव बस्या
पर अकड़ रह्या सेव, सुर्य नारायण पुढ़ कसा!

सूर्य कभी थक् नही, दिन-पर-दिन उजारो करता
दीप पर रात करे उजारो, दिन भर रहे जप मा
सूरज से जीव-जंतु वनस्पति प्राणि को जीवन-दाता
दीप त से कीड़ा-मकुड़ा को अघोरी भक्षण-कर्ता!

दीपक तुमि देवदेवी, मंदिर-मठ का दास
सूरज स्वयम् से भूमंडल को जगन्नाथ
सूरज ला कर नमन, स्नेह ला धरोमन
सोड़ो हेवा, दीप तुमि मिटावो अंधारो तन!

***

१३७. गोरखधंदा

मानुस ला मानुस यहां लुट रही से
झुठ की दुकान पर कसी गर्दी जमी से ।

गोड़-गोड बोल आपलो सामान बिक् से
सादो सुदों गिराहिक ला देखो कसो लुट् से ।

एव देखो अफसर सरकार ला कसो बुड़ावसे
खोटा-नाटा बिल बनाय पैसा कसा लुटसे।

डाक्टर आय का सुरसा पैसाच निगल् जासे
मरीज मर बी गयेव तरी आयसीयु मा टाक्से।

वकील की चक्री मा फसकन उमर बीत जासे
मुकुदमा एक एकर को, चार एकर बीक जासे ।

मास्तर को धंदा बी आता गोरख धंदा बनी से
इस्कुल खाली इनकी दुकान गर्दी लक भर् से।

नेताहिन की त् पुछोच नोको, सारो धन आपलो से
होता जे चहा पानी ला मौताज बंगला गाड़ी चमक्से।

तोरी बी चुप मोरी बी चुप यहां मिठ्ठुहिन को मेला से
सच्चो कडु बोलने वालो दुष्मण बन तीर झेल्त रव्हसे।

***

१३८. कवि अना कविता

जब् कवि लिखसे कविता
लगसे मन ल् फुटी धारा
बोह से पेनल् कागज वऱ्या
चढ जासे किताब पान परा ।

जब् कवि गावसे कविता
लगसे फुटी बहार बागमा
धावसे जनगण को मनमा
करसे आनंद विभोर सबला ।

जब् कवि बिकसे कविता
बस जासे वा दुकान परा
बजसे मयफील मयखाना
बिकाऊ होय जासे साधना ।

जब् कवि गावसे आरती
डोल उठ् से भगवंता मूर्ति
जन हृदय जाग उठसे भक्ति
कविता बनसे मोक्ष की सीढी ।

संवेदना करुणा भावना कविता
संदेश संवाद संचार वाहिनी कविता
सरस्वति वाग्देवी की वाणी कविता
कविता मनमंदिर की आराध्य देवता ।

***

१३९. स्वतंत्र करो भोजशाला

पवार सांस्कृतिक विरासत अज पड़ गई से खतरा मा
पवार इतिहास धरोहर अज फस गई से संकट मा ।।

सुनो सुनो पवार भाऊ-बहिनी या कसी लाचारी से
सरस्वती को मंदिर मा अज नमाज कसो जारी से ।।

धाराधिश भोज न भोजशाला मा वाग्देवी मूर्ति लगाईस
महमूद खिलजी न मौलाना कमालुद्दीन मजार बनाईस ।।

शारदा सदन होतो देत जग ला विद्या, संस्कृति ज्ञान
कमालुद्दिन मस्जिद बनाय मुसलमान पढसेत नमाज ।।

जहां पहाड़ी पर से बसी गडकालिका कुलदेवी माता
मंग असा कसा पवार भाऊ-बहिनी सोया सेत जप मा ।।

धारा नगरी राजधानी पवार वंश की रही कई शताब्दी
होती गुंजत दुर्ग, महाल, मंदिर गौरव गाथा की ध्वनी ।।

मंग कसी होय रही से अज भोजशाला की दुर्गती
असी कसी पवार वीरो सांगो वहां नमाज जासे पढ़ी ।।

जागो जागो पवार भाई-बहिनी युद्ध करो बन क्षत्री
उठाओ अस्त्र-शस्त्र हाथ मा स्वतंत्र करो वाग्देवी ।।

***

१४०. केतरो बी पुंजेव देव तरी

केतरो बी पुंजेव देव तरी बी
देव मोला काही पायेव नही
कहां रव्हसे कोनला मालुम
आब् वरी काही धायेव नही...

मंदिर सामने गई लुटी इज्जत
देव देखतच रय गयेव तमाशा
रक्षण करन काही आयेव नही
आब् वरी काही धायेव नही ...

हाथ मा रयकन धारदार शस्त्र
कबी चोर को मंध धायेव नही
कहां रव्हसे कोनला मालुम
आब् वरी काही धायेव नही...

देव देसे आमला सब काही
उच पुरावसे सबकी चाहत
किरसान देखसे बादर कन
मंग बरसाद काहे होय नही ...

फिरंगीहिन न् फोडिन मंदिर
सोरटी सोमनाथ धायेव नही
कहां रव्हसे कोनला मालुम
आब् वरी काही धायेव नही...

केतरो बी पुंजेव देव तरी
देव मोला काही पायेव नही
कहां रव्हसे कोनला मालुम
आब्वरी काही धायेव नही ...

***

१४१. मकर संक्रांति

सूर्य चंद्र पृथ्वी फिरे अखंड
सूर्य बढे दक्षिण ल उत्तरायण
चले पुढ् मकर रेखा पार कर
आपलो बेटा शनिला मिलन.....

शिवजटा ल धाय पड़ी गंगा
धाय पड़ी भगीरथ क मंघा
पहुच गई कपिल आश्रम परा
गंगोत्री बोहन लगी धर्ती परा.....

राशी चक्र पर संक्रात को घात
करसे काही शुभ त अशुभ आघात
करनो पडसे दान धर्म कपड़ा अन्न
तिल-जल को करनो पडसे तर्पण .....

अखंड सुहागिण को येव दिन उत्तम
उपास करे पति की हो लम्बी उमर
पति-पत्नी को बनावन सुखी जीवन
हल्दी-कुम्कुम बान बाट्सेत घरो-घर् .....

मकर संक्रांति को उन्मत्त सण
आनसे आल्हाद ऋतु बसंत संग
जित् देखो उत् उत्साह उमंग
आकाश मा उडाओ उची पतंग....

***

१४२. वोको मा मोला देव दिस्से!

जग मा जो दिवस-रात फिरसे
आपलो ला चंदनवानी घाससे
त वोको मा मोला देव दिस्से!

गोटारी मा जब् नांगर पुढ् चलसे
तब किरसान क आंग घाम फुटसे
त वोको मा मोला देव दिस्से!

सोता गोटा बन जो जगसे
घाव पर घाव सोसत रव्हसे
त वोको मा मोला देव दिस्से!

दुसरो साथी दिवस-रात जो झुरसे
दुसरो हिन को दुख मा आसु पाड़से
त वोको मा मोला गेव दिस्से!

***

१४३. अक्षय

कंठल् गानामा
ना गानाल् मनमा
लेजासेत जे सूर
वय बन्या रहो अक्षय ......

अनुभवल् शब्दमा
ना शब्दल् वाक्यमा
चमके डोरा मा ज्या बुद्धि
वा बनी रहो अक्षय ......

एकांतल् शांततामा
ना शांतताल् आनंदमा
भेटसे जो मनःसुख
उ बनेव रहो अक्षय ......

स्पर्शल् आधारमा
ना आधारल् आसूमा
फूट पड़से जो धैर्य
उ बनेव रहो अक्षय ......

हृदयल् गालपर
ना गालपरल् मुस्कानमा
बदले जो प्रेम बनकर
उ बनेव रहो अक्षय ......

***

१४४. रचना

बाराखड़ी - वर्णमाला गुथे शब्द सारा
शब्द-शब्द जुड़े त बने गीत माला
मन की प्रखर आगभट्टी मा तपकन
सुवर्णमयी मनोहारी बने रचना ....

सुंदर परी सिन बी सुंदर
अति सुंदर से संकल्पना
कवि हरदय क प्रेमभाव की
बन जासे मनमोहिनी रचना....

सुंदर सलिल समीर सदृष्य
से निर्मल येकी समलोचना
निर्मल नीर सी रव्हसे बोहत
सरिता सी पावन रचना ....

रूषिमुनि की बन योगिनी
वाद्य विणा की बन रागिनी
उर्वशी क लहराती बेनीवानी
बलखाती मचलती रव्हसे रचना.....

होसेत जे कर्तव्यविमुख धर्म ल्
रव्हसेत पैसा ओहदा मा मशगुल
माय-बाप की रव्ह नही सुदबुद
कर्म पथ पर मंग ले जासे रचना.....

***

१४५. पवारी बोली आमरी प्यारी से

पवारी वर्णमाला देवनागरी से
व्याकरण मा सिधी साधी से
पवारी बोली भाषा न्यारी से
आमरी मातृ भाषा प्यारी से ।।१।।

इ-ई बोलचाल मा सरिखोच से
सिता-सीता, गिता-गीता एकच से
उ-ऊ मा नही काही फरक से
उमा-ऊमा, उठ-ऊठ समान से ।।२।।

गौरी-गवरी, चौरी-चवरी चल् से
ऐना-अयना, ऐनक-अयनक चल् से
मात्रा इलांटी उकार को नही पन्हेज से
पवारी मा ऱ्हस्व-दीर्घ को भेद चलसे ।।३।।

पवारी मा ऋ, ॠ, लृ नही खबर से
ङ ञ ण की नही कंठ मा ओरख से
श,ष साठी मुखलरव 'स' च निंघ से
गरो, जिभ, ओठ को ताल मिल् से ।।४।।

ऋषि ला कसेजन आमि रुसी
पाणी ला कसेजन आमि पानी
वेळ ला कसेजन आमि बेरा
पवारी मा सबकाही चलसे दादा ।।५।।

***

१४६. पवारी बोलीभाषा न्यारी से

क्षत्रिय को छत्रिय त्रिलोक को तिरलोक
ज्ञान को अधनान, श्रीराम को सिरराम
परीक्षा को परीकसा, भिक्षा को भिकसा
संयुक्त व्यंजन ला पोवारी विभक्त करसे ।।१।।

प्रेम ला पिरेम ना प्रभात ला परभात
पत्रिका ला पतरिका, लक्वा ला लकवा
मुख्त्यार ला मुखत्यार, पुत्न्या ला पुतन्या
संधी, संयोग तोड़ सोपो बोलन की पद्धत से ।।२।।

पवार लोक पाळना ला कसेत पारना
पोळा-दिवाळी ला कसेत पोरा-दिवारी
पवारी मा हिंदीवानी 'ळ' गायब से
याच त पवारी बोली की पैचान से ।।३।।

पवारी पुल्लींग स्त्रीलिंगच जानसे
नपुसक लिंग बिल्कुल नही मानसे
पुल्लींग मा संज्ञा आकारान्त आवसे
स्त्रीलिंग मा वा इकारांत बन जासे ।।४।।

मराठी की वेसन पवारी मा बेसन
मराठी की वारती पवारी मा बारती
मराठी की विहिर पवारी मा बिहिर
मराठी को 'व' पवारी मा 'ब' बन्से ।।५।

***

१४७. मराठी 'ळ' होय जासे पवारी मा 'र'

तळा ला कसेत तरा भाऊ
तीळ-गुळ ला कसेत तीर-गुर
बाळकडू को होसे बारकरू
सकाळ को बन जासे सकार!

मन जुळसे को होसे मन जुरसे
नदी सागर ला मिळसे, नही मिलसे
खिळा ठोकसे नही खिरा ठोकसे
हिवाळा उन्हाळा नही हिवारो उन्होरो से!

खळखळ नही खरखर पानी बोहसे
गळो नही गरो, गळसोळी नही गरसोली
दिवाळी होळी पोळा भयव मराठी
दिवारी होरी पोरा आय पवारी!

ओवाळणी ला कसेत ओवारनी
सावळो शाम ला जप माळ
नही सावरो स्याम ला जप मार
माती का ढेकळा नही ढेकरा होसे!

पिवळे चाफा नही, पिवरो चाफा
केळा नही रे बाबा केरा होसे
जांभूळ, आवळा नही जांबूर आवरा
काळा कावळा नही कारो कावरा!

बाळंतीन नही बारतीन आय
बाळतपण नही बारतपन से सही
नाळ झळेव नही नार झरेव बाबा
मराठी 'ळ' पवारी मा 'र' होय जासे !

***

१४८. पवारी की वापसी

मोरो मोड़का पवारी घर
पड़न को से उ रस्तापर
दरवाजा कर् सेत करकर
खिड़की कर् सेत चर-चर।

कवल टुटी, फुटी जमीन पर
शिवार फाटा बेरू गया सड़
छपरी खोली ला आवसे ओल
घरभर टपक् से पानी की सर।

कसो बचे यव पवारी घर
मनमा भटकत रव्हसे घोर
कहानल् आनु सिवार फाटा
कसो सुधारू यव घर आता।

कसो सजाऊ घर सप्तरंगी
कसो महकाऊ घर सुगंधी
कसो गूंजे संगीत मनोहर
कसो लौटे सुवर्ण वैभव।

आजी सुनावत होती कहानी
माय गावत होती रात मा ओवी
अजी बजावत् होता बांसुरी
पवारी नाचत होती बन नर्तकी ।

गई पवारी, गई कथा कहानी
गई पवारी, गई ओवी आरती
गई पवारी, घर आई विरानी
कसी करू पवारी की वापसी

***

१४९. नवो साल

जुनो साल सोड़ रही से साथ
नवो साल की होय रही से प्रभात
जुनो साल न देईस शुभ लाभ
नवो साल ल से सुमंगल की आस।

नवो साल आने गुलाबी थंड
साथ मा आने इंद्रधनुषी रंग
फुलवारी फैलाये मधुर सुगंध
उषःकाल होये आल्हाद मोहक।

नवो साल देये रव्हन असो घर
जेकी रहेती खिडकी उघडी सदा
बोहती रहे हवा ताजी अना शितल
घर आये सुप्रभात की किरण ।

नवोसाल मिटाये मन को मइल
नवो साल मिटाये तन की सिकन
दुरितांचे तिमिर जावो फुके मंत्र
प्रेम की बोहे बरखा घरो-घर ।

***

१५०. पवार इतिहास रचियेता

परशुराम न करिस क्षत्रिय संहार
विश्वामित्र वशिष्ठकी नंदिनी चुराय
बौद्धधर्म ल भई निक्षत्रिय धरती माय
तब अग्निकुंड ल भयो प्रगट पवार ।

जन्मभूमि अर्बुदगिरी गिरीराज
अतितभूमि मालव उज्जैनी धार
कर्मभूमि सतपुड़ा घाटी पठार
आमी अग्निवंशी क्षत्रिय पवार।

दुल्ला नारायण सांकलदेव कुलदेवता
महामाया गडकालिका कुलदेवी माता
गोत्र कश्यप वशिष्ठ ३६+७२ कुल माला
आमरी पवारी आय मायबोली मातृभाषा ।

विक्रम अखंड भारत संवत निर्माता
भोज धर्म कर्म ज्ञान दान रणयोद्धा
जगदेव चढाए दे शिस चामुंडा माता
गर्वलक कहो पवार इतिहास रचियेता।

बख्तबुलंद संग गोंडवाना ल औरंगजेब भगाया
रघुजी भोसला संग कटक वरी घोडा दौडाया
बैनगंगा वर्धा अंचल चाऊर को भंडार बनाया
जहां जहां गया वहां 'पवार' नाम चमकाया।

***

प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
"विदर्भ भूषण" पुरस्कार प्रदान

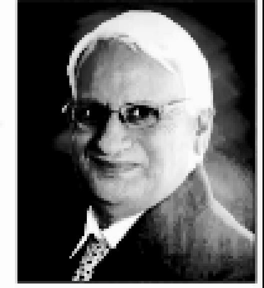


प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, पूर्व प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र विभागप्रमुख रा.तु.म.नागपूर विद्यापीठ नागपूर आणि पवारी बोलीभाषेचे सुप्रसिद्ध साहित्यिक व संवर्धक यांना यशवंत भारती लोककल्याण संस्था द्वारे "विदर्भ भूषण" पुरस्कार–2019 दिनांक 11 जानेवारी 2020 ला हिंदी साहित्य सम्मेलनाचे हिंदी मोर भवन, नागपूर मध्ये आयोजित समारोहात प्रदान करण्यात आले.

प्रा.डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरेंनी शैक्षणिक, सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्रात केलेल्या अलौकिक कार्याच्या अनुषंगाने त्यांना विदर्भ भूषण पुरस्कार बहाल करुन सम्मान करण्यात आला.

दै. लोकमत
१८-०१-२०२०

मोरो परिचय



नाम : डॉ.ज्ञानेश्वर बापुजी टेंभरे
जन्मस्थल : ग्राम मेंढा, त. तिरोड़ा, जि.गोंदिया (म.रा.)
जन्मतिथि : १६ अप्रैल, १९४४
शिक्षा : एम.एस्सी., पीएच.डी.

सेवा क्षेत्र

सेवाकाल : १९७३ से २००४
पद : प्राध्यापक, विभाग प्रमुख - प्राणीशास्त्र विभाग,
अधिष्ठाता , विज्ञान संकाय, नागपुर विद्यापीठ नागपुर
सदस्य - विद्यापीठ व्यवस्थापन, विद्वत तथा विधि सभा
विदेश शिक्षा संशोधन : जर्मनी -१९७६-७८, स्वीजरलैंड - १९८०,
अमेरिका - १९९०, इंडोनेशिया - २००२.
प्रकाशन : ८० शोधपत्र
०५ जीवविज्ञान पर ग्रंथ
1 Text Book of Insect Morphology Physiology and Endocrinology - 1984
2. Modern Entomology - 1997
3. Techniques in life Sciences - 2008
4. Invertebrate Endocrinology - 2012
5. Molecular Endocrinology - 2017
पीएच.डी.मार्गदर्शन - २१ शोध छात्र

सामाजिक क्षेत्र

प्रबंधक / अध्यक्ष : पवार समाज संगठन, नागपुर (१९८२-१९९६)
अध्यक्ष : राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा (१९९९-२००६)
अध्यक्ष : राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
संस्थापक-संपादक : पवार संदेश, वार्षिक पत्रिका, (१९८४ से वर्तमान)
: पवार समाजदर्शन, न्यूजलेटर (२०००-२००६)
रचयिता : चक्रवर्ती राजा भोज (२००५-२०१८) ६ संस्करण
पवारी ज्ञानदीप (२०११)
गूंज उठे पवारी (२०१७)
दुर्वांकुर - पवारी कहानी संग्रह (२०१९)
सामाजिक लेख : ६० (विभीन्न पत्रिकाओं में)

संपर्क : ४४, विजयनगर, दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपुर-२२
E-mail: : dbtembhare@gmail.com
मोबाईल : ९०९६०८८४३६